बुंदेली लोकोक्तियों एवं मुहावरों में श्री गौरीशंकर उपाध्याय जी का योगदान

पी0 के0 विश्वविद्यालय, शिवपुरी (म.प्र.)

पी–एच.डी.(हिन्दी साहित्य)

विषय मे उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

शोध निर्देशिका

डॉ0 ब्रजलता शर्मा

हिंदी विभाग कला संकाय

पी. के. विश्वविद्यालय शिवपुरी (म0प्र0)

शोधार्थी

कल्पना सिंह

नामांकन सं.161595204530



सत्र– 2025

पी0 के0 विश्वविद्यालय, शिवपुरी (म.प्र.)

www.pkuniversity.edu.in

बुंदेली लोकोक्तियों एवं मुहावरों में श्री गौरीशंकर उपाध्याय जी का योगदान

पी0 के0 विश्वविद्यालय, शिवपुरी (म.प्र.)

पी-एच.डी.(हिन्दी साहित्य)

विषय मे उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

शोध निर्देशिका

डॉ0 ब्रजलता शर्मा

हिंदी विभाग कला संकाय

पी. के. विश्वविद्यालय शिवपुरी (म०प्र०)

शोधार्थी

कल्पना सिंह

नामांकन सं.161595204530

सत्र- 2025

पी0 के0 विश्वविद्यालय, शिवपुरी (म.प्र.)

www.pkuniversity.edu.in

पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी,
मध्यप्रदेश–473665
Established under UGC Act 2F 1956

शोध निर्देशक का प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि पी .के.विश्वविद्यालय, शिवपुरी (म.प्र.) के हिंदी संकाय के अंतर्गत डॉक्टर ऑफ़ फिलॉसफी उपाधि हेतु **"बुंदेली लोकोक्तियों एवं मुहावरों में श्री गौरीशंकर उपाध्याय जी का योगदान"** शीर्षक शोध अध्ययन **कल्पना सिंह** द्वारा मेरे निर्देशन में 240 दिन से अधिक उपस्थित होकर शोध कार्य किया गया इनका शोध कार्य मौलिक है। यह भी प्रमाणित किया जाता है कि –

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध शोधकर्ता का अपना स्वयं का शोध कार्य है।

1. प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग विनियम 2009 के अनुरूप पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी म.प्र. के पी०एच०डी उपाधि मध्यप्रदेश के सभी अपेक्षाओं को पूर्ण करता है।

शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत कार्य विश्वविद्यालय में पंजीयन के बाद किया गया है।

शोध निर्देशक

दिनांक.....
स्थान-

(डॉ. ब्रजलता शर्मा)
कला संकाय हिंदी विभाग

पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी,
मध्यप्रदेश–473665
Established under UGC Act 2F 1956

शोधार्थी का घोषणा-पत्र

में एतद् द्वारा घोषणा करती हूँ कि, **"बुंदेली लोकोक्तियों एवं मुहावरों में श्री गौरीशंकर उपाध्याय जी का योगदान"** शीर्षक प्रस्तुत शोध-प्रबन्धमें सम्मिलित समग्र कार्य मेरा अपना और मौलिक है। यह शोध-प्रबन्ध (अंशत:या पूर्णत:) किसी भी विश्वविद्यालय में किसी उपाधि या पत्रोपाधिहेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

यह शोध कार्य 240 दिन से अधिक उपस्थित होकर निर्देशक के सानिध्य में पूर्ण किया गया।

शोधकर्ता

दिनांक.....

स्थान-

(कल्पना सिंह)

नामांकन सं. 161595204530

पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी,
मध्यप्रदेश–473665
Established under UGC Act 2F 1956

संस्थान के प्रमुख का अग्रेषित पत्र

थीसिस शीर्षक **"बुंदेली लोकोक्तियों एवं मुहावरों में श्री गौरीशंकर उपाध्याय जी का योगदान"** **कल्पना सिंह द्वारा** छह प्रतियों में विश्वविद्यालय को जमा किया जा रहा है। शोधार्थी ने आवश्यक शुल्क काभुगतान कर दिया है और उसके विरुद्ध कोई बकाया नहीं है।

नाम.....सील.....

दिनांक.....
स्थान.....

(संस्था के प्रमुख के हस्ताक्षर जहां उम्मीदवार
पीएचडी डिग्री के लिए पंजी)

निर्देशक के हस्ताक्षर
दिनांक

दिनांक..... **पता.....**
स्थान..... .....

.....

आभार

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण शोध को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए मेरे पूरे शोधकार्य के दौरान प्रचुर आशीर्वाद की वर्षा के लिए ईश्वर की स्मृति और धन्यवाद।

मैं पी.के. विश्विद्यालय के माननीय कुलाधिपति श्री जगदीश शर्मा जी एवं माननीय कुलपति प्रोफेसर योगेश चन्द्र दुबे की आभारी हूँ उनके सहयोग के लिए और मुझे अवसर देने के लिए धन्यवाद उनके प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से मैंने शोध कार्य किया।

मैं निदेशक प्रशासन डॉ. जितेन्द्र मिश्रा जी एवं पी.के. विश्विद्यालय के कुलसचिव डॉ. दीपेश नामदेव को भी अपना हार्दिक धन्यवाद देना चाहती हूँ और शोध डीन एकेडमिक् डॉ. ऐमन फातमा व डीन ऑफ़ फैकल्टी डॉ. जीतेन्द्र मलिक को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ। मेरा विशेष धन्यवाद डॉ. भास्कर नल्ला, डीन रिसर्च पी.एच.डी. सेल और उनके कार्यकाल सहायक श्री आशीष गुप्ता को जाता है।

मैं श्री निशा यादव, पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री कमलेश यादव एवं श्री आलोक खरे, प्रभारी आई. टी.सेल, श्री मोहित निगम लेखाकार विभाग, डॉ. प्रवीण कुमार विभागाध्यक्ष भौतिक विज्ञान विभाग, साथ ही डीन कला विभाग प्रोफेसर डॉ. महालक्ष्मी जौहरी विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र, पी.के. विश्वविद्यालय का भी हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

मैं अपने शोध मार्गदर्शक डॉ ब्रजलता शर्मा के इस दौरान अमूल्य मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए अपनी गहरी और ईमानदारी से कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूँ, अनुसंधान उनके अपार ज्ञान, बौद्धिक सोच, दूरदर्शिता, गतिशीलता और प्रेरणा ने मुझे गहराई से प्रेरित किया है मैं इनकी सदैव आभारी रहूँगी।

मैं पंडित श्री गौरीशंकर उपाध्याय (बुन्देली मुहावरों के लेखक), डॉ. वी.वी.त्रिपाठी प्राचार्य एवं डॉ. शंकर शरण त्रिपाठी जी की हृदय से आभारी हूँ जिनका सानिध्य प्राप्त कर इस शोध कार्य को पूर्ण किया।

मैं अपने पिता जी स्वर्गीय श्री राम शंकर सिंह एवं माता जी श्रीमती दुर्गा राजकुमार की विशेष लालसा को पूर्ण करने में सफल र ही और साथ ही मेरे सहयोगी श्री राजीव लोचन मिश्र एवं श्री अलोक गुप्ता ने इस शोध कार्य को सफल कराने के लिए विशेष सहयोग दिया। मैं इनका हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

कल्पना सिंह

पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी,
मध्यप्रदेश–473665
Established under UGC Act 2F 1956

कॉपीराइट हस्तांतरण प्रमाणपत्र

थीसिस का शीर्षक : **"बुन्देली लोकोक्तियों एवं मुहावरों में श्री गौरीशंकर उपाध्याय जी का योगदान"**

शोधकर्ता : **कल्पना सिंह**

कॉपीराइट हस्तांतरण

अधोहस्ताक्षरी एतद्वारा पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी को पीएच.डी. उपाधि प्रदान करने के लिए प्रस्तुत उपरोक्त शोध प्रबंध के सभी कॉपीराइट सौंपते हैं।

शोधकर्ता

दिनांक.....
स्थान-

(कल्पना सिंह)
नामांकन सं. 161595204530

P.K.UNIVERSITY
SHIVPURI (M.P.)

UniversityEstablished Under section 2F of UGC ACT 1956 Vide MP Government Act No 17 of 2015

CENTRAL LIBRARY

Ref. No. PKU/C.LIB /2025/PLAG. CERT./210 **Date: 21.08.2025**

CERTIFICATE OF PLAGIARISM REPORT

1. Name of the Research Scholar	:	Kalpana Singh
2. Course of Study	:	Doctor of Philosophy (Ph.D.)
3. Title of the Thesis	:	बुन्देली लोकोक्तियों एवं मुहावरों में श्री गौरी शंकर उपाध्याय जी का योगदान
4. Name of the Supervisor	:	Dr. Brijlata Sharma
5. Department	:	Art
6. Subject	:	Hindi Literature
7. Acceptable Maximum Limit	:	10% (As per UGC Norms)
8. Percentage of Similarity of Contents Identified	:	9%
9. Software Used	:	Drillbit
10. Date of Verification	:	03.06.2025

(Librarian, Central Library)
P.K.University, Shivpuri (M.P.)

LIBRARIAN
P.K. University
Shivpuri (M.P.)

ADD: VIL: THANRA, TEHSIL: KARERA, NH-27, DIST: SHIVPURI (M.P.) -473665
MOB: 7241115902, Email: library.pku@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र०स०	अध्याय	पृष्ठ संख्या
• शोध शीर्षक • शोध निर्देशक प्रमाणपत्र • शोधार्थी का घोषणापत्र • संस्थान के प्रमुख का अग्रेषित पत्र • आभार • प्लेगरिज्म प्रमाणपत्र • कॉपीराइट हस्तांतरण प्रमाणपत्र • सारांश		
प्रथम अध्याय	**प्रस्तावना**	**1-32**
द्वितीय अध्याय	**साहित्य समीक्षा**	**33-48**
तृतीय अध्याय	**अध्ययन पद्धति एवं क्षेत्र**	**48-57**
चतुर्थ अध्याय	**बुन्देली भाषा का साहित्य**	**58-89**
पंचम अध्याय	**गौरीशंकर उपाध्याय जी का योगदान**	**90-137**
षष्ठम अध्याय	**बुन्देली मुहावरें एवं लोकोक्ति को कोष**	**138-178**
सप्तम अध्याय	**निष्कर्ष एवं शोध उपयोगिता**	**179-193**
	संदर्भ ग्रंथ सूची	**194-196**
	परिशिष्ट	**197-202**

सारांश

हिन्दी भाषा और साहित्य में लोकोक्तियाँ और मुहावरे सदियों से सामाजिक , सांस्कृतिक और नैतिक अनुभवों का प्रतिनिधित्व करते आए हैं। ये केवल अलंकार या शब्दशैली के साधन नहीं हैं, बल्कि समाज के मूल्य , व्यवहार, चेतना और अनुभव का दर्पण हैं। डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय द्वारा संकलित *"लोकोक्तियाँ एवं मुहावरों का कोष "* इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। यह कोष प्राचीन , मध्यकालीन और आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त लोकोक्तियों और मुहावरों का व्यवस्थित संकलन प्रस्तुत करता है।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इस कोष का **आलोचनात्मक, भाषावैज्ञानिक और सांस्कृतिक विश्लेषण** करना है। इसमें शोधकर्ता ने कोष में संकलित अभिव्यक्तियों की संरचना, उनके अर्थ, प्रयोग, क्षेत्रीय भिन्नता और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ का विस्तृत अध्ययन किया है।

प्राचीन साहित्य में नीति ग्रंथ , वेद, उपनिषद और संस्कृत काव्यशास्त्र में प्रयुक्त लोकोक्तियों का विश्लेषण किया गया है। इन अभिव्यक्तियों में न केवल व्यवहारिक अनुभवों की झलक मिलती है , बल्कि सामाजिक और धार्मिक मूल्य भी प्रतिबिंबित होते हैं। नीति ग्रंथों जैसे *पंचतंत्र, हितोपदेश* और *चाणक्यनीति* में जीवन के व्यवहारिक अनुभवों और नैतिक शिक्षा को सूत्रबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मध्यकालीन साहित्य में भक्ति और रीतिकालीन साहित्य को केंद्र में रखते हुए , शोधकर्ता ने कबीर, तुलसीदास, सूरदास और मीराबाई की साखियों और पदों में प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्तियों का विश्लेषण किया है। इन अभिव्यक्तियों में लोकजीवन की वास्तविक झलक , धार्मिक चेतना और सामाजिक मूल्यों का स्पष्ट चित्रण मिलता है। रीतिकालीन कवियों जैसे बिहारी और केशवदास के काव्य में प्रयुक्त मुहावरे भाव-संप्रेषण को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतेंदु हरिश्चन्द्र , प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा द्वारा प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्तियाँ सामाजिक , सांस्कृतिक और भाषाई परिवेश के सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। उदाहरण स्वरूप , प्रेमचन्द के उपन्यास *गोदान* और *कफ़न* में प्रयुक्त मुहावरे ग्रामीण जीवन, सामाजिक असमानता और मानवीय संवेदनाओं का अभिव्यक्तिपरक

चित्रण करते हैं। इसी प्रकार, जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा की रचनाओं में प्रयोग किए गए मुहावरे आधुनिक साहित्य में पारंपरिक अभिव्यक्तियों की जीवंतता बनाए रखते हैं। कोष निर्माण की प्रक्रिया और अध्ययन की पद्धति पर विशेष ध्यान दिया गया है। डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय ने विभिन्न कालों , लेखकों और क्षेत्रीय बोलियों से अभिव्यक्तियों का चयन किया है और उनका अर्थ , प्रयोग और सामाजिक संदर्भ स्पष्ट किया है। कोष का तुलनात्मक अध्ययन अन्य प्रमुख कोशों और शोधों से किया गया है , जिससे विभिन्न अभिव्यक्तियों की समानता और भिन्नता स्पष्ट होती है।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से , शोधकर्ता ने मुहावरों और लोकोक्तियों की संरचना , अर्थगत परिवर्तन और प्रयोग की प्रक्रिया का विश्लेषण किया है। सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन में यह स्पष्ट होता है कि ये अभिव्यक्तियाँ केवल भाषा का हिस्सा नहीं , बल्कि समाज और संस्कृति की अभिव्यक्तियाँ हैं। शोध में यह भी दर्शाया गया है कि डिजिटल युग और सोशल मीडिया में नए मुहावरे उत्पन्न हुए हैं, जबकि पारंपरिक मुहावरे धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं। इस दृष्टि से यह शोध पारंपरिक और समकालीन अभिव्यक्तियों के तुलनात्मक अध्ययन का मार्ग प्रशस्त करता है।

अध्ययन निष्कर्ष स्वरूप यह स्थापित करता है कि डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय का *लोकोक्तियाँ एवं मुहावरा कोष* हिन्दी भाषा और साहित्य में लोकोक्तियों एवं मुहावरों के अध्ययन के लिए अमूल्य स्रोत है। यह कोष न केवल प्राचीन और आधुनिक अभिव्यक्तियों का संकलन प्रस्तुत करता है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषावैज्ञानिक दृष्टि से इनकी उपयोगिता को भी स्पष्ट करता है। वर्तमान शोध द्वारा प्रस्तुत आलोचनात्मक और तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि लोकोक्तियाँ और मुहावरे समाज , संस्कृति और भाषा की जीवंत अभिव्यक्तियों का आधार हैं।

कीवर्ड:- लोकोक्तियाँ, मुहावरे, डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय , हिन्दी साहित्य , कोष कोष निर्माण , भाषावैज्ञानिक विश्लेषण, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ, डिजिटल युग और आधुनिक प्रयोग

1. प्रस्तावना

1.1 लोकोक्ति का उदभव

लोकोक्ति (कहावत) का उद्गम निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता , लेकिन यह सामान्यतः जनमानस द्वारा , स्थानीय बोलियों में जीवन के विभिन्न अनुभवों और परिस्थितियों से उत्पन्न होती हैं । लोकोक्तियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती हैं और समय के साथ-साथ इनका रूप भी बदल सकता है[1]।

लोकोक्ति के उद्गम के बारे में अधिक जानकारी:

1.1.1 **जनमानस द्वारा उत्पन्न** : लोकोक्तियाँ किसी विशिष्ट व्यक्ति द्वारा नहीं बनाई जाती हैं, बल्कि वे आम लोगों की समझ और अनुभवों से उत्पन्न होती है।

1.1.2 **स्थानीय बोलियों में प्रयोग** : लोकोक्तियाँ अक्सर स्थानीय बोलियों या क्षेत्रीय भाषाओं में प्रयोग की जाती हैं , जो उन्हें एक विशिष्ट संस्कृति और समुदाय से जोड़ती है।

1.1.3 **जीवन के अनुभवों से प्रेरित** : लोकोक्तियाँ जीवन की विभिन्न परिस्थितियों, प्राकृतिक घटनाओं, सामाजिक व्यवहार और नैतिक मूल्यों पर आधारित होती है।

1.1.4 **पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण** : लोकोक्तियाँ अक्सर मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती हैं और समय के साथ -साथ इनकी व्याख्या और अर्थ भी बदल सकते है।

1.1.5 **अनिश्चित रचनाकार**: लोकोक्तियों के रचनाकार आमतौर पर ज्ञात नहीं होते हैं और उनकी उत्पत्ति को एक विशिष्ट व्यक्ति या समय के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है।

1. 1. 6 **भाषा का विकास** : लोकोक्तियाँ भाषा के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और वे भाषा के समृद्ध और गतिशील चरित्र को दर्शाती है।

1. 1. 7 **सांस्कृतिक पहचान**: लोकोक्तियाँ किसी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं और वे उस समुदाय के मूल्यों , विश्वासों और ज्ञान को दर्शाती हैं लोकोक्ति एक ऐसा सूक्ति वाक्य है जो प्रत्येक प्राणी के मन को मोह लेता है जो कि सामाजिक एवं मानव सूत्र के श्रुति रुप में जुडे हैं। लोकरीति नीति अनुराग, विराग, हास परिहास, ज्ञान विज्ञान, विधान साहित्य, संगीत, संस्कृति संस्कार व सामाजिक सरोकारों के आधार बनकर लोकविचारों में उद्धत होते रहते है कहावते मुहावरे पहेलियाएं अटका मटका आदि के रुप में विभिन्न लोक प्रचलित है।

बुन्देली लोकोक्ति कोष में लोकोक्ति का वर्णात्मक विवरण है और अपने आप में एक अनुठा विषय हैं लोकोक्ति के इस संग्रह से समाज को बुन्देली लोकोक्ति एवं मुहावरों को एक लोकवार्ता का साहित्य माना है। लोकोक्तियां सामाजिक एवं देश की सीमाओं में ही नही अपितु यह सतत प्रवाह वान रहने वाली धारा है और एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रवाहित होती रहती है। बुन्देली भाषा मानव जीवन पर अपना एक अलग प्रवाह डालती है। बुन्देली धरा एक गौरव मयी धरा है । जिसे बनाने का श्रेय यहाँ की वीरागनाओं को जाता है। जिनमें यहाँ की प्रमुख वीरागना लक्ष्मीबाई का नाम विशेष आदर्श के रुप में मानते है। यहाँ के प्रत्येक वक्ता के मुख से एक ही आदर्श वाक्य निकलता है [2]|

बुन्देलो हरबोलो से हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी । ।

लोकोक्ति में खान पान, रहन सहन, वेष भूषा, तीज त्योहार, जातिगत सहित अनेक मानवीय स्वभाव की विशुद्धता प्रकट होती है । इनका कहावतो का कोष एक प्रकार का बुन्देली थिसा परस हैं, जिसमे सभी कुछ देखा जा सकता है।

बुन्देली लोकोक्ति कोष एक अनूठा साहित्य है जिसमे बुन्देली भाषा को जीवित करने का क्षमता है जो अद्‌वितीय व प्रेरक है। जिससे जनमानस को बुन्देली भाषा को एक अच्छी पुस्तक प्राप्त हो गयी है। भारत की लोक संस्कृति का चित्रपट है बुन्देली साहित्य निधि इसके भीतर हमारा इतिहास झाँकता है, वे सही अर्थों में हमारे सामाजिक जीवन का दर्पण है तथा इतिहास शोधक भी है यदि इनका उपयोग किया जाये तो हमारा इतिहास सजीव संतुलित व सर्वागीण बन जायेगा । लोकसाहित्य भाषा बोली के चकव्यूह से दूर होता है, यह उसकी शक्ति व सम्पदा भी है, क्योंकि यह रिक्तता नही है रिझाने की स्थिति में वह ऋचा होता हैए पुराना होने पर पुराण होता है सुन्दर होने पर श्लोक होता है।

वह संवेदन शील है, वह पत्थर नही मिट्टी है, वह माँ की ममता है, वह धरती के ऑचल की सुरक्षा व स्नेह है और दुग्ध सदृश्य अमृतमय है । कंठासीन साहित्य परम्परा शील होते हुये उन लोगो में व्याप्त है जो दिखावे से दूर सहज प्रवृत्तियों में संसारित होते हुये, परिपाटी गत आस्था एवं विश्वासो के डोर से बंधे सामूहिक जीवन के सहयात्री होते है।

हमारे लोक जीवन में कहावतो का अपना स्थान है उनसे भाषा में लालित्य उत्पन्न होता है और भाषा बनती है शायद ही कोई साहित्य प्रेमी होगा, जिसे थोडी बहुत कहावतें कठस्थ न हो । कभी कभी बिना पढे लिखे व्यक्तियों के मुहँ से भी बडी सुन्दर कहावतों का अभिन्न नाता जुडा हुआ है ।[3]

इन कहावतों के पीछे कोई न कोई घटना या कहानी' होती है लेकिन बहुत कम लोग उसे जानते हैये कहानियाँ इतनी रोचक और मनोरंजक होती है कि पढकर दिल बाग बाग हो जाता है|

बुन्देलखंड के लोकगीत, पारम्परिक गीत बुन्देली संस्कृति वीर रस से युक्त आल्हा तीज त्यौहारों पर गाये जाने वाले मंगल गीत बुन्देली भाषा में अत्यंन्त मधुर एवं

कर्णप्रिय होते है यह गीतों ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित होते हैऔर कथाओं से लोकोक्तियों एवं मुहावरों का जन्म होता है इस बुन्देली भाषा की विशेषता के कारण डा० बुन्देली सिंह परमार की बुन्देली बंसत नामक पत्रिका पढने का अवसर प्राप्त हुआ डा० गंगा प्रसाद बत्सईया के साहित्य को पढकर प्रेरणा मिली जिस कारण से इन कहावतो पर बुन्देली लोकोक्तिया कोष पढकर इस विषय की जिज्ञासा उत्पन्न होने पर इस विषय को शोध करने का विचार आया।

बुन्देली लोकोक्ति को दो भाग मे विभाजित किया जाता है । प्रथम भाग में जहाँ लोकजन के सम्पर्क से प्राप्त लोकोक्तियाँ एवं मुहावरों का संग्रह है, वही दूसरे भाग में विभिन्न विषयों और क्षेत्रों से सम्बन्धित लोकोक्तियों कहावतो का विभाजन है। यह अधिकांश पदबद्ध है जो अनेक साहित्यकारो, पत्रिकाओं कृतियो आदि से चयनित कर सग्रहित की गयी है। यहाँ गाँवो की खाक भले ही न छानि गयी हो, पर पत्र पत्रिकाओं ग्रन्थों से निकालना भी सहज कार्य नही है इसमें भी वर्षों कर श्रम परिलक्षित होता है । विषयानुकूल अलग अलग अंकित करने से देखने पढने की अधिक सुविधा हो गयी है। जैसे सामान्य कहावतें लोकोक्तियाँ कृषि, स्वास्थ्य रोग, ज्योतिष, नारी, दान दहेज ज्योतिष, पारिवारिक, पालतु जानवरों सम्बन्धित, व्यापार, नशा, आध्यात्मिक कीडा, हास परिहास, बुन्देल भूमि की महत्ता अटका, तंत्र मंत्र आदि । इसमें तुलसीदास आदि से लेकर घाघ भण्डरी, तथा अन्य कवियों की पक्तियाँ दी गयी है। जिनमें लोकोक्तियों तथा कहावतों का प्रयोग है। विशेष बात यह है कि लोकजीवन में प्रायः आधी अधूरी पक्तियों के साथ ही लोकोक्तियों कहावतों का उल्लेख हो जाता है।

डा० सरल का यह बुन्देली लोकोक्तियों का संग्रह अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक महत्व है। संग्रहो के माध्यम से जहाँ हम अपनी विलुप्त सम्पदा को खोजकर प्रकाशित

करते है वही संग्रहित कर, सुरक्षित कर आने वाली पीढी को सौपकर उन्हें ज्ञानवान सम्पन्न बनाते है । डा० सरल जी की जितनी प्रंशसा की जाये उतनी कम है[4]।

1.2 मुहावरें

मुहावरे का शाब्दिक अर्थ होता है –अभ्यास। विशेष अर्थ को प्रकट करने वाले वाक्यांश को 'मुहावरा' कहा जाता है। मुहावरा पूर्ण वाक्य नहीं होता है , इसलिये इसका स्वतन्त्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता है। हिन्दी भाषा में मुहावरों का प्रयोग भाषा को सुन्दर 'प्रभावशाली' सक्षिप्त तथा सरल बनाने के लिये किया जाता है।

मुहावरे बात करने की एक शैली है जो अरबी भाषा के 'मुहावर' शब्द से बना है। लक्षणा व व्यंजना द्वारा वह सिद्ध वाक्य जो किसी बोली जाने वाली भाषा में प्रचलित हो कर 'रूद' हो गया हो तथा प्रत्यक्ष अर्थ की बजाय सांकेतिक अर्थ प्रदान करता हो। मुहावरों के विशेष अर्थो में कभी बदलाव नहीं होता है। ये हमेशा एक जैसे रहते है, ये लिंग, वचन, क्रिया के अनुसार वाक्यों में प्रयुक्त किये जाते है। 'मुहावरा' एक ऐसा वाक्यांश है, जो रचना में अपना विशेष अर्थ प्रकट करता है। हिन्दी भाषा में मुहावरों का प्रयोग भाषा को सुन्दर , प्रभावशाली, संक्षिप्त तथा सरल बनाने के लिये किया जाता है। इसका प्रयोग करते समय इसका शाब्दिक अर्थ न लेकर विशेष अर्थ को लिया जाता है। इसके विशेष अर्थों में कभी बदलाव नहीं होता है[5]।

हिन्दी मुहावरों क परिभाषा को इस प्रकार स्पष्ट कर सकते है :– 'मुहावरा' शब्दों का वह क्रम है , या समूह है जिसमें सभी शब्दों का अर्थ एक साथ मिलाकर लिखा जाता है। हिन्दी उर्दू में लक्षणा अथवा व्यजंना के सहयोग से जो वाक्य लिखा जाता है , उसे 'मुहावरा' कहते है। किसी भाषा की विशिष्ठ

अभिव्यंजना पद्धति को 'मुहावरा' कहा जाता है। मुहावरे भाषा में नींव का पत्थर है, जिस पर वह भव्य भवन् आज तक टिका हुआ है , अर्थात् हिन्दी शब्द कोष, समाज एवम् साहित्य में मुहावरों का महत्व आज भी बना हुआ है। किसी भाषा में पायी जाने वाली असाधारण शब्द योजना 'मुहावरा' कहलाता है। भाषा विशेष में प्रचलित उस अभिव्यक्ति इकाई को मुहावरा कहते है जिसका प्रयोग 'रूढ़' लक्षणा में होता है। जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को ना बताकर विशेष अर्थ को बताते है तथा साथ में क्रिया का काम करते है, वह मुहावरे कहलाते है। मुहावरे का मूल रूप कभी नहीं बदलता अर्थात् मुहावरे का स्वरूप 'स्थित' होता है। जैसे- 'कमर टूटना' एक मुहावरा है-इसके स्थान पर 'कोटि भंग' शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। हिन्दी के अधिकांश मुहावरों का सम्बन्ध सीधा शरीर के विभिन्न अंगों से होता है। जैसे -मुँह, नाक, कान, हाथ, पाँव आदि जैसे मुँह की खाना, कान खड़े होना, अपने पाँवों पर खड़ा होना, नाक का बाल होना। हिन्दी में मुहावरों की आवश्यकता इसलिये पडी ताकि बात को संक्षिप्त में बोल सके , अनेक मुहावरों में अलंकारों का भी प्रयोग होता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि प्रत्येक मुहावरे में अलंकार होता है। कुछ मुहावरें अलंकार युक्त होते है -जैसे- ″सोना सोना ही होता है ″ इस वाक्य में 'अनन्व' अलंकार होता है। कथानको, धर्मकथाओं, प्रथाओं आदि पर आधारित कुछ मुहावरें निर्भर होते है। मुहावरें भाषा को गतिशील और रोचक बनाते है और उसके बिना निस्तेज , नीरस, निष्प्राण हो जाती है। यह लेखकों तथा अनुवादकों के लिये तो उपयोगी हे ही , सामान्य जन भी इसकी सहायता से दैनिक जीवन में बोली जाने वाली अपनी भाषा को चित्रमय और प्रभावी बना सकता है। आज की दुनिया में अच्छा बोलने वालों के लिये ही प्रभावी बना सकता है। आज की दुनिया , अच्छा बोलने वालों के लिये नहीं।

इसलिये जिन्दगी की दौड़ में आगे बढ़ने वाले इच्छुक व्यक्तियों के लिये भी 'मुहावरों' का विशेष महत्व है।

'मुहावरों की अपनी कुछ विशेषता होती है-

(1) मुहावरों का प्रयोग हमेशा वाक्य के प्रसंग में होता है , अलग से कभी नहीं होता है।

(2) मुहावरे समाज की रीति-रिवाजों और परम्पराआ के निर्माण में सहायक होते है।

(3) मुहावरे का निर्माण देश काल तथा समाज के विकास के लिए होता है ।

(4) मुहावरा अपना असली अर्थ कभी नहीं बदलता है और न ही उन्हें पर्यायवाची शब्दों में उच्चारण किया जा सकता है।

(5) मुहावरों का अर्थ प्रसंग के अनुसार ही निश्चित होता है।

(6) मुहावरे शब्द का शब्दार्थ ग्रहण नहीं किया जाता है। उसका केवल विशेष अर्थ में ही ग्रहण किया जाता है[6]।

मुहावरे हिन्दी भाषा की समृद्धि और सभ्यता के विकास के मापन है। इसकी अधिकता या न्यूनता से भाषा को बोलने वाले को श्रम , भाषा निर्माण की शक्ति, अध्ययन मनन सबका एक साथ पता चलता है जो समाज जितना अधिक व्यवहारिक और कर्मठ होगा, उसकी भाषा में इसका (मुहावरों का) का प्रयोग उतना ही अधिक होगा। देश और समाज की तरह मुहावरें भी बनते बिगड़ते रहते हैं। नये समाज के साथ नये मुहावरे आते हैं। हिन्दी भाषा के ज्यादातर मुहावरे भाषा को सजीब बनाते है। मुहावरे के द्वारा भाषा में सरलता और सरसता आती है। मुहावरे द्वारा ही भाषा में प्रवाह व चमत्कार उत्पन्न

होता है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सरलता , रोचकता, सजीवता, परिष्कार, प्रवाह और चमत्कार आ जाता है। मुहावरे में भाषा को विशेष आकर्षण एवम् प्राणवान बनाने की अद्भुत क्षमता होता है। मुहावरों के ललित प्रयोग से वक्ता अथवा रचनाकार की विशिष्ठ अभिव्यक्ति क्षमता का ज्ञान होता है। जहाँ जितने अधिक मुहावरों का प्रयोग किया जाता है , वहां समाज उतना ही प्रगतिशील माना जाता है। वस्तुतः मुहावरों को साहित्यिक रचना में विशेष स्थान दिया जाना चाहिये। एक आलोचक के शब्दों किसी भी भाषा में मुहावरों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह भाषा को अतिरिक्त संचार शक्ति प्रदान करता है। इसके प्रयोग से भाषा और भी सम्प्रेषणीय तथा प्रभावशाली हो जाती है। इन्हीं विशेषताओं के कारण मानव जीवन में मुहावरों का प्रयोग निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। मान वीय दृष्टिकोण से भाषा में प्रयुक्त मुहावरों की पहचान करना, उसका वर्गीकरण करना तथा उसके सामान्य एवं लाक्षणिक अर्थों में भेद करना सरल है, किन्तु सगंणकीय, दृष्टिकोण से अपेक्षाकृत कठिन कार्य है। मुहावरों का संसाधन भाषा विज्ञान के विविध अनुप्रयुक्त क्षेत्रों (मशीनी अनुवाद, भाषा-शिक्षण संगणकीय भाषा विज्ञान आदि) के लिये अभी भी चुनौती पूर्ण समस्या है। इसी समस्या को दृष्टिगत रखते हुए मुहावरों की पहचान करने के साथ-साथ विविध आधारों पर उसका विश्लेषण तथा वर्गीकरण किया जाये। हिन्दी में मुहावरों का प्रयोग भाषा में रवानगी , ताजगी और अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता लाने के लिये किया जाता है। मुहावरें भाषा की लाक्षणिकता की धरोहर होते है। अपनो भाषा को वक्र अभिव्यक्ति में कहने की वक्ता की ललक मुहावरों के द्वारा पूरी होती है। ये ढली -ढलाई वक्रतायें हैं जो अपने स्थित अर्थ के बावजूद भी वक्ता के मनोभाव को चमक के साथ प्रस्तुत

करती है। वक्ता अपने व्यापक अर्थ को एक मुहावरे में समेट कर संतुष्ट हो जाता ह। जिस लेखक या वक्ता में मुहावरें की पकड़ जितनी पैनी होती है , उसकी अभिव्यक्ति भी उपती ही सरस और चुटीली होगी[7]।

1.3 साहित्य

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य कार जिस देश व समाज में रहता है, उसके साहित्य में उस देश व समाज की समस्यॉए और युगीन चेतना स्वभाविक रुप से विद्यमान होती है। बुन्देली लोकोक्ति में श्री गौरी शंकर उपाध्याय जी का योगदान उन लेखकों में रहा है, जिन्होनें बुन्देली लोकोक्ति और मुहावरों की शैली को समझाने का प्रयास किया है और बुन्देली मुहावरों के विभिन्न पहलुओं को परत दर परत वडी ताकत के साथ उजागर किया है[8]।

डा० गौरीशंकर उपाध्याय ने बुन्देली भाषा की लोकोक्तियाँ मुहावरों व कहावतों का अनुपम संग्रह किया है जिससे यथा कहावते कृषि स्थान नीति पादप, पुष्प पशु शकुन-अपशकुन, वर्षा काल, जाति, आकृति, स्वास्थ्य, दिशा, सूत, मानव प्रकृति, इतिहास, आदि से सम्बंधित है। पहेली, आडी, पहेलिका, बुझनी बुझउअल, मुकरी, तथा समस्या कहा जाता है। उसके भी अनेक भेद है यथा पादप पुष्प, कीट, पंतग, खाद पदार्थ, कृषि सूर्य चन्द्र, तारा, मेघ, आकाश आदि, तालाब, नदी, झरना, आदि वेश भूषा, पशु-पक्षी गणित, अस्त्र-शस्त्र देवी, देवता से सम्बधिंत है साहित्य की तथ्यात्मक व्याख्या एवं विश्लेषण ही इस शोध का कार्य क्षेत्र होगा।

डा० गौरी शंकर उपाध्याय की लोकोक्तियाँ एवं कहावतें उत्कृष्ठ पुस्तके है जिसमें सरल जी ने कहावतों एवं लोकोक्तियों का अनुपम संग्रह किया उनका उद्देश्य बुन्देली भाषा चलन के विकास को ध्यान में रखकर की गयी है बुन्देली धरा की पहचान यहाँ की वीरागनाओं से भरी पडी जो यहाँ की नारियों में उत्साह उमंग एवं नवीन कान्ति को

समाविष्ट करती है। सरल जी का उद्देश्य यह रहा कि बुन्देली कहावतें साधारण मानव के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है इन्होने जाति भेदभाव, कृषि, दिन रात, मौसम मानव, प्रकृति बाल्य, पुरुषों एवं स्त्रियों के लिए विशेषकर कहावतों का संग्रह शामिल है । कृषि के प्रति लोकोक्तियाँ इस उद्देश्य को लेकर चलती है कि जिससे किसान को खेती की आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सके । इसी प्रकार सरल जी ने प्रत्येक विषय को बडी सरल और सहज रुप में प्रस्तुत कर समाज की एक अच्छी कृति प्रस्तुत की है इस कृति का उद्देश्य समाज की बुराइयों को ध्यान में रखकर उसके निदान के लिए लोकोक्तियों का निर्माण किया गया है। लोकोक्तियों का प्रयोग एक अनुठा प्रयोग है इस के प्रयोग की छाप मनुष्य के दिमाग पर पडती है जिसे वह आसानी से स्मरण से आसानी से हटा नही पाता है और ये उसकी स्मृति में बनी रहती है लेकिन इस प्रकार के वाक्यांश या कोई घटना होती है इनका प्रयोग करके इस पूरी घटना को एक वाक्य में में आसानी से समझायी जा सकती है।

मनुष्य की प्रकृति जिज्ञासु होने के कारण अनुसंधान और शोध लगातार जीवन के हर क्षेत्र में चलता रहता है । साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष प्रकार का होता हैउसी प्रकार से बुन्देली साहित्य का अनुसंधान अद्‌वितीय प्रभाव डालने वाला है क्योंकि साहित्य और बुन्देली यथार्थ को लेकर चलता है तथा बुन्देली साहित्य की रुपरेखा एक विशेष आकर्षण का विषय है तथा बुन्देली भाषा की पौराणिकता का आधार है।

जिसे हम किसी हिन्दी के प्रचार प्रसार या एक देश के अभिकर्ता के रुप में प्रयोग भाषा की विशेष बात का उल्लेख करने में हिन्दी लोकोक्तियों को प्रयोग किया जाता है लोकोक्तियाँ हमारे जीवन के प्रत्येक स्तर पर एक विशेष बात को कम शब्दों में कहने की बात को लेकर प्रस्तुत की जाती है हिन्दी हमारे देश की प्रधान महाविद्‌यालय के पुस्तकालय के लिए परम उपयोगी सिद्ध हुयी होगी।

डा० गौरी शंकर उपाध्याय ने अपने दीर्घ जीवन, अन्वेषण खोज शोध और ग्रामीण अंचलो में रहकर मुहावरों कहावतों और लोकोक्तियों का अनुठा संग्रह किया है इन्हें वर्णमाला कम में सजाया गया है, साथ ही अनेक अर्थ भी दिये है। अतः इस संकलन और सम्पादन के कौशल पर उनके परिश्रम की प्रशंसा करना उनके मुल्याकंन को कम करना है श्री उपाध्याय जी ने बुन्देली परिवेश को यथा संभव बनाए रखने की चेष्टा की है यह ग्रन्थ मनीषी साहित्य प्रेमियों के लिए तो उपयोगी है साथ ही विधार्थी समुदाय के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा ।

बुन्देली लोकोक्ति के विकास में डा० गौरी शंकर उपाध्याय जी का योगदान अमूल्य है। डा० गौरी शंकर उपाध्याय जी ने बुन्देली लोकोक्ति कोष का निर्माण कर बुन्देली जनमानस के लिए एक अद्‌वितीय कृतियों का निर्माण किया है जिससे बुन्देली भाषा का आस्तित्व बना रहेगा।

भाषा देश की संस्कृति को परिभाषित करती है | भाषा प्रधान देश, भाषा और बुन्देली भाषा एक राज्यस्तरीय भाषा के रुप में प्रयोग होती है साथ ही हिन्दी एवं बुन्देली लोकोक्ति में यही अंतर है[9]।

डॉ० गौरी शंकर उपाध्याय द्‌वारा रचित ने लोकोक्ति कोष

मननीय श्री सरल जी का यह बुंदेली लोकोक्ति कोष है, जिसमें भावो की गरिमा और गहनता के साथ-साथ प्रेम व आचरण भी निहित है ।

बुन्देली लोकोक्ति सहस्त्रों वर्षों से अपने अन्तस्थ में सामान्य जनों एवं प्राकृत लोगों के भावों को इन मुहावरों के माध्यम से सुदृढ रुप से प्रकट करते आये है इनका एक स्थान पर स्थापित करना बडा ही कठिन एवं जटिल कार्य है जिसे माननीय डा० सरल जी ने सुन्दरता से संजोकर सुचारुता प्रदान की है । वर्णानुक्रम से इन लोकोक्तियो को प्रस्तुत करना बहुत ही क्षम साध्य है जिसे सरल जी ने प्रस्तुत कर एक अद्‌वितीय अनुठा कार्य

कर दिखाया विश्वास है कि उनके इस सुकार्य के साक्षात्कार से सुधीजन अपने को धन्य मान्य करेगे।

डा० गौरी शंकर उपाध्याय जी के संकलन शीघ्र ही प्रकाशित होकर जन मानस के सामने उपलब्ध होगें तथा हमें आशा है कि सभी साहित्य एवं कृतिया, ज्ञान अर्जन लिए उपयोगी सिद्ध होगी तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते है कि, डा० गौरी शंकर उपाध्याय जी को लेखन के क्षेत्र में और अधिक कीर्ति श्रेष्ठ हो ।

1.4 बुंदेली भाषा साहित्य

बुन्देली भाषा बुन्देल खंड के निवासियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा है यह कहना कठिन है कि बुन्देली भाषा कितनी पुरानी बोली है लेकिन ठेठ बुन्देली शब्द अनुठे है जो शदियों से आज तक प्रयोग में है केवल हिन्दी व संस्कृत पढने वालो को उनके अर्थ को समझना कठिन है। सैकडों शब्द ऐसे है जो हिन्दी समझने वाले नही बता पाते, यह भाषा बंगला या मैथिली भाषा से मिलती जुलती है। प्राचीन काल में बुन्देली में शासकीय 10 पत्र व्यवहार संदेश, बीजक, राजपत्र, संधियो के अभिलेख आदि प्रचुर मात्रा में बुन्देली भाषा में लिखे प्राप्त हुये है। वर्तमान बुन्देलखंड, चेदि, दर्शाण एवं कारुष से जुडा था वहाँ के देशज प्रधान लोक भाषा बुन्देली ही थी। इसे पूर्व ही भवभूति उत्तर राम चरित के ग्रामीणजनों की भाषा विंध्येली प्राचीन बुन्देली भाषा ही थी बुन्देली के आदि कवि के रुप में प्राप्त सामग्री के आधार पर जगनिक एवं विष्णुदास सर्वमान्य है जो बुन्देली की समस्त विशेषताओं से मंडित है[10]।

1.5 बुन्देली भाषा का इतिहास एवं विकास

'बुन्देलखण्ड' भूभाग ऐतिहासिक काल में भी अपने अस्तित्व में था और आज भी है। यह वह भूभाग है जो प्रमुख रूप से बुन्देले राजपूतों की निवासभूमि अथवा उनके द्वारा शासित भूमि रहा है। ऐतिहासिक विवरण से ज्ञात होता है कि 'बुन्देल' अथवा 'बुन्देला'

शब्द सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, अग्निवंशी, चेदि, चौहान, गहरवार आदि वर्ग विशेष के क्षत्रियों का द्योतक नहीं हैं। बुन्देलखण्ड में बसने के कारण वहाँ का क्षत्रिय वर्ग विशेष 'बुन्देला' नहीं कहलाया, इसके विपरीत बुन्देलों की निवासभूमि होने के कारण यह भूभाग 'बुन्देलखण्ड' कहलाया।

बुन्देलखण्ड नामकरण के सम्बन्ध में अनेक मान्यताएँ हैं। प्रथम मान्यता के अनुसार गिरिराज विन्ध्य की उपत्यका में स्थित होने के कारण यह भूभाग बुन्देलखण्ड कहलाता है। इस भूभाग का नाम 'बुन्देलखण्ड' मानने वाले 'विन्ध्य' से 'बिनध्य' का विन्यास का विकास एवं 'विन्ध्य' से 'विन्ध्येल' शब्द का निर्माण मानकर कालान्तर में 'बुन्देलखण्ड' का नाम मानते हैं।

द्वितीय मान्यता के अनुसार बुन्देले इस भूभाग के मूल निवासी नहीं हैं। यहाँ आकर बसने के पश्चात् ही बुन्देले कहलाये। जनश्रुति है कि गहरवार क्षत्रिय महाराज हेमकरन, काशी का राज्य छिन जाने पर इस भूभाग में आये तथा पुनः राज्य प्राप्ति हेतु उन्होंने विन्ध्यवासिनी देवी की आराधना की। देवी को अपना सिर समर्पित करने के लिए जैसे ही अपनी तलवार उठाई, देवी ने उनका हाथ पकड़ लिया, किन्तु उनके मस्तक पर तलवार की खरौंच लग ही गई और रक्त की कुछ बूँदें भूमि पर देवी के सामने गिर पड़ीं। अपने रक्त की बूँद देवी को समर्पित करने वाले हेमकरन महाराज की सन्तान बुन्देले कहलाये तथा इनकी निवास भूमि 'बुन्देलखण्ड' नाम से सम्बोधित होने लगी।

सम्भवतः विन्ध्य से विन्ध्येन शब्द की निष्पति हुई, कालान्तर में विन्ध्येले से बुन्देले शब्द बना और इन बुन्देलों का इस भूभाग में शासन स्थापित होने के पश्चात् ही उसे 'बुन्देलखण्ड' कहा जाने लगा। 11 वीं शती पूर्ण के महाराज हेमकरण की 10वीं पीढ़ी में 16वीं शती के लगभग मध्यकाल में महाराज रुद्रप्रताप हुये, जिन्होंने सर्वप्रथम चन्देलों के अधिकार से इस भूखण्ड का कुछ भाग छीनकर अपना राज्य स्थापित किया। इतिहासकारों ने इनके शासन का आरम्भ सन् 1553 ई. (सं 1610 वि.) माना है।

महाराज रुद्रप्रताप ही बुन्देल राज्य के प्रथम शासक थे। इनके पश्चात् उनके पुत्र महाराज भारतीचन्द्र ने अपने राज्य का विस्तार उत्तर में यमुना नदी के तट तक तथा दक्षिण पूर्व में कालिंजर और महोबा तक किया। इसी काल से इस भूभाग को बुन्देलखण्ड कहा जाने लगा प्रतीत होता है। महाराज छत्रसाल बुन्देला इसी राजवंश के उत्तराधिकारी हुए। बुन्देलखण्ड का नाम चार सौ वर्षों से अधिक प्राचीन नहीं हो सकता।

इस भूभाग में राजनीतिक उत्थान-पतन होते रहे, राजनीतिक परिवर्तन के साथ ही इसकी सीमाओं में परिवर्तन होता रहा। यह कभी विशाल साम्राज्य का अंग बनकर आर्यों द्वारा शासित होता रहा, कभी नागों द्वारा, कभी चेदियों द्वारा, कभी गुप्तों द्वारा, कभी चन्देलों द्वारा, कभी प्रतिहारों द्वारा, कभी बुन्देलोंद्वारा तथा कभी विभिन्न मुस्लिम शासकों द्वारा शासित होता रहा और प्रत्येक शासनकाल में इसकी सीमाएँ परिवर्तित होती रहीं। इसका कोई एक निश्चित नाम कभी नहीं रहा।

'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में बुन्देलखण्ड का 'जेजाकभुक्ति' के रूप में उल्लेख किया गया है। इतिहासकारों ने राजा जेज्जाक (जयशक्ति) को प्रतापशाली शासक कहकर उसका राज्य यमुना से नर्मदा तक विस्तृत बतलाया है। इसी राजा के नाम पर यह यमुना से नर्मदा तक का भाग 'जीजक' अथवा जेजक भूमि' कहलाता था। स्व. श्रीकृष्ण बल्देव वर्मा का तर्क है कि " वैदिककालीन यजुर्वेदीय कर्मकाण्ड का यहाँ सर्वप्रथम अम्युदय होने के कारण यह प्रदेश 'यजुर्होति' कहा गया था, जिसका अपभ्रष्ट रूप' जैज- भुक्ति' है।" पृथ्वीराज चौहान के मदनपुर के शिलालेख से प्रकट होता है कि 12वीं शताब्दी तक यह देश जेजाकभुक्ति ही कहलाता था।

महाभारत कालीन चेदि नरेश शिशुपाल भी वर्तमान बुन्देलखण्ड के अधिकांश भाग के शासक थे। चन्देरी उनकी राजधानी थी। इतिहासकार श्री.डी. महाजन ने " शिशुपाल द्वारा शासित भूभाग को वर्तमान बुन्देलखण्ड के समरूप लिखा भी है"। वे चेदि- वंशीय राजाओं का शासनकाल ई.पू. 6 वीं से 4 थी शती मानते हैं। उन्होंने लिखा है-

"जेजकभुक्ति बुन्देलखण्ड का प्राचीन नाम था। यह कन्नौज के प्रतिहार साम्राज्य का अंग था।"

'बुन्देलखण्ड' का नाम 'दशार्ण देश' भी बतलाया जाता है। यह नाम 'जेजकभुक्ति' से पूर्व का होना चाहिए। महाभाष्य के टीकाकार ने नदी विशेष तथा देश विशेष का नाम 'दशार्ण' लिखा है। बुन्देलखण्ड दस नदियों का देश है। चम्बल, पहूज, कालीसिंध और कुँवारी नदियों का संगम यमुना में होता है, इस स्थान को पंच-नद भी कहते हैं। शेष पाँच नदियाँ वेत्रवती (बेतवा), मन्दाकिनी, केन, तमसा और घसान है। 'दशार्ण देश' के राजा हिरण्यवर्मा की पुत्री का विवाह राजकुमार शिखण्डी से हुआ था। दशार्ण नरेश सुधर्मा तथा पाण्डुनन्दन भीम के युद्ध का उल्लेख महाभारत में मिलता है।

इस प्रदेश में बुन्देलखण्ड कहलाने का कारण यहाँ की भौगोलिक स्थिति ही प्रतीत होती है। इस प्रदेश में विन्ध्य पर्वत की श्रेणियाँ हैं और इस कारण यह विन्ध्यखण्ड अथवा विन्ध्येलखण्ड कहलाया। कालान्तर में विन्ध्येलखण्ड का बुन्देलखण्ड हो गया[11]।

1.5.1 बुन्देलखण्डः सीमा और क्षेत्र

गिरि गहवर नद-निर्झर मय लता गुल्म तरु कुन्नभूमि है, तपोभूमि साहित्य कल्युत वीरभूमि बुंदेलभूमि है।

अधिकांश विद्वान बुन्देलखण्ड की सीमा उत्तर में यमुना नदी तक, दक्षिण में नर्मदा तक, पूर्व में टोंस तक और पश्चिम में चम्बल तक मानते हैं। इस प्रकार इन चारों नदियों के मध्य में स्थित भू-भाग ही बुन्देलखण्ड कहलाता है।

'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में बुन्देलखण्ड को मध्य भारत का वह भाग कहा गया है, जिसकी पूर्वी सीमा बघेलखण्ड की सीमा से मिलती है। इस उल्लेख में बुन्देलखण्ड की सीमाएँ स्पष्ट नहीं है।

डॉ. नार्नग्रियर्सन ने 'गजेटियर ऑफ इण्डिया' के आधार पर लिखा है-"बुन्देलखण्ड वह भू-भाग है, जो उत्तर में यमुना, उत्तर पश्चिम में चम्बल, दक्षिण में मध्यप्रदेश के जबलपुर ओर सागर संभाग तथा दक्षिण और पूर्व में रीवा अथवा बघेलखण्ड के मध्य में स्थित है और जिसके दक्षिण और पूर्व में मिर्जापुर की पहाड़ियाँ है।" उन्होंने आगे लिखा है- "राजकीय दृष्टि से इस क्षेत्र में अंग्रेजी राज्य के बाँदा, हमीरपुर, जालौन और झाँसी जिले है, पूर्ण बुन्देलखण्ड एजेंसी तथा बघेलखण्ड एजेंसी का कुछ भाग सम्मिलित है।"

पुरातात्विक साहित्यिक शोधों कि विपुलता ने इतने नये तथ्य प्रस्तुत किए हैं कि भारतवर्ष के समग्र इतिहास से पनरालेखन की आवश्यकता प्रतीत होने लगी है। "बुंदेलखंड' का इतिहास भी इसी प्रकार नयी शोधों के संदर्भ में आलेखन की अपेक्षा रखता है। "बुंदेलखंड 'शब्द मध्यकाल से पहले इस नाम से प्रयोग में नहीं आया है। इसके विविध नाम और उनके उपयोग आधुनिक युग में ही हुए हैं। बीसवीं शती के प्रारंभिक दशक में रायबहादुर महाराजसिंह ने बुंदेलखंड का इतिहास लिखा था। इसमे बुंदेलखंड के अन्तर्गत आने वाली जागीरों और उनके शासकों के नामों की गणना मुख्य थी। दीवान प्रतिपाल सिंह ने तथा पन्ना दरबार के प्रसिद्ध कवि "कृष्ण' ने अपने स्रोतों से बुंदेलखंड के इतिहास लिखे परन्तु वे विद्वान भी सामाजिक सांस्कृतिक चेतनाओं के प्रति उदासीन रहे।

पं० हरिहर निवास द्विवेदी ने "मध्य भारत का इतिहास' ग्रंथ में बुंदेलखंड की राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक उपलब्धियों की चर्चा प्रकारांतर से की है। इस ग्रंथ में कुछ स्थानों पर बुंदेलखंड का इतिहास भी आया है। एक उत्तम प्रयास पं० गोरेलाल तिवारी ने किया और "बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास' लिखा जो अब तक के ग्रंथो से सबसे अलग था परन्तु तिवारीजी ने बुंदेलखंड का इतिहास समाजशास्त्रीय आधार पर लिख कर केवल राजनैतिक घटनाओं के आधार पर लिखा है।

बुंदेलखंड सुदूर अतीत में शबर, कोल, किरात, पुलिन्द और निषादों का प्रदेश था। आर्यों के मध्यदेश में आने पर जन जातियों ने प्रतिरोध किया था। वैदिक काल से बुंदेलों के शासनकाल तक दो हज़ार वर्षों में इस प्रदेश पर अनेक जातियों और राजवंशं ने शासन किया है और अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना से इन जातियों के मूल संस्कारों को प्रभावित किया है। विभिन्न शासकों में मौर्य, सुंग, शक, हुण, कुषाण, नाग, वाकाटक, गुप्त, कलचुरि, चन्देल, अफगान, मुगल, बुंदेला, बघेल, गौड़, मराठ और अंग्रेज मुख्य हैं।

ई० पू० ३२१ तक वैदिक काल से मौर्यकाल तक का इतिहास वस्तुतः बुंदेलखंड का "पौराणिक-इतिहास' माना जा सकता है। इसके समस्त आधार पौराणिक ग्रंथ है।

इतिहासकार श्री बी.ए. स्मिथ ने लिखा हैः "जिस क्षेत्र में चन्देल शासकों ने राज्य किया, वह बुन्देलखण्ड है। यह क्षेत्र गंगा-यमुना के दक्षिण में नर्मदा नदी तक फैला हुआ है। "

दीवान प्रतिपाल सिंह के अनुसार "पूर्व में टॉस और सोन नदियाँ अथवा बघेलखण्ड नाले तक सिलसिला चला गया है। पश्चिम में बेतवा, सिन्ध और चम्बल नदियाँ, विन्ध्याचल श्रेणी तथा मालवा, सिन्धिया का ग्वालियर राज्य और भोपाल राज्य है तथा पूर्वी मालवा इसी में आता है। उत्तर में यमुनाऔर गंगा नदियाँ अथवा इटावा, कानपुर, फतेहपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर तथा बनारस जिले है, दक्षिण में नर्मदा नदी और मालवा है।"

पं. गोरेलाल तिवारी के अनुसार "इस भूभाग के उत्तर में यमुना का प्रचंड प्रवाह, पश्चिम में मंद-मंद बहने वाली चम्बल और सिन्ध नदियाँ, दक्षिण में नर्मदा नदी और पूर्व में बघेलखण्ड है।"[12]

प्रसिद्ध पुरातत्वविद् कनिंघम के अनुसार "बुन्देलखण्ड के अधिकतम विस्तार के समय इसमें गंगा और यमुना का समस्त दक्षिणी प्रदेश है जो पश्चिम में बेतवा नदी से पूर्व में चंदेरी और सागर के जिलों सहित विन्ध्यवासिनी देवी के मंदिर तक तथा दक्षिण में नर्मदा नदी के मुहाने के निकट बिल्हारी तक प्रसारित रहा है।"

इतिहासकार श्री जयचंद विद्यालंकार के अनुसारः "बुन्देलखण्ड में बेतवा (वेत्रवती), धसाना (दशार्ण) और केन (शुक्तिमती) के काँठे, नर्मदा की उपरली घाटी और पचमढ़ी के अमरकंटक तक वृक्ष पर्वत का हिस्सा सम्मिलित है, उसकी पूर्वी सीमा टोस (तमसा) नदी है। इस प्रकार बेतवा और केन के काँठों तथा नर्मदा के उपरले काँठेवाला प्रदेश बुन्देलखण्ड है।"

प्रो. नर्मदा प्रसाद गुप्त के अनुसार - " बुन्देलखण्ड प्रदेश में निम्नलिखित जिले और उनके भाग आते हैं और उनमें इस प्रदेश की एक भौगोलिक, भाषिक एवं सांस्कृतिक इकाई बनती है-

1. उत्तरप्रदेश के जालौन, झाँसी, ललितपुर, हमीरपुर जिले तथा बाँदा जिले की नरैनी और करवी तहसीलों का दक्षिणी पश्चिमी भाग।

2. मध्यप्रदेश के पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया, दमोह, नरसिंहपुर तथा जबलपुर का दक्षिणी और पश्चिमी भाग, होशंगाबाद जिले की होशंगाबाद और सोहागपुर तहसीलें, रायसेन की उदयपुर, सिलवानी, गैरतगंज, बेगमगंज, बरेली तहसीलें एवं रायसेन, गौहरगंज तहसीलों के पूर्वी भाग, विदिशा, बसौदा, सिरौंज तहसीलों के पूर्वी भाग, गुना जिले की अशोक नगर (पिछोर) और मुंगावली तहसीलें, शिवपुरी जिले की पिछोर और करैरा तहसीलें, ग्वालियर की पिछोर एवं भांडेर तहसीलें तथा ग्वालियर जिले का उत्तर-पूर्वी भाग भिण्ड की लहार तहसील का दक्षिणी भाग।"[13]

उन विभिन्न मतों के प्रकाश में बुन्देलखण्ड की सीमाएँ इस प्रकार होंगीः उत्तर में यमुना नदी तथा एक ओर आगरा और दूसरी ओर कानपुर जिले की दक्षिणी सीमाएँ; दक्षिण में नर्मदा नदी; पूर्व में टोंस नदी तथा बघेलखण्ड की पश्चिम सीमा और पश्चिम के पश्चिमोत्तर भाग में चम्बल (चर्मण्वती) नदी एवं शेष पश्चिम भाग में मालव प्रदेश की पूर्वी सीमा। इस भूभाग के अन्तर्गत उत्तरप्रदेश के झाँसी, जालौन, हमीरपुर और बाँदा जिले; ग्वालियर सम्भाग के ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना, गुना और शिवपुरी जिले; भोपाल संभाग के सीहोर, रायसेन, विदिशा और होशंगाबाद जिले, जबलपुर संभाग के जबलपुर, सागर, दमोह और नरसिंहपुर जिले तथा रीवा संभाग के टीकमगढ़, दतिया, छतरपुर और पन्ना जिले है।

बुंदेलखंड का महत्वः

बुंदेलखंड भारत के इतिहास और संस्कृति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक किलों, और सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है।

बुंदेलखंड में अनेक ऐतिहासिक किले और मंदिर हैं, जो इसके समृद्ध इतिहास को दर्शाते हैं.

बुंदेलखंड में अनेक ऐतिहासिक किले हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख किले हैं:

- कालिंजर किला
- भूरागढ़ किला
- ओरछा किला
- देवगढ़ का किला

1.5.2 बुंदेलखंड की भाषा

भारत की अधिकांश आर्य भाषाओं तथा उनकी बोलियों के नाम उनके क्षेत्र के नाम पर आधारित है 'यथा पंजाब की पंजाबी, राजस्थान की राजस्थानी, गुजरात की गुजराती, बंगाल की बंगाली, अथवा बंगला, आसाम की आसामी, उड़ीसा की उड़िया, बिहार की बिहारी। इसी प्रकार अवध की अवधी, ब्रज की ब्रज, कन्नौज की कन्नौजी, बघेलखण्ड को बघेली, मालवा की मालवी, निमाड़ की निमाड़ी इसी आधार पर बुन्देलखण्ड की लोक भाषा बुन्देलखण्डी अथवा बुन्देली कहलाती है। बुन्देलखण्ड की लोकभाषा होने के कारण यह बुन्देलखण्डी नाम से अभिहित हुई। अतएव इसका यह वर्तमान नामकरण भी 'बुन्देलखण्ड' अपने वर्तमान नाम में चार सौ वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं हो सकता। 'बुन्देली' के अपने वर्तमान नाम में अविर्भूत होने के पूर्व इस क्षेत्र में निश्चय ही कोई भाषा, उपभाषा अथवा बोली का अस्तित्व रहा होगा। बुन्देली लोकभाषा को प्रथम बुन्देला शासक महाराज रुद्रप्रताप के काल में वर्तमान नाम प्राप्त हुआ और इसके पश्चात् ही इसका क्रमिक विकास भी हुआ[14]।

हिंदी भाषा और उसकी सभी बोलियों का मूल स्रोत संस्कृत भाषा है। संस्कृत भाषी लोग, जिन्हें आर्य नाम से अभिहित किया जाता है, लगभग 1500 वर्ष ई. पू. में भारत आए तथा धीरे-धीरे प्रायः पूरे उत्तरी भारत में फैल गए। यहाँ बसने के बाद कुछ ही दिनों में उनकी भाषा में परिवर्तन आने लगे तथा उस भाषा (वैदिक संस्कृत) की कम-से-कम तीन बोलियाँ स्पष्ट रूप से विकसित हो गईं। इतनी जल्दी इन अलग-अलग बोलियों के विकास के मुख्यतः दो कारण थे। एक तो यह कि यह भाषा इतने लंबे-चौड़े क्षेत्र में फैल गई है कि इतने सुदूर प्रदेशों के लोगों का आपस में मिलना-जुलना संभव नहीं रहा, अतः अलग-अलग स्थानीय भाषा-रूपों का विकास अवश्यंभावी हो गया। दूसरे स्थान-स्थान पर आर्यों के पूर्व की जो मूल या पुरानी जातियाँ (जैसे द्रविड़ आदि) थीं, उनसे एक सीमा तक इनके रोटी-बेटी के संबंध हो गए और इस सामाजिक मिश्रण ने भाषा के स्थानीय

रूपों के विकास में और भी तेजी ला दी, क्योंकि इससे न केवल उस भाषा का शब्द-भंडार प्रभावित हुआ, बल्कि व्याकरण भी अप्रभावित नहीं रह सका। बहुत से विद्वानों का विचार है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं में परसर्गों, संयुक्त क्रियाओं तथा कृदंताधारित क्रिया रूपों की जो प्रवृत्ति है, उनके मूल में इन आर्य-पूर्व जातियों की भाषाओं का प्रभाव है।

इस प्रसंग में यह उल्लेख्य है कि वैदिक साहित्य की भाषा के विश्लेषण से इस बात के काफी स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि उस काल में बोल-चाल में कम-से-कम तीन बोलियाँ थीं मध्यवर्ती तथा पूर्वी। पश्चिमोत्तरी,बाद में बोलचाल की संस्कृत का विकास जब पालि भाषा के रूप में हुआ वह पालि भाषा जिसमें बौद्ध धर्म के बहुत से ग्रंथ लिखे गए-तो स्वभावतः स्थानीय बोलियों की संख्या और भी बढ़ गई। अशोक के शिलालेख (जो लोक-भाषा में है) के अध्ययन से इस बात के स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि उसमें कम-से-कम चार बोलियों थीं। अर्थात् वैदिककालीन तीन बोलियों की संख्या में एक हो गई थी। जनसंख्या वृद्धि के बाद भाषा का जो जन प्रचलित रूप था, उसके स्थानीय रूप रूप छः-सात विकसित हो गए, ब्राचड (आधुनिक सिंध), केकय (आधुनिक मुलतान तथा आस-पास), टक्क (आधुनिक पूर्वी पंजाब), शौरसेनी (आधुनिक गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, पश्चिमी तथा उत्तरी प्रदेश, मध्य प्रदेश के मध्य उत्तर तथा पश्चिम का काफी बड़ा भाग), महाराष्ट्री (आधुनिक महाराष्ट्र, गोवा तथा कर्नाटक और आंध्र के उत्तरी भाग), अर्धमागधी (आधुनिक उत्तर प्रदेश के लखनऊ, इलाहाबाद आदि के आस-पास का भाग, मध्य प्रदेश का रीवां तथा पूरा छत्तीसगढ़) तथा मागधी (आधुनिक पूर्वी उत्तर प्रदेश, पूरा बिहार, असम, बंगाल, बंगला देश तथा उड़ीसा)। इनमें आपस में इतने स्पष्ट अंतर विकसित हो गए थे कि प्राकृत के व्याकरण ग्रंथों में इनकी अलग-अलग विशेषताओं के स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं। प्राकृत काल के

बाद भी बोलचाल की भाषा के विकसित रूप को अपभ्रंश नाम दिया गया है। इस काल में प्राकृत काल के ये सात रूप कम-से-कम बारह-तेरह रूपों में विकसित हो गए, जिनके लिए नामों का निर्धारण नहीं हुआ।

यह ध्यान देने की बात है कि हिंदी क्षेत्र की भाषा हिंदी है तथा उसे क्षेत्र में पाँच उपभाषाएँ या बोली वर्ग बोले जाते हैं: राजस्थानी, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, पहाड़ी, बिहारी। ऊपर की तालिका से स्पष्ट है कि हिंदी और उसकी बोलियों का विकास तीन प्राकृतों (शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी) से विकसित पाँच अपभ्रंश (राजस्थानी अपभ्रंश, पश्चिमी हिंदी अपभ्रंश, पहाड़ी अपभ्रंश, अर्धमागधी अपभ्रंश तथा बिहारी अपभ्रंश) से हुआ है।

हिंदी भाषा की बोलियाँ तीन प्रकार की हैं :

(क) हिंदी प्रदेश में प्रयुक्त (जैसे ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी आति

(ख) हिंदीतर भारतीय प्रदेशों में प्रयुक्त (जैसे दक्खिनी हिंदी, बंबइया हिंदी, कलकतिया हिंदी)

(ग) विदेशों में प्रयुक्त (जैसे सूरीनामी हिंदी, फीजी हिंदी, मारीशस की हिंदी आदि)

भारत के बाहर की प्रायः सभी हिंदी बोलियाँ मूलतः और मुख्यतः भोजपुरी पर आधारित हैं, अतः उनको भोजपुरी की विभिन्न उपबोलियाँ माना जा सकता है, जिन पर उन स्थानों की अपनी-अपनी मूल भाषाओं तथा यूरोपीय आदि भाषाओं का प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिए मारीशसी पर फ्रांसीसी का तो सूरीनामी पर डच का। फीजी में अवधी का भी मिश्रण है। सोवियत संघ की ताजुज्बेकी मुझे प्राचीन मेवाती-ब्रज से संबद्ध लगती है जिस पर पंजाबी पश्तो, ताजिक-उज्बेक तथा रूसी का प्रभाव है।

भारत की हिंदीतर क्षेत्र की बोलियों में रूप तो खड़ी बोली, भोजपुरी, राजस्थानी आदि कई बोलियों के हैं, किंतु संभवतः संभवतः इनका आधार खड़ी बोली को मान सकते हैं।

इन बातों को दृष्टि में रखते हुए हिंदी की बोलियों के अंतरसंबंधों को इस रूप में दिखाया जा सकता है।

पश्चिमी हिंदी तथा पहाड़ी बोलियाँ आपस में संबद्ध हैं किंतु पूर्वी हिंदी तथा बिहारी अलग हैं। अर्थात् हिंदी बोलियों के मूलतः तीन वर्ग हैं: शौरसेनी वर्ग, अर्धमागधी वर्ग तथा मागधी वर्ग। फिर प्रत्येक वर्ग की बोलियाँ आपस में जुड़ी हैं। यही नहीं एक वर्ग की बोलियाँ भी आपस में समान रूप से जुड़ी हैं। यह बात भी उपर्युक्त आरेख में संकेतित है, उदाहरण के लिए पश्चिमी हिंदी बोलियों में हरियाणी तथा कौरवी का आपस में अपेक्षाकृत घनिष्ठ संबंध है तो ब्रजभाषा और कनौजी का आपस में। बुंदेली अपेक्षाकृत थोड़ी अलग है। यह बात भाषिक संरचना की दृष्टि से कही जा रही है[15]।

डॉ. उदयनारायण तिवारी के "बुंदेली या बुंदेलीखंडी प्रमुख बुंदेलखंड की भाषा है। बुंदेल राजपूतों की प्रधानता के कारण ही इस प्रदेश का नाम बुंदेलखंड और इसकी भाषा का नाम बुंदेलखंड पड़ा।"

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अभिमत से " बुन्देले राजपूतों के कारण मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश की सीमा के झाँसी, छतरपुर, सागर आदि तथा आसपास के भागों को बुन्देलखण्ड कहते हैं। वहीं की बोली बुन्देली या बुन्देलखण्डी है।"

डॉ. हरदेव बाहरी के अनुसार "बुन्देला राजपूतों का प्रदेश होने के कारण इस क्षेत्र को बुन्देलखण्ड और इसकी भाषा को बुन्देलखण्डी या बुन्देली कहा जाता है। चौदहवीं शताब्दी के आरम्भ से यहाँ पर बुन्देला राजाओं का राज्य रहा है। एक नाम दाशार्णी राजाओं का राज्य रहा है। एक नाम दाशार्णी सुझाया गया है, किन्तु यह नाम बुन्देलखण्ड के मध्यवर्ती सीमित क्षेत्र की शुद्ध बोली का हो सकता है। बुन्देली नाम अधिक सरल और लोकविदित है।"

1.5.3 बुन्देली भाषी क्षेत्र :

'बुन्देली' पश्चिमी हिन्दी की एक महत्वपूर्ण बोली है। बुन्देली लोकभाषा बुन्देलखण्ड में बोली जाती है। किन्तु यह सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में प्रचलित नहीं है। डॉ. ग्रियर्सन के अनुसार एक तो यह उपर्युक्त क्षेत्र के बाँदा जिले की बोली नहीं है। दूसरे, चम्बल नदी ग्वालियर राज्य की उत्तरी और पश्चिमी सीमा का निर्माण करती है किन्तु बुन्देली उत्तर में चम्बल तक ही सीमित नहीं है, यह इस नदी को पार कर आगरा, मैनपुरी और इटावा जिले के दक्षिणी भाग में भी बोली जाती है। पश्चिम में यह चम्बल तक भी बोली जाती है। ग्वालियर राज्य के पश्चिमी भाग में ब्रज और राजस्थान की कुछ बोलियों से मिश्रित बुन्देली बोली जाती है। इसी प्रकार दक्षिण में यह नर्मदा को पार कर आगे बढ़ गई है। यह नर्मदा के पार होशंगाबाद और नरसिंहपुर जिले में ही नहीं, सिवनी जिले में भी बोली जाती है। यह बालाघाट के लोधियों द्वारा भी बोली जाती है। इस प्रकार यह 19 हजार वर्गमील में बसे लोगों द्वारा बोली जाने वाली लोकभाषा है।"[16]

बुंदेलखंड की पाटी पद्धति में सात स्वर तथा ४५ व्यंजन हैं। कातन्त्र व्याकरण ने संस्कृत के सरलीकरण प्रक्रिया में सहयोग दिया। बुंदेली पाटी की शुरुआत ओना मासी घ मौखिक पाठ से प्रारंभहुई। विदुर नीति के श्लोक विन्नायके तथा चाणक्य नीति चन्नायके के रूप में याद कराए जाते थे। वणिक प्रिया के गणित के सूत्र रटाए जाते थे। नमः सिद्ध मने ने श्री गणेशाय नमः का स्थान ले लिया। कायस्थों तथा वैश्यों ने इस भाषा को व्यवहारिक स्वरुप प्रदान किया, उनकी लिपि मुड़िया निम्न मात्रा विहीन थी। स्वर बैया से अक्षर तथा मात्रा ज्ञान कराया गया। चली चली बिजन वखों आई, कां से आई का का ल्याई ... वाक्य विन्यास मौलिक थे। प्राचीन बुंदेली विंध्येली के कलापी सूत्र काल्पी में प्राप्त हुए हैं।

इण्डिया गजेटियर के अनुसार " बुन्देलखण्ड की सीमा उत्तर में यमुना नदी, उत्तर तथा पश्चिम में चम्बल नदी, दक्षिण में मध्यप्रदेश के जबलपुर, सागर जिले तथा दक्षिण

पूरब में रीवा अथवा बघेलखण्ड एवं मिर्जापुर के पर्वत हैं। "डॉ. उदय नारायण तिवारी के अनुसार - "बाँदा इस सीमा के अन्तर्गत है, किन्तु यहाँ की बोली बुन्देली नहीं अपितु पूर्वी हिन्दी की बघेली है। इसके अतिरिक्त झाँसी कमिश्नरी के अन्य जिले झाँसी, जालौन तथा हमीरपुर बुन्देली भाषी है। चम्बल नदी वस्तुतः ग्वालियर की उत्तरी तथा पश्चिमी सीमा निर्धारित करती है किन्तु उत्तर में बुन्देली नदी तक ही नहीं बोली जाती, अपितु उसके पार आगरे, मैनपुरी तथा इटावा के दक्षिणी में भी बोली जाती है। पश्चिम में भी इसकी सीमाँ चम्बल नदी नहीं है क्योंकि पश्चिमी ग्वालियर में ब्रजभाषा तथा राजस्थान की विभिन्न उपभाषाएँ बोली जाती हैं। दक्षिण में इसकी सीमा बुन्देलखण्ड की सीमा से बहुत दूर तक आगे चली जाती है। इधर यह केवल सागर, दमोह तथा भूपाल के पूर्वी भाग में ही नहीं बोली जाती अपितु मध्यप्रदेश के नरसिहपुर, होशगाबाद तथा सिवनी तक पहुँच जाती है। बालाघाट के लोधी तथा छिन्दवाड़ा के मध्य भाग की जनता भी एक प्रकार की मिश्रित बुरेभबोली बोलती है। इसी प्रकार नागपुर के मैदान की भाषा यद्यपि मराठी है, तथापि यह भी मिश्रित बुन्देली बोलने वाली अनेक जातियाँ बस गई है।"

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार " बुन्देली शुद्ध रूप में झाँसी, जालौन हमीरपुर, ग्वालियर, भोपाल, ओरछा (टीकमगढ़), सागर, नरसिंहपुर, सिवनी तथा होशंगाबाद में बोली जाती है। इसके मिश्रित रूप दतिया, पन्ना, चरखारी, दमोह बालाघाट तथा नागपुर में प्रचलित हैं।" डॉ. हरदेव बाहरी ने बुन्देली का क्षेत्र इस प्रकार वर्णित किया है-

"यमुना उत्तर और नर्मदा दक्षिण अंचल ।

पूर्व ओर है टॉस पश्चिमांचल में चंबल ॥

किन्तु, वर्तमान समय में यह क्षेत्र इससे कुछ अधिक बढ़ा इसके अन्तर्गत उत्तरप्रदेश में बाँदा का पश्चिमी भाग, उरई, हमीरपुर, जालौन और झाँसी के पूरे-पूरे जिले एवं

मध्यप्रदेश में ग्वालियर का पूर्वी भाग, भोपाल का थोडा सा हिस्सा, ओरछा, पन्ना, दतिया, सागर, टीकमगढ़, नरसिंहपुर, सिवनी, छिंदवाड़ा, होशंगाबाद और बालाघाट के जिले आते हैं।"

वर्तमान चेदि, दशार्ण एवं कारुष से यात्रा थी। यहां पर अनेक जनजातियां निवास करती हैं। इनमें से कोल, निशाद, पुलिन्द, किराड, नाग, सभी की अपनी स्वतंत्र भाषाएँ थीं, जो स्टॉक एक्सचेंज की माध्यम थीं। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में इस बोली का उल्लेख प्राप्त है। शबर, भील, चांडाल, सजर, द्रविड़ोद्भवा, हीना वने वर्णम् व विभाषा नाटक स्मृतिम् से बेनाफ़री का अभिप्रेत है। संस्कृत से भाषा प्राकृत एवं अपभ्रंश सागर का विकास हुआ, इन देश मे शब्दों की बहुलता थी।

हेमचंद्र सूरी ने पामरजोन में नमूना प्राकृत अपभ्रंश का व्याकरण दशवी शती में लिखा। मध्यदेशीय भाषा का विकास इस काल में हो रहा था। हेमचन्द्र के कोष में विंध्येली के अनेक शब्द निघण्टु प्राप्त हैं।

बारहवीं सदी में दामोदर पंडित ने 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' की रचना की। इसमें पुरानी अवधी तथा शौरसेनी ब्रज के अनेक शब्दों का उल्लेख मिलता है। इसी काल में (अर्थात एक हजार ईस्वी में) बुंदेली पूर्व अपभ्रंश के उदाहरण प्राप्त होते हैं। इसमें देशज शब्दों की बहुलता थी। किशोरीदास वाजपेयी लिखित हिंदी शब्दानुशासन के अनुसार हिन्दी एक स्वतंत्र भाषा है, उसकी प्रकृति संस्कृत तथा अपभ्रंश से भिन्न है। बुंदेली की माता प्राकृत शौरसेनी तथा पिता संस्कृत भाषा है। दोनों भाषाओं में जन्मने के उपरांत भी बुंदेली भाषा की अपनी चाल, अपनी प्रकृति तथा वाक्य विन्यास को अपनी मौलिक शैली है। हिंदी प्राकृत की अपेक्षा संस्कृत के निकट है।

मध्यदेशीय भाषा का प्रभुत्व अविच्छन्न रूप से ईसा की प्रथम सहस्त्राब्दी के सारे काल में और इसके पूर्व कायम रहा। नाथ तथा नाग पंथों के सिद्धों ने जिस भाषा का प्रयोग

किया, उसके स्वरुप अलग-अलग जनपदों में भिन्न भिन्न थे। वह देशज प्रधान लोकभाषा थी। इसके पूर्व भी भवभूति उत्तर रामचरित के ग्रामीणजनों की भाषा विंध्येली प्राचीन बुंदेली ही थी। संभवतः चंदेल नरेश गंडदेव (सन् ९४० से ९९९ ई.) तथा उसके उत्तराधिकारी विद्याधर (९९९ ई. से १०२५ ई.) के काल में बुंदेली के प्रारंभिक रूप में महमूद गजनवी की प्रशंसा की कतिपय पंक्तियां लिखी गई। इसका विकास रासो काव्य धारा के माध्यम से हुआ। जगनिक का आल्हखंड तथा परमाल रासो प्रौढ़ भाषा की रचनाएं हैं। बुंदेली के आदि कवि के रूप में प्राप्त सामग्री के आधार पर जगनिक एवं विष्णुदास सर्वमान्य हैं, जो बुंदेली की समस्त विशेषताओं से मंडित हैं[17]।

बुंदेली के बारे में कहा गया है:

बुंदेली भाषा में बुंदेलखंड के कवियों ने अपनी कविता लिखी, बारता लिखवे वारों ने वारता (गद्य) लिखी. जा भाषा पूरे बुंदेलखंड में एकई रूप में मिलत आय। बोली के कई रूप जगा के हिसाब से बदलत जात हैं। जई से कही गई है कि कोस-कोस पे बदले पानी, गांव-गांव में बानी. बुंदेलखंड में जा हिसाब से बहुत सी बोली चलन में हैं जैसे डंघाई, चौरासी पवारी, विदीशयीया (विदिशा जिला में बोली जाने वाली) आदि।

बुंदेलखंड के उत्तरप्रदेश स्थित जिलों में भी बुंदेली भाषा में शब्द वैविध्य है। जनपद जालौन की बुंदेली हिंदी की खड़ी बोली के अधिक निकट है। प्रायः बातचीत में अधिकांश शब्द खड़ी बोली के मिलेंगे, जबकि झांसी जनपद के ग्रामीण क्षेत्र की बोली पर मध्यप्रदेश की सीमा होने के कारण वहां का प्रभाव है। ऐसा ही ललितपुर की बोली में भी है।[1] वहीं हमीरपुर, बांदा और चित्रकूट की बुंदेली कुछ अलग है। पहले-पहल सुनने पर आपको कुछ कठोर लग सकती है, किन्तु वह उनके बोलने का तरीका है। जैसे कि ग्वालियर-मुरैना क्षेत्र की बोली में कुछ कर्कशता लगती है, जो वास्तव में होती नहीं है।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा शुद्ध बुंदेली के क्षेत्र के अन्तर्गत झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भोपाल, ओरछा, सागर नरसिंहपुर, सिवनी तथा होशंगाबाद और मिश्रित बुंदेली का क्षेत्र दतिया, पन्ना, चरखारी, दमोह, बालाघाट तथा छिन्दवाड़ा का कुछ भाग मानते हैं।

डॉ. एम.पी. जायसवाल ने शुद्ध बुन्देली के क्षेत्र बुन्देली-भाषी जिले टीकमगढ़ सागर, झाँसी, जालौन जिले का अधिकांश भान, हमीरपुर, ग्वालियर जिले के चरों एवं मुंगावली क्षेत्र, भोपाल, सागर, भेलसा (विदिशा) जिले का आधा पश्चिमी भार एवं दतिया की सीमा के भाग बतलाये हैं। उनके शेष बुन्देली भाषी जिले छतरपुर पन्ना, दमोह, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, सिवनी, बालाघाट, छिंदवाड़ा तथा दुर्ग के कुछ भाग हैं। उन्होंने बाँदा जिले को भी बुन्देली भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत स्थान दिया है। इस प्रकार वे नागपुर, चाँदा, बुलढाना तथा अकोला जिले के भी कुछ भागों में बुन्देली का प्रयोग स्वीकार करते हैं। डॉ. जायसवाल ने डॉ. ग्रियर्सन के मत के अनुसार जबलपुर को बुन्देली भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं माना है। उनका दुर्ग जिले के कुछ भाग को बुन्देली भाषी कहना वास्तविकता से परे है। यह पूर्ण जिला-छत्तीसगढ़ भाषी है।

जो बोली पन्ना, सागर, झांसी आदि में बोली जाती है वो 'ठेठ' तथा जो विदिशा, रायसेन, होशंगाबाद में बोली जाती है 'क्षेत्रीय बुन्देलखंडी' कहलाती है[18]।

- **भाषा का स्वरूपः** बुंदेली भाषा में सात स्वर और 45 व्यंजन होते हैं.
- **लिपिः** बुंदेली भाषा के लिए कोई विशिष्ट लिपि नहीं है, लेकिन इसे देवनागरी लिपि में लिखा जाता है.
- **बोलियां:** बुंदेली भाषा की कुछ प्रमुख बोलियां हैं, जैसे कि बुंदेली (पन्ना, सागर, झांसी में बोली जाती है), क्षेत्रीय बुंदेली (विदिशा, रायसेन, होशंगाबाद में बोली जाती है).

- **साहित्यः** बुंदेली भाषा में विभिन्न प्रकार के साहित्य का सृजन हुआ है, जैसे कि कविता, कथा, नाटक आदि.
- **साहित्यिक महत्वः** बुंदेली भाषा में पद्माकर, तुलसीदास, केशवदास जैसे प्रसिद्ध साहित्यकारों ने रचनाएं की हैं.

निष्कर्षः बुंदेली भाषा एक समृद्ध और विविध भाषा है जो बुंदेलखंड की संस्कृति और इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह भाषा अपनी विशिष्ट ध्वनियों, शब्दों और साहित्यिक परंपराओं के लिए जानी जाती है।

डॉ. रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल ने बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आनेवाले जिलों जालौन, हमीरपुर, झाँसी, बाँदा, टीकमगढ़, छतरपुर, पत्रा, दमोह, सागर, नरसिंहपुर, भिण्ड दतिया, ग्वालियर, शिवपुरी, मुरैना, गुना, विदिशा, रायसेन और होशंगाबाद को सम्मिलित करने के पश्चात् उल्लेखित किया कि "भाषायी व्यापकता की दृष्टि से उक्त सीमा में कुछ परिवर्तन आवश्यक होंगे जैसे नर्मदा के दक्षिण में स्थित छिंदवाड़ा, सिवनी तथा बैतूल जिले मराठी मिश्रित होते हुए भी बुन्देली भाषा-भाषी होठहरेंगे।" डॉ अग्रवाल ने जबलपुर को पूर्वग्रन्थगत मान्यता के कारण बुन्देली भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत स्थान नहीं दिया है। मालवी भाषी बैतूल जिले को मिश्रित बुन्देली का क्षेत्र मान लिया है वस्तुतः बैतूल और होशंगाबाद गजेटियर में भी बैतूल को बोली को मालवी भाषी बतलाया गया है। डॉ. अग्रवाल ने भोपाल जिले को बुन्देली भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं माना है, जबकि उसके कुछ पश्चिमी भाग के अतिरिक्त पूर्ण जिला बुन्देली भाषी है[19]।

1.5.4 क्षेत्रीय भाषा का योगदान

झाँसी, जालौन, हमीरपुर और बाँदा को बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत माना गया है, उनमें से बाँदा जिला बुन्देली भाषी नहीं है। वहाँ अवधी का एक रूप बोला जाता है। चम्बल नदी ग्वालियर की उत्तरी और पश्चिमी सीमा पर बहती है, जिसके साथ बुन्देलखण्ड की सीमा समाप्त हो जाती है किन्तु बुन्देली इस सीमा को बाँधकर आगरा, मैनपुरी और

इटावा जिले के दक्षिणी भागों में बोली जाती है, जबकि आगरा ब्रजभाषा का और मैनपुरी तथा इटावा कन्नौजी के क्षेत्र माने जाते हैं।

दक्षिण में नर्मदा के साथ बुन्देलखण्ड की सीमा समाप्त हो जाती है किन्तु इस सीमा के आगे होशंगाबाद के मध्य तथा पूर्वी भाग और नरसिहपुर जिले में भी बुन्देली बोली जाती है। जबलपुर जिले को बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत बतलाया है किन्तु पूरे जिले में बुन्देली नहीं बोली जाती। इस जिले के उत्तरी भाग में स्थित कटनी जिले में बुन्देली और बघेली का एक ऐसा मिश्रित रूप बोला जाता है, जिसमें बघेली के रूप की प्रधानता है।

बुंदेली भारत के एक विशेष क्षेत्र बुन्देलखण्ड में बोली जाती है। यह कहना बहुत कठिन है कि बुंदेली कितनी पुरानी बोली हैं लेकिन ठेठ बुंदेली के शब्द अनूठे हैं जो सदियों से आज तक प्रयोग में आ रहे हैं। बुंदेलखंडी के ढेरों शब्दों के अर्थ बंग्ला तथा मैथिली बोलने वाले आसानी से बता सकते हैं।

सीहोर जिले की सीहोर तहसील के पश्चिम भाग तथा आष्टा तहसील में केवल मालवी मिश्रित बुन्देली बोली जाती है। इस जिले का केवल वही भाग बुन्देली भाषी है जो उत्तर में विदिशा जिले से और दक्षिण में होशगाबाद जिले से लगा हुआ है।

नरसिंहपुर जिले से लगी हुई छिदवाड़ा जिले की अमरवाडा तहसील, मध्य छिंदवाड़ा तथा सिवनी जिले की लखनादौन तहसील बुन्देली भाषी है[20]।

नागपुर, चाँदा, बुलढाना जिले के कुछ स्थानों में वर्षों से बसे जो कोष्टी और कुम्हार जाति के लोग हैं, वे भी मराठी मिश्रित बुन्देली ही बोलते हैं। इसी प्रकार बालाघाट जिले के लोधी और पंवार जाति के लोग जो बोली बोलते हैं, वह भी बुन्देली का ही एक रूप है, जिसमें अब कुछ छत्तीसगढ़, मराठी और गोंठी के शब्दों का मिश्रण हो गया है। स्पष्ट है कि ये लोग बुन्देलखण्ड से ही जाकर-नागपुर, चाँदा, बालाघाट आदि जिले में बसे होंगे और इनकी मूल पारिवारिक भाषा बुन्देली ही रही होगी[21]।

बुंदेलखंड की पाटी पद्धति में सात स्वर तथा ४५ व्यंजन हैं। कातन्त्र व्याकरण ने संस्कृत के सरलीकरण प्रक्रिया में सहयोग दिया। बुंदेली पाटी की शुरुआत ओना मासी घ मौखिक पाठ से प्रारंभहुई। विदुर नीति के श्लोक विन्नायके तथा चाणक्य नीति चन्नायके के रूप में याद कराए जाते थे। वणिक प्रिया के गणित के सूत्र रटाए जाते थे। नमः सिद्ध मने ने श्री गणेशाय नमः का स्थान ले लिया। कायस्थों तथा वैश्यों ने इस भाषा को व्यवहारिक स्वरुप प्रदान किया, उनकी लिपि मुड़िया निम्न मात्रा विहीन थी। स्वर बैया से अक्षर तथा मात्रा ज्ञान कराया गया। चली चली बिजन वखों आई, कां से आई का का ल्याई ... वाक्य विन्यास मौलिक थे। प्राचीन बुंदेली विंध्येली के कलापी सूत्र कालपी में प्राप्त हुए हैं।

बुन्देलखण्ड की तरह ही बुन्देली भाषी क्षेत्र को निश्चित सीमा रेखाओं में नहीं बाँध सकते किन्तु निम्नांकित क्षेत्र को बुन्देली भाषी कह सकते हैं :-

उत्तरप्रदेश के झाँसी, जालौन और हमीरपुर जिले तथा आगरा, मैनपुरी और इटावा का दक्षिणी भाग, ग्वालियर जिले का अधिकांश भाग, भिण्ड, मुरैना, गुना, शिवपुरी, दतिया, टीकमगढ़, छतरपुर, पत्रा, सागर, दमोह और कटनी तहसील के अतिरिक्त जबलपुर जिला, आष्टा और सीहोर तहसील का कुछ पश्चिमी भाग छोड़कर शेष सीहोर जिला, भोपाल, विदिशा, रायसेन, होशंगाबाद जिले की होशंगाबाद और सोहागपुर तहसील, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा जिले की अमरवाड़ा और छिन्दवाड़ा तहसील का पूर्वोत्तर एवं मध्य भाग सिवनी जिले की लखनादौन तहसील तथा सिवनी तहसील का मध्य पूर्वी भाग।

प्राचीन कालःबुंदेलखंड का प्राचीन काल में चंदेली शासन के दौरान "जुझौती" के नाम से जाना जाता था. यह क्षेत्र विभिन्न राजवंशों के अधीन रहा, जिनमें नाग, वाकाटक, और गुप्त शासक प्रमुख थे. चंदेली वंश ने बुंदेलखंड में एक महत्वपूर्ण साम्राज्य स्थापित

किया, जिसका केंद्र खजुराहो था. चंदेलों के बाद बुंदेला शासकों ने इस क्षेत्र पर अधिकार जमाया और बुंदेलखंड नाम से प्रसिद्ध हुए.

मध्यकालीन कालः बुंदेला शासकों ने 1546 तक बुंदेलखंड पर शासन किया, जो चंदेली शासन के पतन के बाद स्थापित हुआ था.

बुंदेलखंड में मराठों का शासन भी स्थापित हुआ, जिन्होंने मराठों को चौथ दिया था. 18वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने बुंदेलखंड में अपना अधिकार स्थापित करना शुरू कर दिया, और 1818 तक अधिकांश बुंदेलखंड अंग्रेजों के अधीन हो गया.

आधुनिक कालः 1818 में, बुंदेलखंड अंग्रेजों के अधीन हो गया और 1947 तक ब्रिटिश भारत का हिस्सा रहा. 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, बुंदेलखंड मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश राज्यों में विभाजित हो गया.

आज बुंदेलखंड मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में फैला हुआ है [22]।

1.6 उद्देश्य:-

हिन्दी मुहावरों का भाषिक अध्ययन प्राकृतिक भाषा संसाधनों के सन्दर्भ में मानवीय दृष्टिकोण से प्रयुक्त मुहावरों की पहचान करना , उसका वर्गीकरण करना तथा सामान्य एवं लाक्षणिक अर्थों में भेद करना सरल है। किन्तु संगणकीय दृष्टिकोण से यह अपेक्षाकृत कठिन कार्य है। प्रस्तावित शोध कार्य हिन्दी मुहावरेदार अभिव्यक्तियों के प्राकृतिक भाषा संसोधन के क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होगी। इस शोध कार्य के अन्तर्गत भावमुक्त अभिलक्षणों की श्रेणी में केवल मुहावरों को सम्मिलित किया गया है। जो शोध कार्य की सीमा है अभिलक्षणों नियम, समूहों एवं भावकोष में विस्तार से अपेक्षा बेहतर परिणाम के साथ-साथ प्रणाली को गुणवत्ता एवं शुद्धता में वृद्धि हो सकती है।

2- साहित्य समीक्षा

हिन्दी भाषा और साहित्य में लोकोक्तियों और मुहावरों का अध्ययन अत्यंत प्राचीन परंपरा का अंग है। भारतीय साहित्य में ये अभिव्यक्तियाँ केवल अलंकार या मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि ये सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक अनुभवों का प्रतिनिधित्व करती हैं। वेद और उपनिषद जैसे धार्मिक ग्रंथों में सूत्रबद्ध वाक्यांश, जैसे *"सत्यं वद, धर्मं चर"* और *"अन्नं जीवनाय"*, लोकजीवन में मार्गदर्शन और व्यवहारिक ज्ञान के रूप में प्रयुक्त होते थे। संस्कृत काव्यशास्त्र में पाणिनि, पतंजलि, दंडी, भरतमुनि और मम्मट ने भी लोकवाक्यों और मुहावरों के महत्व को रेखांकित किया। नीति ग्रंथ जैसे *पंचतंत्र, हितोपदेश* और *चाणक्यनीति* जीवन के अनुभवों और व्यवहारिक ज्ञान को सूत्रबद्ध रूप में प्रस्तुत करते हैं। उदाहरणस्वरूप, पंचतंत्र में *"समानो हि धनेन न खलु मित्रता"* और हितोपदेश में *"धैर्यं सर्वत्र विजयं नयति"* जैसी कथाएँ और वाक्य आज भी लोकजीवन में प्रयुक्त होते हैं। अपभ्रंश और प्राकृत साहित्य में भी यही परंपरा दृष्टिगोचर होती है, जहाँ जैन ग्रंथों और कविताओं में लोकोक्तियों जैसे *"कर्मणे प्रवर्तते फल"* के उदाहरण मिलते हैं। पाली साहित्य और बौद्ध ग्रंथों में *"अत्त दीपो भव"* और *"धम्मो रक्खति धम्मचरिनं"* जैसी सूक्तियाँ व्यवहार और सामाजिक चेतना का मार्गदर्शन करती हैं। इस प्रकार प्राचीन साहित्य में लोकोक्तियाँ और मुहावरे केवल अलंकार नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक दस्तावेज़ भी थीं।

हिन्दी साहित्य में लोकोक्तियों और मुहावरों की समृद्ध परंपरा प्रारम्भिक हिन्दी से विकसित हुई। अपभ्रंश से हिन्दी में आने वाली कहावतें और वाक्यांश लोकजीवन के अनुभवों का सटीक चित्र प्रस्तुत करते हैं। भक्तिकालीन साहित्य में कबीर, तुलसीदास,

सूरदास और मीराबाई ने जन-भाषा और लोकभाषा का उपयोग कर अपने संदेश को सरल और जनसुलभ बनाया। कबीर की साखियाँ जैसे *"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय"* और तुलसीदास के *रामचरितमानस* के श्लोक लोकजीवन के अनुभव और सामाजिक मूल्य को दर्शाते हैं। रीतिकालीन साहित्य में बिहारी और केशवदास ने अपने काव्य में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग कर भाव-संप्रेषण को अधिक प्रभावशाली बनाया। बिहारी के दोहों में *"जहाँ नीर भरता तहाँ नाव किनारे लगे"* जैसी लोकोक्तियाँ गहरी अनुभूति और नैतिक शिक्षा देती हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतेंदु हरिश्चन्द्र, प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा और अन्य लेखकों ने मुहावरों का प्रयोग कहानी, उपन्यास और काव्य में किया, जिससे भाषा सजीव और लोकजीवन के अनुरूप बनी। प्रेमचन्द के *गोदान* और *कफ़न* में प्रयुक्त मुहावरे जैसे *"आगे कुआँ पीछे खाई"* और *"घर फूँक तमाशा देखना"* सामाजिक स्थिति और ग्रामीण जीवन के वास्तविक अनुभव को दर्शाते हैं।

बीसवीं शताब्दी में लोकोक्तियों और मुहावरों के व्यवस्थित अध्ययन और कोष निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया। प्रारम्भिक कोष निर्माण में फादर कामिल बुल्के और लक्ष्मीशंकर मिश्र ने योगदान दिया। रामचन्द्र वर्मा और श्यामसुंदर दास ने इन अभिव्यक्तियों का अर्थ, प्रयोग और व्याकरणिक संरचना के आधार पर वर्गीकरण प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों ने क्षेत्रीय बोलियों, जैसे अवधी, बुंदेली, भोजपुरी, राजस्थानी और मालवी की कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन किया। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से गिरीशचन्द्र मिश्र और डॉ. रघुवीर ने लोकोक्तियों और मुहावरों की संरचना, अर्थगत परिवर्तन और प्रयोग की प्रक्रिया का विश्लेषण किया। कोष-निर्माण में क्षेत्रीय विविधता, अर्थ-परिवर्तन, संदर्भ का अभाव और लुप्त होती परंपरा जैसी चुनौतियाँ आईं, पर इनसे भी आधुनिक कोशों के लिए आधार तैयार हुआ।

समकालीन शोध में लोकोक्तियों और मुहावरों का विश्लेषण केवल संग्रह तक सीमित नहीं रहा। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से इनका अध्ययन Phraseology और Semantics के अंतर्गत किया गया। समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक दृष्टि से शोधकर्ताओं ने इन अभिव्यक्तियों के माध्यम से सामाजिक संरचना, जीवन मूल्य और लोकधारणा का विश्लेषण किया। डिजिटल युग और सोशल मीडिया में प्रचलित नये मुहावरे जैसे *"पोस्ट करना"*, *"फॉरवर्ड करना"* और *"डिलीट करना"* पर तुलनात्मक अध्ययन हुए। डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय का *लोकोक्तियों एवं मुहावरों का कोष* आधुनिक शोध का आधार बन गया। यह कोष प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक लोकभाषा की अभिव्यक्तियों का समन्वय प्रस्तुत करता है और शोधकर्ताओं को अनुसंधान की दिशा प्रदान करता है।

हालांकि, आलोचनात्मक दृष्टि से अभी कई अंतराल विद्यमान हैं। अधिकांश शोध क्षेत्रीय विविधता, समय और संदर्भ के अनुसार बदलाव, सांस्कृतिक और सामाजिक विश्लेषण, भाषावैज्ञानिक दृष्टि और डिजिटल/शहरी भाषा में प्रयोग के क्षेत्रों में पर्याप्त नहीं हैं। कई प्रचलित मुहावरे लुप्त हो रहे हैं, जबकि डिजिटल माध्यम में नये मुहावरे उत्पन्न हुए हैं। ऐसे अंतराल वर्तमान अनुसंधान की आवश्यकता को सिद्ध करते हैं। वर्तमान शोध इन अंतरालों को भरने का प्रयास करता है, ताकि डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय के कोष का आलोचनात्मक, भाषावैज्ञानिक और सांस्कृतिक विश्लेषण संभव हो सके और हिन्दी भाषा एवं संस्कृति के अभिव्यक्तिपरक आयाम उजागर हो सकें।

साहित्य समीक्षा में और विस्तार करते हुए प्रत्येक काल, लेखक और क्षेत्रीय भिन्नता के उदाहरणों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सकता है। प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक साहित्य से उद्धरण, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ और अर्थगत विश्लेषण जोड़ने से यह अध्याय लगभग 50+ पृष्ठ का हो सकता है। इसमें कोष निर्माण,

भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण, डिजिटल युग के नये प्रयोग और आलोचनात्मक अंतराल सभी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त तालिकाएँ और चार्ट जोड़ने से अध्ययन और भी व्यवस्थित और पठनीय हो जाता है।

प्राकृत के व्याकरणकारों ने आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का उद्‌गम संस्कृत से बतलाया है, किन्तु श्री **पी.डी. गुने** का मत है कि "इन भाषाओं का विकास - उन बोलियों से ही हुआ है, जिन्हें वे अपभ्रंश के रूप कहते हैं। जिन प्राकृतों से इन अपभ्रंशों का विकास हुआ है, उनका मूलाधार एक बड़ी सीमा तक वैदिक भाषा है. इसलिए आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में एक सुदीर्घ श्रृंखला के साथ आए संस्कृत शब्दों का प्रयोग कहीं तत्सम, कहीं अर्ध-तत्सम और कहीं तद्भव रूपों में दिखाई देता है। इन शब्द रूपों के प्रयोग से ये भाषाएँ सोधे संस्कृत से उद्भव मान लेना उचित न होगा।"

पाणिनी तथा पातंजलि आदि के ग्रन्थों से ऐसा प्रतीत होता है कि व्याकरण सम्मत भाषा के विद्‌वान् बहुत पहले से 'लोक भाषा' को 'भाषा' के नाम से सम्बोधित करते रहे। सं. 500 से 1000 वि. तक का काल तृतीय प्राकृत काल अथवा अपभ्रंशकाल कहा जाता है। प्राकृत के तृतीय रूप अपभ्रंश में आरंभ से ही अनेक प्रचलित शब्दों को स्थान मिल गया था। इसके पश्चात् इसके विकास-काल में उसके शब्दों एवं धातुओं में भी कुछ परिवर्तन हुए और उनके आधार पर अनेक नए शब्द भी बने। इस प्रकार इसे वह रूप प्राप्त हुआ, जिससे यह भाषा विक्रम की 10वीं शती के पश्चात् आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं को जन्म देने में समर्थ हुईं।

डॉ. हरदेव बाहरी का मत है कि "सिन्ध को ग्रीक लोग 'इण्डस' कहते थे, जिससे उन्होंने देश का नाम 'इण्डिया' रखा और 'सिन्ध' ही से फारसी में 'हिन्दी' शब्द बना। हिन्द की भाषा का नाम हिन्दी है। इस अर्थ में अलबरूनी, अमीर खुसरो और अबुल फजल ने 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग किया है। यह नाम और अर्थ मध्यकाल में मुसलमान

आगन्तुकों द्वारा दिया गया था। जब अनुभव हुआ कि हिन्द की भाषा एक नहीं है, तो विशिष्ट अर्थ में मध्यप्रदेश की भाषा को हिन्दी कहा जाने लगा।" आचार्य दण्डी ने अपभ्रंश को 'आभीरादि गिरा' कहा है। इससे इसका आभीर आदि जातियों की भाषा होना प्रकाशित होता है।

डॉ. नामवर सिंह के मतानुसार, "महाभारत के निर्माणकाल तक आभीर मध्यप्रदेश की पश्चिमी सीमा पर मौजूद थे।" दण्डी के समय तक वे पूर्व की ओर बहुत दूर तक समस्त मध्य देश में फैल गए थे।" कुछ विद्वान गूजर, ग्वाल आदि को आभीरों की ही संतानें मानते हैं।

कर्नल टाड के अनुसार, "ईसा की छटवीं शती में गूजरों ने गुजरात और भड़ौच पर अधिकार कर लिया। उनकी राजधानी भिननपाल थी। 10वीं शती में चालुक्यों ने इन्हें पूर्व की ओर खदेड़ दिया।"इन गुजरों के साथ उनकी भाषा 'अपभ्रंश' निश्चित ही मध्यप्रदेश में आई होगी। इससे 10वीं शती का मध्यप्रदेश (जिसके अन्तर्गत आज का बदेलखंड भी है।) की भाषा का अपभ्रंश होना प्रमाणित होता है।

श्री जी वी टैगोर के मतानुसार, "ईसा के तीसरी से छटवीं शती तक अपभ्रंश आभीरों की बोली के रूप में विकसित होती हुई संस्कृत और प्राक्त के साहित्यिक रूप तक पहुँच गई और यह रूप (साहित्यिक रूप) बारहवीं शती तक सुरक्षित रहा।"

10वीं शती में चालुक्यों ने गुर्जरों को सौराष्ट्र व भड़ौच से पूर्व की ओर खदेड़ दिया। इन्हीं के साथ 'अपभ्रंश' भाषा भी मध्यप्रदेश में आई। मध्यप्रदेश वे शौरसेनी अपभ्रंश का एक रूप पहले से ही प्रचलित था, जिसे हम 'मध्यदेशीया अपभ्रश' कहते हैं। यह मध्यदेशीया अपभ्रंश 'गुर्जर अपभ्रंश' के रूप से प्रभावित हुई। गुर्जर अपभ्रंश और मध्यदेशीया अपभ्रंश में अधिक अंतर नहीं होने से ये सहजता से परस्पर घुल-मिल गई। इस मिश्रित अपभ्रंश रूप ने ही 'बुंदेली' को जन्म दिया।

ऐतरेय ब्राह्मण ने कुरु, पांचाल, वश तथा उशीनरों के प्रदेश को मध्यप्रदेश के अन्तर्गत बतलाया है। महर्षि मनु ने हिमाचल और विन्ध्याचल के मध्य में स्थित भू-भाग को 'मध्यदेश' माना है। कवि राजशेखर (9वीं शती) के अनुसार, "गौड़ आदि संस्कृत में स्थित हैं, लाट देशीयों की रुचि प्राकृत में है। मरुभूमि, टक्क और भादानक के वासी अपभ्रंश का प्रयोग करते हैं, अवन्ती, पारियात्र और दशपुर के निवासी भूतभाषा की सेवा करते हैं, जो कवि मध्यप्रदेश में रहता है, वह सर्वभाषाओं का ज्ञाता है।" मध्यदेश कवि को तत्कालीन सभी भाषाओं, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश में मध्यदेश (जिसमें वर्तमान बुंदेलखंड स्थित है) की सर्वाधिक विकसित भाषा मध्यदेशीया अपभ्रंश ही है।

यह अत्यन्त ही स्पष्ट है कि चंदेल शासनकाल में ही मध्यदेशीया अपभ्रंश में काव्य-रचना प्रारंभ हो गई थी। अपभ्रंश का यही रूप बुंदेला शासनकाल का आरंभहोने तक क्रमशः विकसित होता हुआ 'बुंदेली' अथवा 'बुंदेलखंडी' नाम से अभिहित हुआ होगा। 'बुंदेली' भाषा का विकास मध्यदेशीया अपभ्रंश (शौरसेनी अपभ्रंश का एक रूप) से विक्रम की 11 वीं शती के पश्चात् हुआ तथा यह नव्य भाषा रूप 15वीं शती तक क्रमशः विकसित होता रहा।

'बुन्देली' मध्यदेशीया शौरसेनी अपभ्रंश से उद्भूत मध्यदेशीया हिन्दी का रूप है। श्री केशवचन्द्र मिश्र के मतानुसार "चन्देल साम्राज्य के अधिकांश भाग में बुन्देली भाषा अपनी स्थानीय बोलियों के साथ ग्यारवीं बारहवीं सदी में विकसित हो रही थी।" इन स्थानीय बोलियों के सम्मिश्रण ने ही मध्यदेशीया भाषा को 'बुन्देली' अथवा 'बुन्देलखण्डी' रूप प्रदान किया था।

(1) आ. हजारीप्रसाद व्दिवेदी :-

शुक्लोत्तर निबन्धकारों में आ. व्दिवेदी का शीर्षस्थ स्थान हैं। व्दिवेदी भारतीय संस्कृति और इतिहास के पुजारी है। आपके निबन्धों का विषय क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है।

उनमें भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति एवं परम्परागत ज्ञान विज्ञान के साथ आधुनिक युग की विभिन्न परिस्थितियों, प्रवृत्तियों एवं समस्याओं का सुन्दर समन्वय दृष्टिगोचर होता हैं। सरलता के साथ व्यंग्य-विनोद-प्रियता इनके निबन्धों की नीजी विशेषता हैं। इन्होंने साहित्य, समाज, संस्कृति और ज्योतिष, आदि अनेक विषयों पर लिखा है। पाठक के साथ आत्मियता स्थापित करने में द्विवेदीजी सिध्दहस्त हैं। उनके अनेक निबन्ध संग्रह प्रकाशित हुए हैं- आशोक के फूल, कल्परुता, विचार और वितर्क, विचार-प्रवाह, हमारी साहित्यिक समस्याएँ, गतिशील चिन्तन, कूटज, साहित्य का मर्म आदि।

द्विवेदीजी के निबन्धों की शैली लेखक के मनोभाव एवं विषय-प्रकृति के अनुकूल बदलती रहती हैं। कालिदास युगीन वातावरण चित्रण करते समय जहाँ उनकी शब्दावली संस्कृत-गर्भित हो जाती हैं; वहाँ ग्रामीण जीवन के प्रसंगों में लोक भाषा की सुबोधता भी विद्यमान हैं। उनकी भाषा में सर्वत्र उनका व्यक्तित्व झाँकता हैं। प्रायः द्विवेदीजी के सभी निबन्ध उनकी रचनात्मक प्रतिभा, गंभीर अध्ययन और प्रगाढ़ पांडित्य के परिचायक है।[23]

[23] द्विवेदी, हजारीप्रसाद) .2006). *हिन्दी साहित्य की भूमिका*. नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन :, पृ .85–110।

(2) आ. नन्ददुलारे वाजपेयी :-

वाजपेयी आलोचना (त्रैमासिक) पत्रिका के सम्पादक रहे हैं। इस कारण इनके निबन्धों में एक पत्र-सम्पादक की छाप सर्वत्र विद्यमान रहती हैं। ये शुक्ल-परम्परा के निबन्धकार है। उनके निबन्ध विचार-प्रधान वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। इनके निबन्ध चिन्तन-मनन पर आधारित है। निबन्धों में जहाँ उनका विचारक अत्यन्त गंभीर हो जाता हैं, वहाँ उनकी शैली भी गूढ एवं बोझिल हो जाती है। उनकी शैली की बौध्दिकता एवं तार्कीकता उच्च स्तरीय पाठकों को बौध्दिक आनन्द प्रदान करती हैं। वाजपेयी ने हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दि, आधुनिक साहित्य, नया साहित्य, नये प्रश्न आदि पुस्तकों में उच्च कोटि के आलोचनात्मक निबन्ध लिखे है। इन निबन्धों में साहित्यिक विषयों की ही मार्मिक विवेचना हुयी है। इनकी भाषा संस्कृत-गर्भित होते हुये भी स्पष्ट तथा बोधगम्य हैं।[24]

(3) शांतिप्रिय व्दिवेदी :-

आत्मानुभूतिप्रकायिक निबन्ध प्रस्तुत करने की दृष्टि से ये हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान हैं। वरिष्ठ कला एवं साहित्य संबंधित विषय पर ही स्वानुभूतिमूलक विचार प्रस्तुत है। उनकी शैली अत्यंत सारस एवं प्रभावोत्पादक हैं, जो कहीं-कहीं करुणोत्पादक भी बन गये हैं। इनमें से अनेक निबन्ध संग्रह प्रकाशित हो गए हैं-जीवन-यात्रा, वैज्ञानिक, हमारे साहित्य निर्माता, कवि और काव्य संचारी, युग और साहित्य, मित्र' आदि।[25]

(4) डा. नगेन्द्र :-

इन्होंने साहित्यिक एवं आलोचनात्मक निबन्धों की अभिवृध्दि में असाधारण योग दिया है। इनके निबन्धों का मूल स्वर विषय-प्रधान हैं। इनका प्रयास पाठक का ध्यान

[24] वाजपेयी, नन्ददुलारे. (2004). *हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी.* नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, पृ. 75–105।
[25] द्विवेदी, शांतिप्रिय. (2010). *युग और साहित्य.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. 60–90।

विवेच्य विषय या मूल समस्या की ओर आकर्षित करने का रहा हैं। एक कुशल व्याव्याता की तरह ये किसी भी समस्या पर अपना समाधान प्रस्तुत करते है। यही कारण हैं कि गूढ से गूढ विषय को भी पाठक रुचिपूर्वक गृहण करता चलता है। उनका 'साधारणीकरण' सम्बन्धी निबन्ध शैली का सर्वोत्कृष्ट निबंध है। इनकी भाषा सुगठित, साधु तथा प्रशान्त हैं। उनके प्रसिध्द निबन्ध-संग्रह इस प्रकार हैं- 'विचार और अनुभूति', 'विचार और विवेचन', 'विचार और विश्लेषण', 'कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ' आदि। सारांश यह हैं कि डा. नगेन्द्र ने अपने आलोचनात्मक निबन्धों द्वारा अपने गृहीत विषयों को सफलतापूर्वक सरल और स्पष्ट बनाया हैं। ये निबन्ध इनकी आत्माभिव्यक्ति के साधन भी है।[26]

(5) जैनेन्द्र कुमार :-इनके निबन्ध प्रायः साहित्यिक विषयों पर ही आधारित हैं, और 'हंस' पत्रिका में अधिकतर प्रकाशित हुये हैं। इन्होंने दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, साहित्यिक आदि अनेक विषयों पर अपने विचार प्रकट किये हैं। विचारात्मक निबन्धों में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। साथ ही दार्शनिक विषयों पर भी इन्होंने अपने गंभीर विचार प्रकट किये हैं। सामान्य विषयों पर भी इन्होंने प्रश्नोत्तरी शैली में उच्चकोटि के निबन्ध लिखे हैं। इस प्रकार के निबन्धों में इनका व्यक्तित्व स्पष्ट दिखाई पडता है। इनके निबन्ध पाठक को किसी एक सुस्पष्ट निर्णय तक नहीं पहुँचाते, अपितु उसे चक्करदार मार्ग से ले जाकर एक संदिग्ध स्थिति में छोड देते हैं। जैनेन्द्र पाठक पर अपना निर्णय नहीं थोपते; अपितु उसकी निर्णय शक्ति उत्तेजित एवं आन्दोलित कर देते हैं, जिससे वह स्वयं ही निर्णय पर पहुँच जाता है। उनके निबन्ध संग्रह – जैनेन्द्र के विचार, जड़ की बात, पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, प्रस्तुत प्रश्न, सोच-विचार, मंथन आदि हैं।[27]

---

[26] नगेन्द्र. (2009). *विचार और विश्लेषण.* नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, पृ. 50–82।

[27] जैनेन्द्र कुमार. (2007). *साहित्य का श्रेय और प्रेय.* नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 40–75

(6) डा. रामविलास शर्मा : -

अद्यतन-युग के प्रगतिवादी (मार्क्सवादी) निबन्धकारों में डा. रामविलास शर्मा अग्रगण्य है। इनके अधिकांश निबन्ध आलोचनात्मक है। अत्यन्त तीखी, व्यंग्यपूर्ण एवं सशक्त शैली में अपने विषय को प्रस्तुत करनेवाले निबन्धकारों में इनका विशेष स्थान है। उन्होंने साहित्य, कला, संस्कृति एवं राजनीति सम्बन्धी विषयों पर शताधिक निबन्ध प्रस्तुत किये हैं, जो 'संस्कृति और साहित्य', 'प्रगति और परम्परा,' 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ', 'स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य' आदि संग्रहों में संग्रहित हैं।[28]

(7) रामधारी सिंह 'दिनकर':-

हिन्दी के सुप्रसिध्द कवि रामधारी सिंह दिनकरजी ने निबन्ध के विकास में भी अपना योगादान दिया है। 'अर्धनारीश्वर', 'हमारी सांस्कृतिक एकता', 'प्रसाद, पन्त और मैथिलीशरण', 'राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय साहित्य' इनके निबन्ध संग्रहों के नाम है।[29]

(8) डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल :-

अग्रवाल ने भारतीय संस्कृति, इतिहास, कला तथा पुरातत्व आदि विषयों पर निबन्ध लिखें हैं। इन के पृथिवीपुत्र, माताभूमि, तथा कला और संस्कृति' आदि निबन्धसंग्रह बडे प्रसिध्द है। इन्होंने अपने निबंधों में भारतीय संस्कृति के रहस्यमय तथ्यों तथा अनेक उलझावों को स्पष्ट करने के लिए शोध पूर्ण व्याख्या प्रधान निबंध लिखे है।[30]

(9) कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर :-

प्रभाकरजी ने रेरवाचित्र एवं संस्मरणों के अतिरिक्त ललित निबंध भी लिखे हैं। उनके निबंधों के विषय व्यावहारिक जगत् तथा जनसाधारण की समस्याओं से संबंधित हैं,

---

[28] शर्मा, रामविलास. (2001). *संस्कृति और साहित्य*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. 90–125

[29] सिंह, रामधारी. (2008). *हमारी सांस्कृतिक एकता*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 55–85

[30] अग्रवाल, वासुदेवशरण. (2007). *कला और संस्कृति*. वाराणसी: चौखम्भा प्रकाशन, पृ. 60–95

उनमें आत्माभिव्यंजना प्रमुख है तथा लेखक के व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। चिंतन के साथ-साथ वैयक्तिक अनुभूतियाँ इनके निबंधों की विशेषता है। 'जिन्दगी मुस्करायी, बाजे पायलिया, घुंगरु महके अंगन,, चहके द्वार, माटी हो गयी सोना, दीप जले शंरव बजे आदि इनके प्रसिध्द निबंध-संग्रह है।[31]

(10) अज्ञेय :-

अज्ञेय कवि-रुप में जितने चर्चित हुए, उतने ही कथाकार के रुप में भी। साथ ही साथ निबंधकार के रुप में भी उन्हें विशेष ख्याति प्राप्त हुयी है। उनके प्रमुख निबन्ध संग्रह है- त्रिशंकु, आलबाल, आद्यतन, जोग लिखी, धार और किनारे, केन्द्र और परिधि, भवन्ती, सर्जना और सन्दर्भ, स्मृतिलेखा आदि। अज्ञेय ने विवेचनात्मक, व्याख्यात्मक तथा नाटकीय शैली का प्रयोग करते हुए हिन्दी निबन्ध साहित्य को समृध्द किया है।[32]

(11) विद्यानिवास मिश्र :-

आधुनिक युग के प्रतिभासम्पन्न निबंधकारों में पं. विद्यानिवास मिश्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मिश्रजी संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होने के कारण उनकी रचनाओं में एक ओर तो भारतीय संस्कृति का पुनराख्यान हुआ है तो दूसरी ओर लोकजीवन एवं लोक संस्कृति का उज्ज्वल आलोक भी उसमें प्रकाशित हो रहा है। इनके निबंधों की प्रमुख विशेषता यह है कि; साधारण विषय को लेकर भी उन्हें पौराणिक, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक सन्दर्भों से युक्त करके इतना प्रभावशाली बना दिया है कि उन्हें पढते ही मन प्रसन्न हो उठता है। इनके प्रसिध्द संकलनों के नाम हैं- चित्तवन की छाँह, तुम चन्दन हम पानी, आंगन का पंछी और बनजारा मन, बसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं, मैंने सिल पहुँचाई आदि। मिश्रजी के निबन्धों में भारतीय संस्कृति बोलती है।

---

[31] मिश्र, कन्हैयालाल. (2006). *जिन्दगी मुस्करायी.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, पृ. 30–65

[32] अज्ञेय. (2011). *त्रिशंकु.* नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 45–80

आम्र मंजरी, घने नीम तरु तले, विंध्य की धरती का वरदान, हिमालय, कदम की फूली डार, शिरीष का आग्रह और मेरे राम का मुकुट भीग रहा है इनके प्रसिध्द निबंध है।[33]

(12) कुबेरनाथ राय :-

हिन्दी के आधुनिक विशुध्द ललित निबंधकारों में कुबेरनाथ राय का अद्‌वितीय स्थान है। उनके निबंध व्यक्ति-प्रधान हैं, जिसमें मौलिक चिन्तन, पाण्डित्य की छाप के साथ-साथ व्यंग्य-विनोद का पुट भी विद्‌यमान है। इनके द्‌वारा लिखे गये निबंध रोचक, ज्ञान वर्धक, आकर्षक एवं मनोरंजक हैं। सुदूर अतीत के पौराणिक पर्यावरणों में लिपट कर वर्तमान जीवन का साकार स्वरुप उभार देने में कुबेरनाथ राय सिध्दहस्त है। अपने युग परिवेश की समस्याओं को इतिहास पुराण के सन्दर्भ में एक नूतन आयाम के साथ, स्वतंत्र चिन्तन-मनन की परिधियों में रुपायित करने की अद्भुत शक्ति उनमें है। इनके निबंध साहित्य में एक ओर भावुकता है तो दूसरी ओर यथार्थ जीवन का जीवन्त स्वरुप भी है। कुबेरनाथ जी के प्रसिध्द निबंध संकलन है- प्रिया निलकंठी, रस आखेटक, गंधमादन, विषाद योग, निषाद बाँसुरी, पर्ण मुकुट, महाकवि की तर्जनी, कामधेनु मन पवन की नौका, किरात नदी में चन्द्रमधु, दृष्टि अभिसार, मराल, उत्तर कुरु, वाणी का क्षीरसागर, अंधकार में अग्निशिखा आदि। इन संकलनों में संकलित निबंध चार प्रकार के हैं- भावात्मक, विचारात्मक, वर्णनात्मक और भावात्मक/ भावात्मक निबन्धों का विवरण ललित निबन्धों में कहा जा सकता है। इनमें से प्रसिद्ध ललित निबंध हैं- इस आखेटक, जम्बूक, देह वल्कल, विरूपाक्ष, किरण सप्तपदी, चित्र विचित्र, शरद बांसुरी और विपन्न मराल, वेणु कीचक, दर्पण विश्वासी, सारंग तथा राघवः करुणो रसः आदि।[34]

---

[33] मिश्र, विद्‌यानिवास. (2010). *चित्तवन की छाँह.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 45–80

[34] राय, कुबेरनाथ. (2012). *कामधेनु.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, पृ. 130–165

(13) ठाकुरप्रसाद सिंह :-

ठाकुरप्रसाद सिंह मूलतः ललित निबंधकार के रुप में प्रसिध्द है। इनके 'पुराना घर नये लोग' तथा 'मोर पंख' दो प्रसिध्द निबंध संग्रह है। ठाकुरप्रसाद सिंह की उल्लेखनिय विशेषता यह है कि ये व्यक्ति के मन के भीतर प्रवेश करके उसके मर्मबिंदु से अपने आपको जोड लेते है। उनके अधिकतर निबंध संस्मरणात्मक और आत्मकथ्यपरक है।[35]

(14) धर्मवीर भारती :-

धर्मवीर भारती कवि होने के साथ-साथ हिन्दी के सफल निबंधकार है। इनके पाँच निबन्ध-संग्रह उपलब्ध है ठेले पर हिमालय, पश्यन्ती, कहनी अनकहनी, कुछ चेहरे कुछ चिन्तन और शब्दिता। इन निबंधों में भारती की निबंध लेखन प्रतिभा उजागर हुयी है। 'पश्यती' में जो निबंध संकलित है, वे भारती के व्यापक और गंभीर अध्ययन-मनन और मौलिक विवेचन से परिपूर्ण है।[36]

(15) हरिशंकर परसाई :-

आधुनिक युग के हास्य और व्यंग्य के निबंध लेखकों में हरिशंकर परसाई प्रतिनिधि निबंधकार के रुप में प्रतिष्ठित हैं। हिन्दी साहित्य में व्यंग्य विधा को सही अर्थों में प्रतिष्ठित करनेवालों में परसाई का नाम बडे गौरव के साथ लिया जाता है। उन्होंने आधुनिक हिन्दी व्यंग्य लेखन को एक सर्वथा नवीन मोड दिया है। आज के जीवन और समाज में व्याप्त अन्तर्विरोधों विसंगतियों, भ्रष्टाचार और ढोंग की कलई खोलने और भद्रता के मुखौटे धारण करने वालों को बेनकाब करने की कला में परसई जी अपना सानी नहीं ररवते। सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में फैली असंगतियों पर उन्होंने

[35] सिंह, ठाकुरप्रसाद. (2009). *पुराना घर नये लोग.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. 25–55

[36] भारती, धर्मवीर. (2008). *पश्यन्ती.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 55–90।

अपने निबन्धों के माध्यम से करारा व्यंग्य किया है। परसाई जी के प्रसिध्द निबन्ध संग्रह हैं- पगइंडियों का जमाना, जैसे उनके दिन फिरे, सदाचार का तावीज, शिकायत मुझे भी है, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, अपनी-अपनी बीमारी, वैष्णव की फिसलन, विकलांग श्रध्दा का दौर, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, सुनो भाई साधौ, तुलसीदास चन्दन घिसे, कहत कबीर, हँसते हैं रोते हैं, तब की बात और थी, ऐसा भी सोचा जाता हैं, पाखण्ड का अध्यात्म और आवारा भीड के खतरे आदि। निश्चय ही परसाई जी व्यंग्यात्मक निबंध लेखन में अपना प्रतिमान आप हैं।[37]

(16) श्रीलाल शुक्ल :-

श्रीलाल शुक्ल प्रसिध्द कथाकार के साथ-साथ प्रसिध्द व्यंग्य निबंधकार भी है। इन्होंने अपने निबन्धों में आधुनिक जीवन की विसंगतियों पर प्रहार भी किया है और कहीं-कहीं चुटकी भी ली है। शुक्लजी की श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ है- अंगद का पाँव, यहाँ से वहाँ, कुछ जमीन पर कुछ हवा में, आओ बैठ लें कुछ देर और अगली शताब्दी का शहर आदि।[38]

(17) शरद जोशी : -

हिन्दी व्यंग्य निबंधकारों में शरद जोशी का नाम भी उल्लेखनिय है। परसाई की तरह शरद जोशी ने भी राजनीति, समाज तथा संस्कृति की विसंगतियों को अपने निबन्धों में अनावृत्त किया है। इनके प्रसिध्द निबन्ध संग्रह- जीप पर सवार झलियाँ, किसी बहाने, रहा किनारे बैठ, तिलस्म, दूसरी सतह, सभी साक्षी हैं आदि।[39]

(18) शंकर पुणतांबेकर :- शंकर पुणतांबेकर की गणना व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई और शरद जोशी के बाद की पीढी में होती है। अपने निबंधों में पुणतांबेकर ने

---

[37] परसाई, हरिशंकर. (2010). *पगडण्डियों का ज़माना.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 40–85

[38] शुक्ल, श्रीलाल. (2011). *यहाँ से वहाँ.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 35–70

[39] जोशी, शरद. (2009). *किसी बहाने.* नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ. 45–80

सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक और जीवन के अन्यान्य क्षेत्रों की विसंगतियों पर गहरा प्रहार किया है। उनके प्रसिध्द व्यंग्य-संग्रह है- रेडीमेड कपडे, कैक्टस के काँटे, प्रेम विवाह, विजिट यमराज की, अंगूर खट्टे नहीं है, बदनामचा, गुलेल भाग-१, गुलेल भाग-२, गुलेल भाग-३, गुलेल भाग-४, गुलेल भाग-५, पतनजली, शतरंज के खिलाडी, मेरी फाँसी, गिद्ध मंडरा रहा है, तेरहवां डिनर, पराजय की जुबली आदि।[40]

(19) रामदरश मिश्र :-

रामदरश मिश्र कवि कथाकार-समीक्षक के साथ-साथ ललित निबंधकार भी है। ग्रामीण चेतना और उसके संस्कारों से जुडे हुए मिश्रजी के निबंध भी उनकी इसी चेतना के वाहक है। ठेठ ग्रामीण संवेदना और जीवन-मुल्यों से जुडे रहकर मिश्रजी ने आज के मनुष्य को प्रेरित और प्रभावित करने वाले मूल प्रश्नों को अपने निबंधों में उठाया है। 'कितने बजे हैं'', 'बबूल और कैन्टस', घर-परिवार मिश्रजी के तीन प्रसिध्द निबंध-संग्रह है।[41]

(20) विवेकी राय :-

विवेकी राय आजादी के पश्चात विकसित और परिवर्तित गाँवों की संक्रान्ति-चेतना के शिल्पी हैं। किसानों का देश, गाँवों की दुनिया, त्रिधारा, फिर बैतलवा डाल पर, जुलूस रुका है, गंवई गंध गुलाब, नया गाँवनाम, आम रास्ता नहीं है, आस्था और चिन्तन, जगत तपोवन सौ कियौ और बन तुलसी की गंध इनके प्रसिध्द निबंध-संग्रह हैं। इनके निबंधों में आधुनिक व्यवस्था के अन्तर्गत गाँवों की सारी स्वस्थ परम्पराओं के टूटने ओर सांस्कृतिक मूल्यों के विघटित होने की प्रक्रिया को बहुत गहराई से देखा-परखा गया है।[42]

---

[40] पुणतांबेकर, शंकर. (2012). *रेडीमेड कपड़े.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. 60–95

[41] मिश्र, रामदरश. (2010). *घर-परिवार.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 50–85

[42] राय, विवेकी. (2011). *गँवई गंध गुलाब.* नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, पृ. 70–110

(21) शिवप्रसाद सिंह :-शिवप्रसाद सिंह आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी की परंपरा के प्रसिध्द ललित निबंधकार है। शिखरों के सेतु, कस्तुरी मृग, चतुर्दिक, मनसी गंगा, किस किसको नमन करूँ, क्या करूँ कुछ कहा न जाये और खालिस मौज में इनके प्रकाशित निबंध संग्रह है। इनके निबंध लेखन में विद्वता, यायावरी वृत्ति, लोक कथा प्रेम, सूक्ष्म विचार शक्ति और गद्य काव्य की शैली विद्यमान है।[43]

(22) विष्णुकांत शास्त्री:-

शास्त्री मुख्यतः चिन्तनशील समीक्षक के रुप में विख्यात है। इनके तीन निबंध संग्रह प्रकाशित है- 'कुछ चन्दन की, कुछ कपूर की', 'चिन्तन-मुद्रा' और 'अनुचिन्तन'। शास्त्रीजी का निबंध लेखन उनके गहन-गम्भीर विचारों का प्रतिफलत है।[44]

(23) निर्मल वर्मा:-

निर्मल वर्मा भारत की आस्था विश्वास मूलक अन्तश्चेतना से समृध्द हिन्दी निबंधकार हैं। चीडों पर चाँदनी, हर बारिश में, शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, ढलान से उतरते हुए, तथा शतब्दी के ढलते वर्षों में इनके प्रसिध्द निबंध संग्रह हैं।[45]

उपर्युक्त निबंधकारों के अतिरिक्त नामवर सिंह, रमेशचन्द्र शाह, रविन्द्रनाथ त्यागी, गोपाल चतुर्वेदी, रविन्द्र कालिया, सुदर्शन मजाठिया, प्रभाकर श्रोत्रिय, कृष्णदत्त पालीवाल, श्रीराम परिहार तथा कृष्णबिहारी मिश्र आदि के नाम उल्लेखनिय है। जिससे कहा जा सकता है कि हिन्दी निबंध का भविष्य उज्ज्वल है।

---

[43] सिंह, शिवप्रसाद. (2015). *शिखरों के सेतु.* वाराणसी: हिन्दी साहित्य निकेतन, पृ. 70–102

[44] शास्त्री, विष्णुकान्त. (2010). *चिन्तन-मुद्रा.* नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 40–75

[45] वर्मा, निर्मल. (2014). *शब्द और स्मृति.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 60–95

3. अध्ययन पद्धति एवं क्षेत्र

3.1 शोध पद्धति

शोध पद्धति के अनुसार शोध की विधियों को निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा जा सकता है -

1. ऐतिहासिक शोध विधि

2. वर्णनात्मक / विवरणात्मक शोध विधि

3. प्रयोगात्मक शोध विधि

ऐतिहासिक शोध विधि इतिहास प्राच्ययुगीन घटनाओं का क्रमबद्ध एवं विश्वसनीय विवरण प्रस्तुत करता है। इसके द्वारा वस्तु, विचार, घटना और समाज के विगत जीवन आदि का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

वर्णनात्मक / विवरणात्मक शोध प्रविधि - इसमें समाज की वर्तमान स्थिति का वर्णन एवं विश्लेषण किया जाता है। इसमें व्यवहार के माध्यम से व्यवहार और गुणों की माप को दर्शाया जाता है।

प्रयोगात्मक शोध प्रविधि शोध की यह एक उन्नत विधि है। इसमें शोधकर्ता स्वतंत्र चर एवं आश्रित चर के द्वारा कार्य कारण संबंधों का अध्ययन करता है।

प्रस्तावित शोध प्रबंध में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा। ऐतिहासिक शोध विधि द्वारा अतीत के विचारों के आधार पर वर्तमान प्रासंगिकता ज्ञात करना। विश्लेषणात्मक विधि द्वारा पहले से उपलब्ध तथ्यों या जानकारी का उपयोग किया जायेगा और इस सामग्री का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिये इसका विश्लेषण किया जायेगा। तुलनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत

किन्हीं मापदण्डों के आधार पर दो या दो से अधिक परिस्थितियों अथवा तथ्यों की तुलना की जायेगा। शोध हेतु अनेक प्रकार की सामग्री संकलन हेतु प्राथमिक सामग्री एवं द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया जायेगा।

आधुनिक युग में हिंदी मुहावरों की उपयोगिकता का मूल्यांकन हेतु प्राथमिक सामग्री का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक सामग्री को एकत्र करने के लिये प्रश्नावली का प्रयोग किया जायेगा। इस शोध कार्य में द्वितीयक सामग्री का प्रयोग निम्नलिखित स्तर पर किया जायेगा।

(1) पुस्तकालय में उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर।

(2) पुस्तकों के आधार पर।

(3) लेख, पत्र-पत्रिकाओं के आधार पर।

(4) पूर्व में हुये शोध अध्ययन द्वारा।

वर्तमान समय में लिखित विद्वानों के ग्रन्थों से सामग्री प्राप्त की जा सकेगी। पत्र-पत्रिकाओं, शोध ग्रन्थों, इंटरनेट आदि की सहायता ली जायेगी, जिससे अध्ययन में समग्रता होगी।

3.2 शोध क्षेत्र

बुंदेलखंड : एक सांस्कृतिक परिचय

बुन्देली काव्य का ऐतिहासिक संदर्भ:-

छत्रसाल के समय में जहां बुन्देलखण्ड को "इत जमुना उत नर्मदा, इत चम्बल उत टोंस" से जाना जाता है। वहां भौगोलिक दृष्टि जनजीवन, संस्कृति और भाषा के संदर्भ से बुन्देला क्षत्रियों के वैभवकाल से जोड़ा जाता है। बुन्देली इस भू-भाग की सबसे

अधिक व्यवहार में आने वाली बोली है। विगत ७०० वर्षों से इसमें पर्याप्त साहित्य सृजन हुआ। बुन्देली काव्य के विभिन्न साधनाओं, जातियों और आदि का परिचय भी मिलता है। कानू का आधार इसीलिए बुन्देलखण्ड की नदियां, पर्वत और उसके वीरों को बनया गया है। विभिन्न प्रवृत्तियों और आन्दोलनों के आधार पर बुन्देलखण्ड काव्य के कुल सात युग माने जा सकते हैं, जिन्हें अध्ययन के सुविधा से निम्न नामों से अभिहित किया गया है।

१. भाषा काव्य आन्दोलन नवीं शती विक्रमी से तेरहवीं शती तक

२. कथा काव्य काल तेरहवीं से सोलहवीं शदी विक्रमी तक

३. रीति भक्ति काव्य काल सत्रहवीं शदी से सत्रहवीं शती विक्रमी तक।

४. सांस्कृतिक उन्मेष काल सत्रहवीं शती से अट्ठाहरवीं शती विक्रमी तक।

५. श्रृंगार काव्य काल - अट्ठारहवीं शती से उन्नीस सौ पचास विक्रमी तक।

६. स्वतन्त्रता पूर्व आधुनिक सम्वत् १९५० से २००० विक्रमी तक।

७. अत्याधुनिक काल - सम्वत् २००० से अब तक।

बुन्देली, जिसे बुंदेलखण्डी भी कहा जाता है, मध्य भारत के बुंदेलखंड क्षेत्र में बोली जाने वाली एक इंडो-आर्यन भाषा है, जो पश्चिमी हिंदी उपसमूह का हिस्सा है और ब्रजभाषा से भी गहरा संबंध रखती है। बुंदेली भारत के एक विशेष क्षेत्र बुन्देलखण्ड में बोली जाती है। यह कहना बहुत कठिन है कि बुंदेली कितनी पुरानी बोली हैं लेकिन ठेठ बुंदेली के शब्द अनूठे हैं जो सदियों से आज तक प्रयोग में आ रहे हैं। बुंदेलखंडी के ढेरों शब्दों के अर्थ बंग्ला तथा मैथिली बोलने वाले आसानी से बता सकते हैं।



बुन्देली भाषा का क्षेत्र

प्राचीन काल में बुंदेली में शासकीय पत्र व्यवहार, संदेश, बीजक, राजपत्र, मैत्री संधियों के अभिलेख प्रचुर मात्रा में मिलते है। कहा तो यह भी जाता है कि औरंगजेब और शिवाजी भी क्षेत्र के हिंदू राजाओं से बुंदेली में ही पत्र व्यवहार करते थे। एक-एक क्षण के लिए अलग-अलग शब्द हैं। गीतो में प्रकृति के वर्णन के लिए, अकेली संध्या के बुन्देली भाषा के बारे में अधिक जानकारी:

भौगोलिक क्षेत्र: बुन्देली भाषा मुख्य रूप से मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में बोली जाती है, जिसमें झांसी, सागर, पन्ना, विदिशा, रायसेन और होशंगाबाद जैसे जिले शामिल हैं।

भाषा परिवार: बुन्देली भाषा मध्य इंडो-आर्यन भाषाओं से संबंधित है और पश्चिमी हिंदी उपसमूह का हिस्सा है।

साहित्यिक संबंध: बुन्देली का ब्रजभाषा से गहरा संबंध है, जो 19वीं शताब्दी तक उत्तर-मध्य भारत की प्रमुख साहित्यिक भाषा थी।

उपबोलियाँ: बुन्देली भाषा की कुछ उपबोलियाँ हैं, जैसे कि 'ठेठ बुन्देली' (पन्ना, सागर, झांसी आदि में बोली जाती है) और 'क्षेत्रीय बुन्देलखंडी' (विदिशा, रायसेन, होशंगाबाद आदि में बोली जाती है)।

साहित्यिक परंपरा: बुन्देली में लोक साहित्य की समृद्ध वाचिक परंपरा है, और बुन्देली भाषा की रचनाओं का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है।

कवियों और लेखकों का योगदान: बुन्देली भाषा में कई कवियों और लेखकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिनमें जगनिक, विष्णुदास, केशवदास, पद्माकर, तुलसीदास, बिहारी, और भूषण जैसे नाम शामिल हैं।

साहित्यिक सामग्री: प्राचीन काल में बुन्देली में शासकीय पत्र व्यवहार, संदेश, बीजक, राजपत्र, मैत्री संधियों के अभिलेख प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

भाषा के विकास: बुन्देली भाषा का विकास रासो काव्य धारा के माध्यम से हुआ, और जगनिक के आल्हाखण्ड तथा परमाल रासो प्रौढ़ भाषा की रचनाएँ हैं.

वर्तमान स्थिति: बुन्देली भाषा आज भी बुंदेलखंड क्षेत्र में बोली जाती है और लोगों की संस्कृति और पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

बुंदेली साहित्य में कई महत्वपूर्ण साहित्यकार हुए हैं, जिनमें जगनिक, विष्णुदास, ईसुरी, मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त और गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल' प्रमुख हैं।

जगनिक और विष्णुदास: बुंदेली के आदि कवियों में से हैं, जिनके द्वारा बुंदेली की विशेषताओं से युक्त रचनाएँ की गई हैं।

ईसुरी: बुंदेलखंड में इन्हें काफी ख्याति प्राप्त हुई है और ये फाग लिखने के लिए जाने जाते हैं।

मैथिलीशरण गुप्त और सियारामशरण गुप्त: बुंदेलखंड के प्रसिद्ध साहित्यकार हैं, जिन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि दी गई है।

गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल': बुंदेली शब्दकोष और मुहावरों को संकलित किया है और बुंदेली भाषा के लिए काम कर रहे है।

3.2.1 बुंदेलखंड के कुछ क्षेत्र

(अ) गाडरवारा	(ऊ) टीकमगढ़	(ए) जबलपुर	(ओ) बांदा	1. चित्रकूट
(आ) सागर	(ऋ) ग्वालियर	(ऐ) जालौन	(औ) झांसी	2. ललितपुर(बानपुर)
(इ) दमोह	(ऌ) भिंड	(ऑ) होशंगाबाद	(अं) महोबा	3. नरसिंहपुर
(ई) विदिशा	(ऍ) मुरैना	(ऑ) कटनी	(अः) पन्ना	4. सिवनी
(उ) छतरपुर	(ऎ) दतिया		(अअ) हमीरपुर	5. रायसेन

वर्तमान बुंदेलखंड चेदि, दशार्ण एवं कारुष से जुड़ा था। यहां पर अनेक जनजातियां निवास करती थीं। इनमें कोल, निषाद, पुलिंद, किराद, नाग, सभी की अपनी स्वतंत्र भाषाएं थी, जो विचारों अभिव्यक्तियों की माध्यम थीं। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में इस बोली का उल्लेख प्राप्त है। शबर, भील, चांडाल, सजर, द्रविड़ोद्भवा, हीना वने वारणम् व विभाषा नाटकम् स्मृतम् से बनाफरी का अभिप्रेत है। संस्कृत भाषा से प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ। इनमें देशज शब्दों की बहुलता थी। हेमचंद्र सूरि ने पामरजनों में प्रचलित प्राकृत अपभ्रंश का व्याकरण दशवी शती में लिखा। मध्यदेशीय भाषा का विकास इस काल में हो रहा था। हेमचन्द्र के कोष में विंध्येली के अनेक शब्दों के निघण्टु प्राप्त हैं[46]।

बारहवीं सदी में दामोदर पंडित ने 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' की रचना की। इसमें पुरानी अवधी तथा शौरसेनी ब्रज के अनेक शब्दों का उल्लेख मिलता है। इसी काल में (अर्थात एक हजार ईस्वी में) बुंदेली पूर्व अपभ्रंश के उदाहरण प्राप्त होते हैं। इसमें देशज शब्दों की बहुलता थी। किशोरीदास वाजपेयी लिखित हिंदी शब्दानुशासन के अनुसार हिन्दी एक स्वतंत्र भाषा है, उसकी प्रकृति संस्कृत तथा अपभ्रंश से भिन्न है। बुंदेली की माता प्राकृत शौरसेनी तथा पिता संस्कृत भाषा है। दोनों भाषाओं में जन्मने के उपरांत भी बुंदेली भाषा की अपनी चाल, अपनी प्रकृति तथा वाक्य विन्यास को अपनी मौलिक शैली है। हिंदी प्राकृत की अपेक्षा संस्कृत के निकट है।

मध्यदेशीय भाषा का प्रभुत्व अविच्छन्न रूप से ईसा की प्रथम सहस्त्राब्दी के सारे काल में और इसके पूर्व कायम रहा। नाथ तथा नाग पंथों के सिद्धों ने जिस भाषा का प्रयोग किया, उसके स्वरुप अलग-अलग जनपदों में भिन्न भिन्न थे। वह देशज प्रधान लोकभाषा थी। इसके पूर्व भी भवभूति उत्तर रामचरित के ग्रामीणजनों की भाषा विंध्येली प्राचीन बुंदेली ही थी। संभवतः चंदेल नरेश गंडदेव (सन ९४० से ९९९ ई.) तथा उसके उत्तराधिकारी विद्याधर (९९९ ई. से १०२५ ई.) के काल में बुंदेली के प्रारंभिक रूप में महमूद गजनवी की प्रशंसा की कतिपय पंक्तियां लिखी गई। इसका विकास रासो काव्य धारा के माध्यम से हुआ। जगनिक का आल्हखंड तथा परमाल रासो प्रौढ़ भाषा की रचनाएं हैं। बुंदेली के आदि कवि के रूप में प्राप्त सामग्री के आधार पर जगनिक एवं विष्णुदास सर्वमान्य हैं, जो बुंदेली की समस्त विशेषताओं से मंडित है।

बुंदेली के बारे में कहा गया है:

बुंदेली वा या है जौन में बुंदेलखंड के कवियों ने अपनी कविता लिखी, बारता लिखवे वारों ने वारता के बोली आय। मिलत में रूप एकई में बुंदेलखंड पूरे भाषा जा .लिखी (गद्य)

है गई कही से जई हैं। जात बदलत से हिसाब के जगा रूप कई कि कोस बदले पे कोस-पानी, गांव जैसे हैं में चलन बोली सी बहुत से हिसाब जा में बुंदेलखंड .बानी में गांव-डंघाई, चौरासी पवारी, विदीशयीया आदि। (वाली जाने बोली में जिला विदिशा)

बुंदेली का स्वरूप

बुंदेलखंड की पाटी पद्धति में सात स्वर तथा ४५ व्यंजन हैं। कातन्त्र व्याकरण ने संस्कृत के सरलीकरण प्रक्रिया में सहयोग दिया। बुंदेली पाटी की शुरुआत ओना मासी घ मौखिक पाठ से प्रारंभ हुई। विदुर नीति के श्लोक विन्नायके तथा चाणक्य नीति चन्नायके के रूप में याद कराए जाते थे। वणिक प्रिया के गणित के सूत्र रटाए जाते थे। नमः सिद्ध मने ने श्री गणेशाय नमः का स्थान ले लिया। कायस्थों तथा वैश्यों ने इस भाषा को व्यवहारिक स्वरुप प्रदान किया, उनकी लिपि मुड़िया निम्न मात्रा विहीन थी। स्वर बैया से अक्षर तथा मात्रा ज्ञान कराया गया। चली चली बिजन वखों आई, कां से आई का का ल्याई मौलिक थे। प्राचीन बुंदेली विंध्येली के कलापी सूत्र काल्पी में प्राप्त हुए हैं[47]।

बुंदेलखंड का गौरव:

बुंदेलखंड के गौरव के तौर पर संत रविदास जी के मंदिर को जाना जाता है. इसके अलावा, बुंदेलखंड की वीरता के लिए आल्हा-ऊदल की वीर गाथाएं भी प्रसिद्ध हैं.

बुंदेलखंड के बारे में कुछ और खास बातें:

1. बुंदेलखंड को पहले जेजाभुक्ति या जेजाकभुक्ति ("जेजा का प्रांत") के नाम से जाना जाता था.
2. बुंदेलखंड की राजधानी ओरछा थी.
3. बुंदेलखंड के शासक थे महाराजा छत्रसाल.

4. 17वीं और 18वीं शताब्दी में, बुंदेला राजपूत वंश के छत्रसाल बुंदेला ने मुगल साम्राज्य के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी और बुंदेलखंड में अपने देश की स्थापना की.
5. बुंदेलखंड के कवियों में समकालीन समाज, संस्कृति और राजनीति के प्रति जागरुकता है.
6. बुंदेलखंड की वीरता का ज़िक्र आल्हा-ऊदल की वीर गाथाओं के बिना पूरा नहीं हो सकता.
7. बुंदेलखंड की कई वीर गाथाएं पर्यटकों को गौरव महोत्सव में सुनने को मिलती हैं.

4-बुन्देली साहित्य

4. 1 **बुन्देली भाषा का साहित्य**

बुन्देली भाषा क्षेत्र के अन्तर्गत बालाघाट जिला नहीं आता है। 'बालाघाट गजेटियर' के लेखक सी. ई. लो के मतानुसार- "इस जिले के आदिवासियों के अतिरिक्त हिन्दू परिवारों की बोली मराठी - मिश्रित हिन्दी है। इनमें से इस जिले में बसे पँवार पूर्वी हिन्दी (बघेली) और मराठी का मिश्रित रूप बोलते हैं और लोधी पश्चिमी (बुन्देली) और मराठी का मिश्रित रूप बोलते हैं।[49]"

डॉ. ग्रियर्सन ने इस जिले की बोलियों के सम्बन्ध में लिखा है -"बालाघाट में मराठी के रूप में अतिरिक्त पूर्वी हिन्दी के रूप बोले जाते हैं , जो बघेली के मिश्रित रूप हैं। इसे बुन्देली का एक रूप कहा जा सकता है।"

इस जिले को बुन्देली भाषी जिला स्वीकार नहीं करते हैं , किन्तु बालाघाट के जिले के लोधियों की बोली बुन्देली का ही मिश्रित रूप है[50]।

नागपुरी हिन्दी

छिन्दवाड़ा जिले के दक्षिण में नागपुर जिला है , इसकी मुख्य-भाषा मराठी है, इस जिले से संलग्न चन्द्रपुर , भण्डारा एवं बुलढाना जिलों में कुछ ऐसी जातियाँ हैं, जिनकी बोली को मराठी मिश्रित बुन्देली कहा जाता है। इन जिलों में बसे कोष्टी और कुम्हार जाति के लोग बुन्देलखण्ड से आकर यहाँ बस गए है, उनकी भाषा बुन्देली थी जो यहाँ आने पर स्थानीय प्रभाव के कारण मराठी मिश्रित बुन्देली हो गई है। डॉ. ग्रियर्सन ने भी बोली के इस रूप को 'नागपुरी-हिन्दी' कहा है।

1. **छिन्दवाड़ा जिले के बुन्देली रूप**

छिन्दवाड़ा जिले के उत्तर में बुन्देली भाषा होशंगाबाद जिला (होशंगाबाद एवं सोहागपुर तहसील) तथा नरसिंहपुर जिला, दक्षिण में मराठी -भाषी नागपुर जिला, पूर्व में बुन्देली भाषी सिवनी जिला तथा पश्चिम में मालवी बैतूल जिला है। छिन्दवाड़ा तहसील का मध्य पूर्वी भाग शुद्ध बुन्देली से अधिक निकट है, जिले के शेष भाग, में बुन्देली के अनेक रूप प्रचलित हैं। 'छिन्दवाड़ा गजेटियर' में श्री आर. व्ही. रसेल ने-"इस जिले को बुन्देली भाषी कहकर उस बोली के बोलने वालों की संख्या 53 प्रतिशत बतलाई। है।" रसेल के अनुसार मराठी बोलने वालों की संख्या 19 प्रतिशत है। 'इपीरियल गजेटियर' के अनुसार, ये बुन्देली भाषी वे हैं, जो पश्चिमी तट प्रदेश से बुन्देलखण्ड होते हुए यहाँ आकर बस गए थे।" इस जिले में 61 बोलियाँ प्रचलित हैं जिनमें मराठी, हिन्दी, मालवी, गोंडी, कोकू आदि मुख्य हैं[53]।

बोली के मिश्रित रूप में किसी एक बोली की प्रधानता होती है किन्तु जातियों के द्वारा बोली जाने वाली बुन्देली का यह रूप नहीं है। इन रूपों में मालवी और बुन्देली के मिश्रण से नये शब्द बन गये हैं और कहीं बुन्देली और मराठी के मिश्रण ने ऐसे नये शब्दों का निर्माण कर दिया है, जिन्हें हम किसी भी एक बोली अथवा भाषा का रूप नहीं कह सकते हैं। डॉ. ग्रियर्सन ने "बुन्देली के इन रूपों को विकृत बोलियाँ कहा है।" इनके रूपों में समानताएँ है किन्तु प्रत्येक की स्थानीय और जातीय विशेषताएँ भी हैं।

2. **सिवनी जिले के बुन्देली रूप**

सिवनी जिले की पश्चिमी सीमा छिन्दवाड़ा जिले की सीमा से, पश्चिमोत्तर सीमा नरसिंहपुर जिले से, उत्तरी सीमा जबलपुर से पूर्वी मिश्रित छत्तीसगढ़ भाषी मण्डला जिले से तथा बालाघाट जिले से और दक्षिणी सीमा मराठी भाषी

क्षेत्र से संलग्न है। इस संलग्नता के कारण इस जिले के पश्चिमी , पश्चिमोत्तरी और उत्तरी भाग की भाषा बुन्देली बनी रही किन्तु पूर्वी भाग में प्रचलित बुन्देली पर मण्डला की मिश्रित छत्तीसगढ़ी तथा बालाघाट की बोली छत्तीसगढ़ी और मराठी के मिश्रित रूप से प्रभावित हो गई। दक्षिणी क्षेत्र की बोली पर मराठी का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

'सिवनी गजेटियर' में रसेल ने इस जिले में 58 प्रतिशत बुन्देली भाषी बतलाये हैं। शेष मराठी और गोड़ी बोलने वाले हैं।[52]

3. **पूर्वी क्षेत्र में बुन्देली रूप**

बुन्देली भाषी प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र के अन्तर्गत उत्तरप्रदेश के जालौन और हमीरपुर जिले, छत्तरपुर जिले का पूर्वी भाग , पन्ना और जबलपुर जिले का पूर्वी भाग है। इस पूर्वी क्षेत्र की पश्चिमोत्तर सीमा का लगभग शुद्ध बुन्देल भाषी जालौन जिला , उत्तरी सीमा से अवधी मिश्रित कन्नौजी भाषी कानपुर जिला, पूर्वोत्तर सीमा से अवधी के एक रूप बैसवाड़ी भाषी फतेहपुर जिला, पूर्वी सीमा से बघेली भाषी क्षेत्र दक्षिण-पूर्वी तथा दक्षिणी सीमा से छत्तीसगढ़ी भाषी क्षेत्र तथा पश्चिमी सीमा से शुद्ध बुन्देली भाषी क्षेत्र संलग्न हैं। इस क्षेत्र की इस भौगोलिक और भाषायी स्थिति के कारण इस क्षेत्र में बुन्देली के सात रूप प्रचलित हैः-

(1) शुद्ध बुन्देली,

(2) लोधंति,

(3) कुन्द्री,

(4) निभट्टा,

(5) बनाफरी,

(6) तिरहरी,

(7) बघेली-मिश्रित बुन्देली।

(1) शुद्ध बुन्देली

हमीरपुर जिले के मध्यभाग, पश्चिमोत्तर भाग तथा जालौन जिले के दक्षिण - पूर्वी भाग में बुन्देली का जो रूप प्रचलित है , वह लगभग शुद्ध बुन्देली का ही रूप कहा जा सकता है। बोली रूप की दृष्टि से हमीरपुर , राठ और उरई इसके प्रमुख केन्द्र हैं। इनमें से हमीरपुर जिले की पश्चिमी सीमा तक के भाग में बुन्देली का जो रूप प्रचलित है, वह झाँसी जिले की बुन्देली से एक बड़ी सीमा तक साम्य रखता है। इसी क्षेत्र की बुन्देली वास्तविक रूप में शुद्ध बुन्देली कही जा सकती है[51]।

हमीरपुर जिले के पश्चिमोत्तर भाग तथा उरई क्षेत्र (जालौन) की बुन्देली का रूप शुद्ध बुन्देली से भिन्न है। इस क्षेत्र में लोधी और राठौर वंशीय राजपूत बड़ी संख्या में हैं। इन जातियों के बाहुल्य के कारण बुन्देली का यह रूप 'लोधान्ती' अथवा 'राठौर' कहा जाता है। राठ और उरई क्षेत्र इसी रूप के अन्तर्गत आते हैं।

(2) बुन्देली का लोधान्ती रूप

लोधान्ती हमीरपुर जिले के पश्चिमोत्तर भाग, राठ तहसील तथा जालौन जिले के उरई क्षेत्र में प्रचलित बुन्देली रूप है। लोधी राजपूतों की यह बोली 'लोघान्ती' कहलाती है। बुन्देली के इस रूप को राठौर राजपूत बड़ी संख्या में बोलते हैं, इससे इसे 'राठौरी' भी कहते हैं[55]।

लोधान्ती की व्याकरणिक विशेषताएँ–

1. लोधान्ती 'ओ' के स्थान में 'औ' का प्रयोग अधिक दिखाई देता है।

यथा– करो (करौं), गओ (गओं) आदि।

2. राठ और उरई क्षेत्र की बोली में रिश्ते से सम्बन्धित कुछ आकारान्त शब्द भी हैं। जो मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं।

यथा–दद्दा, कक्का, माला, आदि।

3. लोधान्ती रूप में अधिकरण कारक का परसर्ग एकारान्त अथवा ऐकारान्त होता है।

यथा घरे या धैर्य, बजारे या बाजारे आदि।

4. सर्वनाम शब्दों में तृतीय पुरुष एक वचन 'वह' के लिये 'बौ' का प्रयोग होता है इसका स्त्रीलिंग 'बा' है।

5. संकेत बोधक विशेषण में यह , वह के लिये 'जो' तथा 'वौ' का प्रयोग होता है[54]।

(3) **बनाफरी**

बनाफरी का पूर्वी क्षेत्र की बोलियों में महत्व है। यह प्रमुख रूप से बनाफर क्षत्रियों की बोली होने के कारण 'बनाफरी' कहलाती है। यद्यपि इस क्षेत्र में बसे अन्य लोग भी बुन्देली का यही रूप बोलते हैं। डॉ. ग्रियर्सन ने बुन्देलखण्ड एजेंसी का उत्तरी और पूर्व भाग चन्दल परगना, छतरपुर जिले का लौंड़ी क्षेत्र, पन्ना राज्य का धरमपुर परगना नौगाँव , रेवाई, गौरीहर, बेरोजागीर तथा अजयगढ़ और बावनी राज्य भी बनाफरी भाषी क्षेत्र के अन्तर्गत हैं। इसका क्षेत्र

हमीरपुर जिले के दक्षिण –पूर्वी भाग तथा पूर्व में बघेलखण्ड के नागौद तथा मैहर राज्य के पश्चिमी भाग तक विस्तृत है[59]।

बुन्देली की उद्भव कालीन पृष्ठभूमि

'बुन्देली' शौरसेनी अपभ्रंश के एक रूप 'मध्यदेशीया' से विकसित पश्चिमी हिन्दी की एक बोली है। बुन्देली की व्युत्पत्ति इस प्रकार है :– शौर सेनी अपभ्रंश (मध्यदेशीया) पश्चिमी हिन्दी > बुन्देली

बुन्देली भाषा का इतिहास एवं विकास

बुन्देली के उद्भव पर इसी क्रम से विचार करना युक्तिसंगत हैः–

भाषा विदों ने हिन्दी की लोकभाषाओं का उद्भव मध्यदेशीय शौरसेनी अपभ्रंश से माना है। शौरसेनी अपभ्रंश ही मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा और आधुनिक कालीन भारतीय आर्य भाषा हिन्दी के मध्य की कड़ी है। इसके एक ओर शौरसेनी प्राकृत तथा दूसरी ओर प्राचीन हिन्दी है। शौरसेनी अपभ्रंश को 'पश्चिमी अपभ्रंश' भी कहा गया है। इसके अन्तर्गत गुजरात तथा राजस्थान सहित आज का हिन्दी प्रदेश है। यह वही शौरसेनी है , जिसका विकास 11 वीं शती में प्राचीन हिन्दी के रूप में हुआ है।मध्यदेशीय अपभ्रंश ही लोकप्रचलित भाषा रूप है। आचार्य हेमचन्द्र ने इसे ही 'ग्राम्य अपभ्रंश' कहा है[56]।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार – 'इसी 'ग्राम्य' अपभ्रंश से ही आधुनिक देशी भाषाओं का विकास हुआ है।' बुन्देली पश्चिमी हिन्दी की भाषा है किन्तु यह शौरसेनी अपभ्रंश वरन् उसके पूर्व की प्राकृत की प्रवृत्तियों से भी सर्वथा मुक्त नहीं है। शौरसेनी अपभ्रंश अथवा उसके जिस मध्यदेशीया रूप से प्राचीन हिन्दी का विकास हुआ, वह बुन्देली ही नहीं अपितु ब्रजभाषा, खड़ीबोली आदि के भी विकास का आधार बना।

बुन्देली के उद्भव की स्थिति हिन्दी की अन्य प्रादेशिक बोलियों के उद्भव से भिन्न नहीं है। सं. 500 वि. से 1000 वि. तक अपभ्रंश काल है। 11 वीं से 14 वीं शती के काल को संक्रमण काल कहा जाता है। इस काल में अपभ्रंश ने सरल होकर, ऐसा रूप ग्रहण किया , जिससे आधुनिक कालीन हिन्दी की प्रादेशिक बोलियों का आरम्भ होता है। डॉ . सुनीति कुमार चाटुर्ज्या इसी काल से आधुनिक आर्य भाषाकाल का आरम्भ मानते हैं। **डॉ. धीरेन्द्र वर्मा** ने भी इसे आधुनिक भारतीय आर्य भाषाकाल कहा है[62]।

इस काल में जो बोलियाँ विकसित हुईं , उनमें 'अपनापन' की विशिष्टता निहित है, भले ही उनका आधार तत्कालीन अपभ्रंश भाषाएँ रही हों। संक्रमण काल के पूर्व विवेचित साहित्य के भाषा रूप को अपभ्रंश के उत्तरकालीन रूप एवं तत्कालीन लोक प्रचलित बोलियों का एक समन्वित रूप कह सकते हैं। यही हिन्दी का आरम्भिक काल था। संक्रमण काल की सभी कृतियों में संस्कृत के तत्सम , अर्ध तत्सम और तद्भव रूपों के अतिरिक्त - बुन्देली ब्रज , कन्नौजी, अवधी, मालवी आदि सभी प्रमुख बोलियों की प्रवृत्तियाँ एवं रूप विद्यमान हैं। 1023 ई. में देशी भाषा बुन्देली में साहित्य की रचना आरम्भ हुई। वस्तुतः उसके दो -डेढ़ सौ वर्ष पूर्व अर्थात् 9 वीं शती के आरम्भ में ही बुन्देली का उद्भव हो गया था।[63]

डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त ने लिखा है कि - "बुन्देली का उद्भव अन्य लोकभाषाओं के उदय के दो -डेढ़ सौ वर्ष पहले हो चुका था , इसलिए चंदेलकाल में बुन्देली लोक-काव्य की रचना निरन्तर होती रही। दूसरे ग्वालियरी बुन्देली का ही नया उत्थान था। तीसरे ग्वालियरी के संगीत और पद परम्परा के रूप में बुन्देली ही मथुरा-वृन्दावन के केन्द्र की भाषा बनी, जो ब्रजी में ढलकर ब्रजभाषा के नाम से साहित्य में छा गयी। वैसे बुन्देलखण्ड का केन्द्र बना ओरछा तथा पन्ना ,

जहाँ बुन्देली राजभाषा के पद पर आसीन होकर मध्यकाल की राजनीति के सम्पर्क की माध्यम बनी। छत्रसाल के पन्ना नरेश के रूप में मुगल बादशाहों को लिखे पत्र बुन्देली में ही थे। साथ ही राज्य के आदेश भी बुन्देली में लिखे जाते थे। इस प्रकार 17वीं-18वीं शती में राजकाज की भाषा बुन्देली रही। उसके दो रूप सदैव जीवित रहे- एक परिष्कृत बुन्देली का साहित्यिक रूप और दूसरा ग्रामीण बुन्देली का लोकरूप। इन दोनों रूपों में निरंतर सृजन होता रहा[58]।

बुन्देली की विभिन्न उप-बोलियाँ

बुन्देली आरम्भ से ही एक लोकभाषा के रूप में बुन्देलखण्ड के निवासियों की वाणी का माध्यम रही है। बुन्देली बुंदेलखण्ड तक की सीमित लोकभाषा नहीं है। अपितु यह यमुना के कुछ उत्तरी भाग से नर्मदा के कुछ दक्षिण के भाग तक में बसी जनता की बोली है। बुन्देली एक सुविस्तृत क्षेत्र की लोकभाषा है। इस क्षेत्र की उत्तर- दक्षिण लम्बाई लगभग 300 मील और पूर्व-पश्चिम चौड़ाई लगभग 225 मील है। इस प्रकार यह लोक भाषा लगभग 67,500 वर्गमील में बोली जाती है। एक ही लोकभाषा का रूप, उसके विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न हो जाता है। लोकभाषा के विभिन्न रूपों में मौलिक एकरूपता विद्यमान रहती है , किन्तु विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृति , रीति-रिवाज, परम्परा और आचार -विचार, परम्परागत मान्यताओं, उच्चारण विधि, उस क्षेत्र में प्रचलित अन्य बोलियों के सम्पर्क के कारण उसका रूप परिवर्तन हो जाता है। लोकभाषा का मूलरूप विभिन्न स्थानों की स्थानीय विशेषताओं से समन्वित हो कुछ भिन्न रूप धारण कर लेता है। इन रूपों को लोकभाषा की उप-बोलियाँ कहा जाता है[65]।

बुन्देली की उपबोलियों के नामकरण के दो आधार हैं- जाति और स्थान। इसके कुछ रूप ऐसे हैं, जो विशिष्ट जातियों द्वारा ही विशेष रूप से बोले जाते हैं।

ऐसे रूप उस जाति के नाम पर आधारित हैं , यथा- पँवारी, लोधन्ती, राठोरी, भदावरी, बनाफरी आदि।

कुछ रूप स्थान अथवा क्षेत्र विशेष में प्रचलित होने के कारण उनका नाम स्थानवाची हो गया है। तोहरगढ़ी खटोला, छिंदवाड़ी, नागपुरी हिन्दी इसी प्रकार के नाम हैं। इसके कुछ रूप परिनिष्ठित हैं , जो कुछ अन्य सीमावर्ती बोलियों से मिश्रित हैं। वस्तुतः बुन्देली का एक लोकभाषा के रूप में जो विकास परिलक्षित है, वह बहुरूपी है। बुन्देली का एक काव्य -भाषा, राजभाषा और लोकभाषा के रूप में गत पाँच सौ वर्षों से जो निरन्तर विकास हो रहा है , वह भाषायी दृष्टि से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है[59]।

बुन्देली लोकभाषा की उप-बोलियों के अध्ययन हेतु हमने इसे क्षेत्रीय दृष्टि से उत्तरी क्षेत्र, दक्षिणी क्षेत्र, पूर्वी क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र तथा मध्यवर्ती क्षेत्र में विभाजित किया है।

1. **उत्तरी क्षेत्र के बुन्देली-रूप**

मध्यप्रदेश के उत्तरी जिले मुरैना (श्योपुर तहसील को छोड़कर) भिण्ड और ग्वालियर जिला उत्तरी क्षेत्र के अन्तर्गत है। इसके अतिरिक्त उत्तरप्रदेश के आगरा, मैनपुरी और इटावा जिलों के मध्यप्रदेश के इन उत्तरी जिलों से लगे हुए कुछ दक्षिणी भाग भी इसी क्षेत्र के अन्तर्गत है। इस क्षेत्र में बुन्देली के तीन रूप प्रचलित है[64]-

(अ) ब्रज मिश्रित रूप,

(ब) कन्नौज मिश्रित रूप,

(स) खड़ी बोली प्रभावित बुन्देली प्रधान रूप।

ये तीनों रूप 'भदावरी' अथवा 'तोमरगढ़ी' कहे जाते हैं।

ब्रज–कन्नौजी–मिश्रित बुन्देली (भदावरी)

मुरैना से आगरा के दक्षिणी भाग तक की बोली का एक ऐसा रूप बन गया है, जो ब्रज और बुन्देली का एक मिश्रण है। इस मिश्रित रूप में बुन्देली की अधिकता और ब्रज के रूप की न्यूनता होने से हम इसे बुन्देली का ही रूप मानते हैं। डॉ. ग्रियर्सन तथा अन्य भाषा शास्त्रियों ने भी इसे माना है[65]।

'आगरा–गजेटियर' के अनुसार भदावर राजपूतों का राज्य आगरा के दक्षिणी भाग (वर्तमान बाह तहसील) से ग्वालियर राज्य के मध्य तक (मुरैना इसी भाग में है) था। भदावर राजपूतों की बोली होने के कारण ही 'बुन्देली का यह ब्रज–मिश्रित रूप 'भदावरी' कहलाता है। वर्तमान ग्वालियार जिले के उत्तर – पश्चिमी भाग में भी बुन्देली का यही रूप प्रचलित है। ग्वालियर अनेक वर्षों तक तोमर राजपूतों का गढ़ रहा है। इन तोमर राजपूतों की भी यही बोली होने के कारण इसे 'तोमर गढ़ी' अथवा 'तोवरगढ़ी' भी कहा जाता है।

डॉ. ग्रियर्सन के अनुसार, इस बोली का क्षेत्र भदावर क्षेत्र तक ही सीमित नही है। यह चम्बल से आरम्भ होकर गुना तक फैली है। इसके पश्चिम में ब्रजभाषा तथा हरौती (राजस्थानी की एक उप बोली) का क्षेत्र तथा पूर्व में पवारी बुन्देली का क्षेत्र है। दक्षिण में यह मालवी में विलीन हो जाती है। आगरा जिले में यह चम्बल के तटवर्ती आगरा के दक्षिणी भाग में बोली जाती है। यह मैनपुरी जिले के खरका क्षेत्र के भी कुछ लोगों द्वारा बोली जाती है। इटावा जिले के यमुना और चम्बल के मध्य में स्थित भाग में भी भदावरी ही बोली जाती है। इस प्रकार यह एक विस्तृत क्षेत्र की बोली है[66]"

'आगरा–गजेटियर' में लिखा गया है – "अधिकांश जन समूह ब्रज बोलता है और पूर्वी प्रदेश की बोली प्रायः अन्तर्वेदी ही है , जिसे इस क्षेत्र के ग्रामीण

'गांववारी कहते हैं। बाह तहसील की बोली बुन्देली का एक उप रूप है , जो पश्चिमी हिन्दी की एक शाखा है। यह बोली (बाह तहसील) पूर्व के नाम 'भदावरी' के आधार पर 'भदावरी' कहलाती है।"

भदावरी के स्वरूप में बड़ा और कन्नौजी के मिश्रण के तीन रूप हैं :

1. ब्रज - बुन्देली का मिश्रण,
2. ब्रज- कन्नौजी - बुन्देली का मिश्रण,
3. कन्नौजी और बुन्देली का मिश्रण।

भदावरी की विशेषताएँ

1. 'ओ' संयुक्त स्वर के स्थान में प्रायः 'औ' का प्रयोग होता है। कहीं-कहीं 'औ' का भी प्रयोग होता है। यथा -मोड़ा-मौड़ा, उनखों-उनखौं यह ब्रज का प्रभाव है।

2. 'ए' के स्थान में 'ऐ' का प्रयोग।

यथा- किनारे-किनारै, घरे-घरै। यह ब्रज का प्रभाव है।

3. अनेक अकारान्त शब्दों का अंतिम वर्ण इकारान्त उकारान्त उच्चारित होता है।

यथा-जात-जाति, पौर-पौरि, घर-घरू, मात-मातु। ब्रज और कन्नौजी में यह वैशिष्ट वर्तमान है।

4. समीकरण की प्रवृत्ति। यह मध्य 'ए' युक्त शब्दों में परिवीक्षित होती है।

यथा- करदओ-कद्दओं, सुरति-सुत्ती, परदेस-पद्देस यह कन्नौजी व ब्रज की प्रवृत्ति है[67]।

5. 'ह' के विलुप्ति की प्रवृत्ति भदावरी में वर्तमान है।

यथा- कही-कई, हाथी-हत्ती।

6. कन्नौजी से संयुक्ताकार की प्रवृत्ति भदावरी में आई है। यथा -दिन डूबे डिंडूबे, चाकरन-चकान्न, प्रजा पज्जा।

7. कन्नौजी तथा शुद्ध बुन्देली की तरह कुछ शब्दों में 'न' के स्थान में 'ल' का उच्चारण होता है यथा-जनम-जलुम, हनुमान- हलुमान[70]।

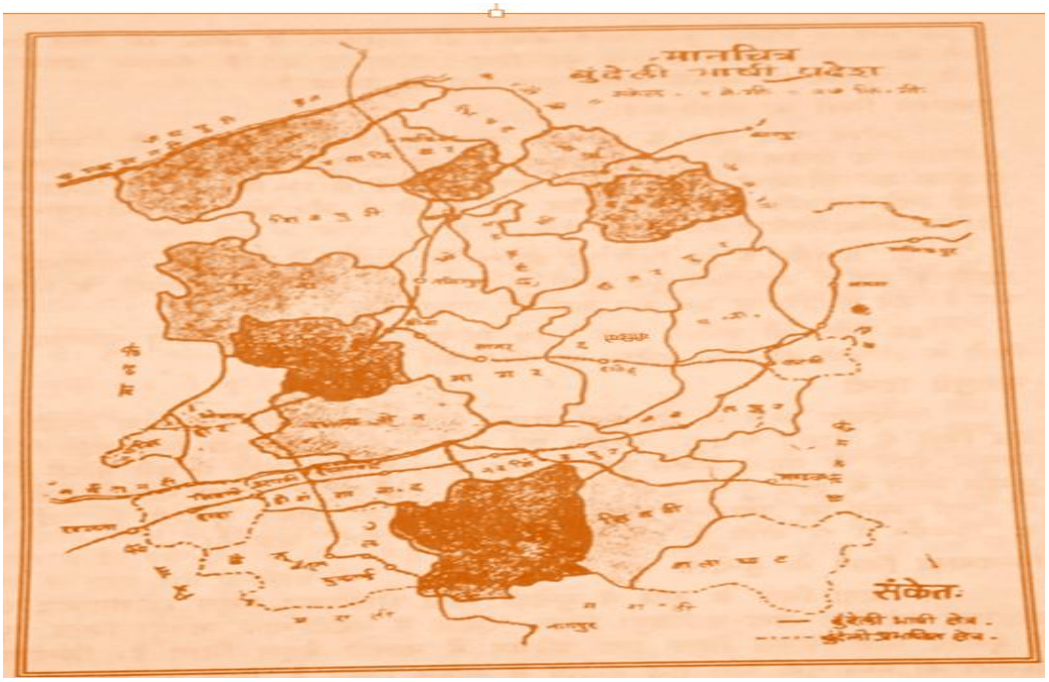
अन्य ध्वन्यात्मक विशेषताएँ सामान्य बुन्देली की तरह ही हैं। भदावरी की रूपात्मक विशेषताएँ भी प्रायः सामान्य बुन्देली की ही तरह है। भदावरी ध्वनयात्मक और रूपात्मक दृष्टि से सामान्य बुन्देली से बहुत कम भिन्न है यही अभिनता उसे बुन्देली की एक उप-बोली प्रमाणित करती है।

2. **दक्षिणी क्षेत्र के बुन्देली रूप**

विन्ध्याचल की उपत्यका और नर्मदा के कछार को पार कर , बुन्देली भाषी प्रदेश का दक्षिणी क्षेत्र आरम्भ होता है , जिसमें बैतूल, छिंदवाड़ा और सिवनी जिले स्थित हैं। इनके अतिरिक्त बालाघाट जिला भी दक्षिणी क्षेत्र में ही माना जाता है, किन्तु ये सभी जिले बुन्देली भाषी नहीं हैं[68]।

बैतूल जिले का बोली रूप

बैतूल जिला बुन्देली भाषी जिला होशंगाबाद के दक्षिण में है , जिसकी पूर्वी सीमा से छिन्दवाड़ा जिला , दक्षिणी सीमा से मराठी भाषी नागपुर तथा अमरावती



जिला आरम्भ होता है। सीमावर्ती प्रभाव का परिणाम स्पष्ट है। इसके उत्तरी सीमावर्ती भाग की बोली पर होशंगाबाद की बुन्देली का प्रभाव, पूर्वी सीमावर्ती भाग की बोली पर छिन्दवाड़ा की बोली का प्रभाव तथा दक्षिणी और पश्चिमी सीमावर्ती भाग की बोली पर मराठी का प्रभाव परिलक्षित होता है। इन प्रभावी भागों की बोलियों ने कुछ मिश्रित रूप धारण कर लिया है, किन्तु यह प्रभाव उनका मूल स्वरूप सर्वथा समाप्त न कर सका, केवल उसे विकृत करके ही रह गया। रसेल ने 'बैतूल - गजेटियर' तथा 'होशंगाबाद गजेटियर' में भी बैतूल जिले की जन-भाषा 'मालवी' बतलाई है। बैतूल जिले में फैले पँवार, किरार, हिन्दी भाषी कुनबी, रघुवंशी, तेली, कलार, लोहार, बढ़ई, नाई, धोबी, रंगारे आदि मालवी ही बोलते हैं, यद्यपि इनके द्वारा बोले जाने वाले मालवी रूपों में परस्पर कुछ अन्तर अवश्य है। उत्तरप्रदेश से आकर बसे गौली तथा जिले के उत्तरी सीमावर्ती क्षेत्र के कुछ हिन्दू परिवार ही ऐसे हैं, जिनकी पारिवारिक बोली में बुन्देली का मालवी | मिश्रित रूप देखा जा सकता है[69]।

बुंदेली साहित्य बुंदेलखंड क्षेत्र की वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह भाषा और साहित्य, दोनों ही शास्त्रीय में बौद्धों की संस्कृति को

प्रिय हैं। बुंदेली साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और लोक साहित्य शामिल हैं[73]।

9वीं शती विक्रमी से 13वीं शती विक्रमी तक छांदस की संस्कृत में अपभ्रंश के माध्यम से लोक भाषा में विकसित होना , एक घटना नहीं है , यह समय की आवश्यकता है। छंदस , प्राकृत संस्कृत और अपभ्रंश के खंडों पर कई विचार दिए गए हैं। छठी शताब्दी में अपभ्रंश का प्रयोग भाषा के रूप में होता है। 12वीं शताब्दी तक वह वैज्ञानिक भाषा सी रही है , क्षेत्रीय बोलियों से यह भी मुक्त नहीं बनी है। नव भारतीय आर्य भाषा का विकास मध्य देशीय शौरसेनी से माना गया है और अपभ्रंश के विकासोन्मुख रूप ग्रहण करते समय अहा की स्थिति मानी गई है। अवह का प्रयोग सबसे पहले अपभ्रंश के लिए हुआ है। अनेक जैन रचनाएँ, बौद्ध रचनाएँ, नाथ पंथियों की रचनाएँ आदि समाने आई हैं। सिद्धों ने जिस भाषा का प्रयोग किया वह लोक भाषा अधिक है। हिन्दी का प्रारंभिक नाम भाषा ही कहा गया है।

स्वरुप भाषा में अनेक परिवर्तन एवं समृद्धियाँ आयीं। पारंपरिक परंपरा से भी काव्य रचना हुई। यह लोक काव्य तक ही सीमित है। लिखित काव्यों में कथा काव्यों की भ्रमर रही है। इनमें प्रमुख कृतियाँ विष्णुदास लिखित रामायण कथा, महाभारत कथा, रुक्मिणी मंगल, स्वर्गारोहण कथा आदि ऐसी कृतियाँ हैं, नवीन भाषा काव्य की परंपराएँ प्रकाशमान हैं। काव्य के साहित्यिक भाषा मंच में जिन कृतियों को प्रस्तुत किया गया है वह स्थानीयता के कार्य से लाचारी मुक्त हैं। इसलिए किसी भी बोली सेमेटिक रूप से मेल पुस्तिका , व्यापक भाषा का स्वरुप प्रस्तुत किया जाता है।

मूर्तिपूजक पौराणिक आल्हाखंड का वैशिष्ट्य बुंदेली का अपना है। महोवा 12वीं शती तक कला केंद्र की चर्चा इस प्रबंध काव्य में है। इसकी प्रामाणिकता के

लिए न तो अन्तःसाक्ष्य ही उपादेय और न बर्हिसाक्ष्य। इतिहास में परमार्देदेव की कथा के कुछ अन्य रूप भी हैं लेकिन आल्हा खंड के राजा परमाल चंदेल एक वैभवशाली राजा हैं , आल्हा बनाफर और ऊदल बनाफर उनके सामंत हैं। यह प्रबंध काव्य सभी आदर्शों के बावजूद बुंदेली जन सामान्य की नीति और कर्तव्य का पाठ सिखाता है। बुन्देलखण्ड के प्रत्येक क्षेत्र में घनघोर वर्षा के दिन आल्हा जमता है[74]।

भरी दोपहरी सरवन गई, सोरठ गई आधी रात। अल्फ़ा पावे वादिन गाये , जा दिन रेशमी लगे दिन रात।

आल्हा भला ही नारियल परंपरा से आया है , बुंदेली भूमि संस्कृति और बोली का प्रथम महाकाव्य है , जगनिक इसकी रचयिता है। काव्य भाषा में बुंदेली बोली का सर्वोत्तम महाकाव्य स्वीकार किया जाना चाहिए। बुंदेली बोली और उनके साहित्य का समृद्ध इतिहास और भाषा काव्यकाल में उनकी कोई भी लिखित कृति उपलब्ध नहीं है।

कथा काव्य प्रबंध काव्य का ही एक भेद है जिसमें महाकाव्य के उपदेशों की हर बात शामिल है, लेकिन कथा सहज प्रवाह बिना किसी गहनता के गहनता के जीवन दर्शन से युक्त है। बुंदेलखंड में जगनिक के बाद विष्णुदास ही ऐसे हैं, चौदहवीं शती कवि ने दो कथा काव्य महाभारत कथा और रामायण कथा लिखी है। इन दोनों महाकाव्यों का आधार कृष्ण कथा और रामकथा है , जो उनकी निर्वाह की शैली में संस्कृत कथा काव्यों और हिन्दी कथाओं से भिन्न हैं। यह बुंदेली की प्रथम पुस्तक है। बुंदेली ब्रज की सहोदरा दीर्घकाल तक मनाई गई है। जब तक उनकी बुंदेली अस्मिता को वैभव से अक्रांत करने पर भी कोई नुकसान नहीं हुआ। बुंदेली माटी के कवि विष्णुदास की रचनाएँ कई

समय तक अज्ञात रहीं। जब बुंदेली समुद्र तट की रोशनी में आई तो उन्हें बुंदेली का मर्दव, ओज लालित्य एवं संस्कृति मूर्तिमान लेख मिला।

कवि ने युग की निजी को दोनों मित्रों के माध्यम से बातचीत की है और स्टॉकहोम में प्रकाश डाला गया है। महाभारत की रचना का समय 1435 ई. और रामायण कथा की रचना 1443 ई. सिद्ध हो जाता है. भाषा से विष्णुदास की कथा अत्यंत महत्वपूर्ण है। बुंदेली बर्तन ने जनभाषा में काव्य रचनाएँ प्रस्तुत कीं। कथा काव्य शैली में दोहा , सोरठा, चौपाई और छन्दों का प्रयोग अधिक है। यही बाद में भक्ति काव्य की भूमि का कार्य करते हैं।

समाज में अकर्मण्यता का स्थान उदासी और अकर्मण्यता की ओर भक्ति की प्रवृत्ति है। बुंदेलखण्ड में उस पवित्र धार के दर्शन नहीं होते जो भक्ति बुन्देलखण्ड में बहती है। यहां सभी प्रकार की पूजा-अर्चना का जोर चल रहा है। गोस्वामी तुलसीदास भी ऐसे ही भू-भाग से जुड़े हुए थे। प्रसिद्ध कवि रहीम भी बुंदेलखंड की संस्कृति के प्रति श्रद्धावान थे जो उनकी उक्ति थे चित्र में राम रहे रहिमन अवध नरेश। जा पर विपदा पड़त है सो आवत इहि देश।।

महाकविभद्र बल मिश्र अत्यंत असाध्य कवि हैं। इनमें प्रमुख हैं ग्रंथों में सिखानाख, भाषा-भाष्य, बलभद्री व्याकरण , हनुमानाष्टक टीका , गोवर्धन सतसई अधिक प्रचलित हैं। पिछले कुछ समय में ओरछा , पन्ना, छतरपुर, जयपुर, टीकमगढ़, दतिया और सागर केंद्र के रूप में उभरकर सामने आए। महाकवि केशव के पूर्व महाराज मधुकर शाह , पंडित हरिराम व्यास आदि बत्रा ने बुंदेली काव्यधारा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मधुकर शाह ″टिकैत' बुंदेलखंड की रक्षा में प्रसिद्ध हैं। कवि देशभक्त और धर्म प्रवर के रूप में उनका स्मरण अब तक किया जाता है। पंडित हरिराम व्यास मधुकर शाह को दीक्षा देने वाले गुरु, एक संगीतज्ञ, भक्त और साधक के रूप में मनाए गए। उनके

शिष्यों में राग माली, व्यास वाणी, राग पर्याची आदि बुंदेली और रीति सावेत का अद्भुत संगीत है।

केशवदास (संवत् 1612) इस काल के अन्य कवि हैं। समग्र तत्वों का आधार संस्कृत के ग्रंथ हैं पर कवि प्रिया , रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, वीरसिंह बुंदेला वचरित्र, विज्ञान गीता, रत्न वादनी और जहांगीर रसचंद्रिका में काव्य की व्यापक काव्य भाषा व्यावहारिकता और बुन्देल भूमि की संस्कृति रीति रिवाज भाषा प्रयोगों से काव्य बुंदेली के ही प्रमुख कवि हैं। रीति और भक्ति का समन्वित रूप केशव काव्य आद्योपांत है। रीतिवादी कवि ने काव्यप्रिया , रसिकप्रिया में रीति तत्व तथा विज्ञान गीता एवं अन्य रामचन्द्रिका में भक्ति तत्व को प्रत्यक्ष एवं सुपरमार्केट रूप में प्रस्तुत किया गया है। आचार्य कवि केशवदास ने बुंदेली गारी (लोकगीत) को प्रमुखता से अपने काव्य में स्थान दिया और सवैया में इसी गारीगीता को परिष्कृत रूप में रखा गया है। रामचन्द्रिका के सभी संवाद सेवकों में ऐसी संवाद योजना दुर्लभ है। बाज़ारों में केशव के संवादों का अर्थ बाज़ार से हो रहा है[72]।

वैद्य राय महाराज इंद्रजीत सिंह के दरबार में थे। महाराज इंद्रजीत स्वयं ″धीरज नरेंद्र″ उपन्यास से कविता करते थे। पं॰ गौरीशंकर डेयरी ने अपना समय सं. 1620 विक्रमी माना जाता है। मित्रता के समय कल्याण में मिश्र (विक्रमी सं.) 1635 काव्य रचनाएँ श्रेष्ठ माने गए हैं। ऐसे ही नाम बालकृष्ण मिश्र और गदाधर भ के माने गए हैं। बुंदेली के अनेक मुहावरों का प्रयोग बिहारी सतसई में है। बलभद्र मिश्र के पुत्र श्री शिवलाल मिश्र (सं. 1660) ने ठेठ बुंदेली के क्रिया मिश्र का प्रयोग किया है। इसी प्रकार स्वामी अग्रदास की कुंडली में शत -चित्र बुंदेली लोकोक्तियों को आधार बनाकर लोक संदेश दिया

गया है। रीतिभक्ति काव्य में सुंदर दास का ″सुंदर श्रृंगार″ प्रगटित है। होटल में थेठ स्थानीयता का प्रभाव दिखता है।

बुंदेलखण्ड में चम्पतराय बुंदेला के बाद महाराजा छत्रसाल बुंदेला ने स्वतंत्रता की मशाल जलाई। औरंगजेब ने छत्रसाल बुंदेला को फ़्लोरिडा फ़्लोरिडा ही वे और अधिक उभरते गए। स्वतन्त्र सत्ता की स्थापना छत्रसाल बुंदेला ने मुगल अधिकार के सभी शहरों, राज्यों में लूटा। अपनी धाक जमाते हुए एकछत्र राज्य बनाने के निगम में छत्रसाल बुंदेला ने किया विकट से मुकाबला। लालकृत 'छत्रप्रकाश' इसी प्रकार बुंदेलखंड राजा का काव्य इतिहास है। लाल कवि और ″भूषण' दोनों का लक्ष्य एक ही है। पूरी सदी के सांस्कृतिक क्षेत्रों में जागरुकता का परिचय है। भक्ति की मिश्रित काव्य धारा प्रच्छन्न रूप में प्रवाहित होती रही पर छत्रसाल बुंदेला , अक्षय अनन्य, गोरे ″लाल लाल' बक्षी हंसराज, हरिसेवक मिश्र आदि कण रीति की आस्था का समाज पर अनुकल प्रभाव पड़ा। प्रेममार्गी काव्यधारा में हरिसेवक मिश्र और सगुण कृष्ण भक्ति काव्य में बासी हंसराज के द्वारा मधुराभक्ति का प्रतिपादन हुआ[75]।

इस प्रकार है बख्तबली महाराजा ने चम्पतराय बुंदेला के युद्धों का वर्णन तो उनके पुत्र भानुभ (170 वि.) ने भी महाराजा छत्रसाल बुंदेला के युद्धों का वर्णन और राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार किया। मित्र के दूसरे पुत्र गुलाब भी इसी धारा के कवि थे। ″लाल' का प्रदेय इस काल में इसलिए अधिक है कि उन्होंने छत्रसाल बुंदेला को नायक के रूप में चित्रित किया है , उन्होंने सभी घटनाओं का चित्रण किया है , लाल के सिद्धांत को सिद्धांत नेवाक्य के रूप में युद्ध के रूप में लिया है।

धनि चम्पत के औत्रो पंचम श्री छत्रसाल। क्रोमोजोम शीशधारी कारि कहानी लाल।।

छत्रसाल बुंदेला स्वयं एक कवि भी रह रहे हैं। युद्ध कला और काव्यकला का अद्भुत मेल है। बुन्देलखण्ड के चरित-नायक बनकर वे महान कार्य में लगे रहे। इन बाद सं . 1712 वि. देवीदास में अक्षर अनन्य (1700 वि.) का नाम महत्वपूर्ण है। अक्षर अनन्य ने बुंदेली रीति -रिवाज, संस्कृति, कहावतों और मुहावरों को अपनी भक्ति , ज्ञान और वैराग्य की त्रिवेणी प्रवाहित करने पर आधारित काव्यभाषा को प्रस्तुत किया। उन्होंने कबीर की भाँति मानवधर्म का प्रतिपादन किया और समाज की बुराइयों को दूर करने में योगदान दिया। इसी प्रकार हरिसेवक मिश्र सं. 1720 ने प्रेममार्गी काव्यधारा में ″कामरूप कथा' के माधक से एकनिष्ठ प्रेम का संदेश दिया। देशी रियासतों में महाराज उदितसिंह के आश्रय में कृष्णमिश्र भाषा ने हितोपदेश , रामभूषण महोत्सु दपंन, विद्वान भेद आदि ग्रंथ लिखे। सागर के सुवेश कायस्थ ने हितोपदेश और मित्रमिलाप लिखा। बुंदेली मुहावरों और कंपनियों की उत्तम विचारधारा वाली कविताओं ने अपने संप्रदाय में काम किया है। इस समय के शासकों में महाराज उदितसिंह बुंदेला स्वामी एक कवि रहे हैं[76]।

कालपी के श्रीपति दतिया के जागीरदार, पृथ्वीसिंह बुंदेला रासनिधि, दतिया के रोहुंडा ग्राम के हरिकेश आदि मित्रों ने अपने काव्य से जनसमाज को अमूल्य कृतियाँ दी। हरिकेश की ″″जगतसिंह वल्लभ बुंदेलखंड के इतिहास की महत्वपूर्ण कृति है।

बक्षी हंसराज की तीन छोटू -मेहराज चारि सनेहसागर और विरहविलास में अंतिम दो ऐसी रचनाएँ हैं जिनमें सूर के समान वात्सल्य , विरहवर्णन, मधुराभक्ति और बुंदेली संस्कृति का दर्शन होता है। इसी काल में पद्माकर कवि के पिता मोहनभट्ट , कृष्णकवि सना ओरहा , गोपवि --रासनोदयी के दरबारी कवि--रूपनारायण मिश्र, खंडन कायस्थ दतिया, कविंद्र ज्ञानी जू, गुमानमिश्र-

–कविताकाल, ––बोधा कवि की कृति बुंदेली काव्य के इतिहास में अमूल्य मणि तकता है।

सांस्कृतिक उन्मेष काव्यकाल बुन्देलखण्ड की चातुर्दिक प्रतिभाओं का परिचय नहीं देता बल्कि बुन्देलखण्ड के विकास में योग देता है। इसके उपरी भाग में बुंदेलखण्ड में श्रृंगार काव्य काल आता है।

भक्तिकाल की समृद्धि वैभवशाली है तो रीति या भक्ति का पूरा उन्मेष बुन्देलखण्ड में ही हुआ है। आचार्य कवि केशवदास रीतिकाल के श्रेष्ठतम कवि माने जाते हैं। उनके बाद की धारा में पद्माकर –सं. 1810–खुमानकवि, ठाकुर, दामोदर देव, मंचित, नवलसिंह कायस्थ झाँसी, प्रताप साही चरखारी, पेजनेस पन्ना, गदाधर भट्ट, सरदार कवि ललितपुर, भगवन्त कवि पन्ना, ईसुरी, गंगाधरव्यास छतरपुर, पुजारीराम चरखारी, भगवन्त कवि पाना, ईसुरी, गंगाधरव्यास छतरपुर, प्रियाराम चरखारी, पुजारी आदि बुंदेली की मूर्ति को कई प्रकार से संजोया गया है.

पद्माकर के आते–आते– बुन्देलखण्ड के वे सौ वर्ष में रैना से इस भू –भाग में सांस्कृतिक उन्मेष का प्रवाह आया। छत्रसाल की मृत्यु के बाद समग्र बुंदेलखण्ड में छोटी–छोटी इकाइयाँ विभाजित हो गईं। इनमें से एक होड़ में वह शृंगार तक ही सीमित रही थी। अनेक राजाओं के आश्रय से प्रभावित होकर उनकी समस्त कृतियों में रीतिबद्ध साहित्य विशेष रूप से लोकतत्व से जुड़ गया। कदाचित् पद्माकर के द्वारा ही श्रृंगार का पिष्टपेषण भी बहुत चुकाया गया था, मूलतः वे रचनाएँ अधिक सुंदर बन पड़ें जिनमें लोक जीवन रहता है। इसलिए फाग साहित्य या ऋतुकाव्य अधिक आकर्षण बन पड़े हैं। पद्माकर ने बुन्देली संस्कृति, भाषा और जीवनदर्शन को ग्रहण रस से समन्वित करके प्रस्तुत किया है। जगत् विनोद, पद्माभरण, प्रबोधपचासा और गंगालहरी कृतियों में

उनकी प्रतिभा के दर्शन होते हैं। विरुदावली में वे सूक्ष्मजीवी नहीं फ्रोजन लोकतत्व समन्वित काव्य में फाग का एक आदर्श ढांचा है–

फाग की भौरें अरारै लै गाही गोविंद भीतर गोरी। ऐ कारी मन की पद्माकर ऊपर नई अबीर की झोरी। चैन पीताम्बर कम्मर तैं सुबिदा दई मीड़ कपोलन रोरी। नैन नाचै कहौ मुस्कै, इयो लला फिर खेलन होरी।।

इसी प्रकार गंगालहरी में ″सुधर सो हो तो मांग लेटो और दूजो कहूं /जातो बनखेती करी, खातो एक हर की में बुंदेली की अद्भुत छटा है। पद्माकर का अभिधामूलक चित्रण कभी–कभी इतना अधिक हो जाता है कि वह पदार्थ के स्तर पर पहुँच जाता है। फाग से पद्माकर ने भी एकाध के स्थान पर ऐसा अभिधामिक प्रयोग कर दिया है। पद्माकर बाद में पद्माकार काल के काव्यदेश में दिए की क्षमता नहीं रही। रूप सही , दामोदर देव, मंचासीन ने अलंकार और अभिनय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ओरछा नरेश तेजसिंह और सुजानसिंह के आश्रय में हैं। बाकी झाँसी की रानी (कविता) का पूरा इतिहास चेष्टा की तरह चित्रित किया गया है। पेजेरा का कृतित्व एवं व्यक्तित्व उनका ″पजनेस लाइट″ है।

पद्माकर के प्रपौत्र गदाधर भट्ट, सरदार, भगवंत कवि, कवि बुन्देलखंड के ऐसे हैं शोभा छिटपूत अनमोल में ही दिखाई देती है अपनी प्रतिभा।

प्रयाग काव्य काल के देवता के संबंध में यह कहा गया है कि मुगल काल के शासकों के विरोध में छोटे–छोटे देशी राज्य उठ खड़े हुए थे। रीतिकालीन कवि ने मासूमियत के साथ एक सदी तक जीविका की कमाई और बहूमूल्य कृतियाँ दी। सांस्कृतिक उन्मेष का सारा कार्य छत्रसाल के मंच से हटते ही प्रिय – समाप्त हो गया। यह कहते हुए कि काव्य की चरम सीमा धोर श्रंगारया में

हुई। कुछ चिकित्सकों ने अल्बत्ता लक्षण ग्रन्थों का निर्माण किया। पद्माकर , प्रतापसिंह, नवलसिंह, कायस्थ आदि के काव्य में स्वस्थ श्रृंगार प्रकट हुए। सभी काल के प्रमुख रस श्रृंगार ही रह रहे हैं वीर और शांत रस को भी अभिव्यक्ति मिली। देश की राजनीतिक स्थिति और अर्थव्यवस्था ने बुंदेलखंड के लोगों को भाग्यवादी सामंताश्रित और अधिक बनाया। की दृष्टि भाषा से निश्चित ही अच्छा प्रयोग हुआ। बुंदेली अध्येताओं के लिए अठारहवीं –उन्नीसवीं विक्रमी का विशेष महत्व है क्योंकि इस समय के पुस्तकालय की स्थानीय भाषा में ही अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत की जाती है।

दार्शनिक काव्य की रुझान प्रारंभिक दशकों तक ही सीमित रही है। इसी समय सन् 1857 की गदर की भूमिका स्वतंत्रता संग्राम के लिए उत्तरभारत और बुंदेलखण्ड के वीरों ने अनेकों बलिदान दिये। इस बलिदान में व्यक्तिगत भूमिका का होना –होना राष्ट्रीय महत्व का हो गया। परदे की रानी , नाना साहब, तात्या टोपे, नवाब बंदा आदि ने एक झंडे वाले स्टेक क्रांति का बाना पहनावा बनाया। उनके आदर्शों में बख्तबली, मर्दनसिंह जैसे क्रांतिवीरों के नाम लिये जाते हैं। अंग्रेजी शासन क्रांति–धीमे की स्थापना हुई और नया प्रांत बना। बुन्देलखण्ड उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में विभाजित हो गया। संवत 1900 से 195 तक विक्रमी की कृतियों का पूरा लेखाजोखा –जोखा तक नहीं मिल पाया क्योंकि क्रांति के प्रयास में ये कृतियाँ काल के गर्त में समा गईं। कुछ का पता चला जो अब शनैः–शनैः सामने आ रही है[77]।

आधुनिक काल में चार प्रकार के कवि मिलते हैं। प्रथम वर्ग में कवि आते हैं भूतकाल के पात्रों को आधार बनाते हैं तथा संस्कृति , धर्म, राष्ट्रपरक रचनाएँ करते हैं। द्वितीय वर्ग के बर्तन ने आधुनिक वैयक्तिक एवं स्वातंत्र्योन्मुख पृथक्करण को ठेठ बुंदेली में प्रस्तुत किया। तृतीय वर्ग के श्लोक ने स्फुट छंदों

में काव्य रचनाएँ प्रस्तुत कीं। समस्या यूक्रेनी साहित्य से विरासत में मिली। चतुर्थ वर्ग में लोककाव्य शैली विपरीत वाले ने ग्रामीण जीवन को प्रस्तुत किया।

प्रथम वर्ग के बर्तन ने ब्रज और बुंदेली के साथ खड़ी बोली के शब्दों का प्रयोग किया। बाकी सभी मिश्रित भाषा में काव्य लिखित उच्चारण से वे कृतियों को बुंदेली में ही बोलते हैं।

दूसरे वर्ग की भाषा ने भाषा, लोक संस्कृति, लोक जीवन, लोक विश्वास आदि सभी को बुंदेलखण्ड की भाषा में जीवित रखा है। तीसरे वर्ग के तत्व में मूलतः खड़ी बोली और ब्रज का प्रयोग अधिक है। ये बुंदेली के शब्द अनायास आ गए हैं। ये बुंदेली संस्कृति और माटी से दूर नहीं जा पाए हैं। चौथे वर्ग के काव्य की रचनाएँ लोककाव्य की प्राण हैं। इनमें से अधिकांश में वैली, फ़ागेन, भजन और धार्मिक गीत अधिक लिखे गए हैं। समग्र व्यक्तित्व का परिचय उनकी प्रकृति के आधार पर इस प्रकार है। मदन मोहन ″डैमडनेशाद' रासो-काव्य परंपरा में ″″लक्ष्मीबाई रासो जैसी अमूल्य कृति प्रस्तुत करते हैं। डॉ . भगवानदास माहौर के सानिध्य से प्रकाश में आई। चौधरी , पं. जानकी प्रसाद प्रसाद, शिवसहाय चौधरी , रामचन्द्र टैगोर , घासीराम व्यास आदि अनेक चिकित्सकों की कृतियों में सीमांत की सामाजिक , सांस्कृतिक एवं राजनीतिक गहराई का परिचय दिया गया है।

लोक संस्कृति के चित्रकारों में शोभा काव्य काल के अवसान पर ईसुरी , सत्यराम और गंगाधर का नाम सामने आया , फाग साहित्य को अत्यंत समृद्ध बनाया गया। उनके बाद रामचरण हयारण मित्र , हरिप्रसाद ″हरि' , गौरी शंकर मंदिर ″शंकर' , द्वारिकेश, संत पादरियों सुधाकर शुक्ल शास्त्री , पं. बौद्ध प्रसाद ज्योतिषी, शंभू पंडित ″बृजेश' , भैयालाल व्यास, लक्ष्मीनारायण पथिक,

चतुर्भुज मठ, रथ प्रसाद गुरु, राम प्रसाद गुरु, राम प्रसाद गुरु आदि अनेक मंदिरों ने नए विषय, नीति ओर संस्कारों के साथ बुंदेली माटी और देश का गान किया। बुंदेली संस्कृति, जनजीवन और काव्य धारा में आस्था विलम्ब से योगदान हुआ।

विक्रम की बीसवीं शताब्दी में बुंदेली और अन्य बौद्धों में स्थानीय बोलियों के साहित्य की विपुल राशियाँ दृष्टिगत होती हैं। सागर वि .वि. बुंदेलीपीठ से डॉ. बलभद्र तिवारी ने बुंदेलीपीठ के तीन ग्रंथों का प्रकाशन किया जो प्राचीन और नवीन काव्य धाराओं की शृंखला में काम करते हैं। आधुनिक काव्य -धारा का परिचय बुंदेली काव्य परंपरा भाग 2 --आधुनिक काव्य--में दर्शाया गया है। बुंदेली के उन बर्तनों को इस कृति में स्थान दिया गया है जो 1900 के दशक के बाद बुंदेली जनजीवन को चित्रित नहीं करते बल्कि राष्ट्रीय एवं सामाजिक परिवेश के प्रति जागरुक हैं। हिंदी साहित्य भाषा में डोम युग की अवसान बेला में पं. रामनरेश त्रिपाल और विदेशी भाषा के रचनाकारों ने प्रादेशिक, संस्कृति और साहित्य पर विशेष ध्यान दिया है।

छायावाद युग के साथ राष्ट्र प्रेम की मॉडल का विशेष उफान आता है। बुन्देलखण्ड के मुंशी रामदीन खरे, नरोत्तम दास पाण्डे ″मधु' भावधारा की रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं। सन् 2020 में जलवाला बाग का काण्ड। ब्रिटिश सरकार की नीति के विरोध में शाय्यराम व्यास, मीयाथ हुआ रामायण, मीया, राव ठाकुरदास, नाथूराम चतुरेश पारासर, नन्दराम शर्मा आदि ने कई कविताएँ लिखी हैं। एक अन्य धारा में गौरीशंकर शर्मा, जानकी कृष्णा, सुखराम ठाकुर, रामचन्द्र गोस्वामी, शिवसहाय सिक्योरिटी, लोकनाथ सिलाकारी, सुधाकर शुक्ल शास्त्री, अति प्रसाद ज्योतिषी कवि जैसे लोग आते हैं जो समाज और संस्कृति के विभिन्न सिद्धांतों पर विचार करते हैं, साथ ही राष्ट्रीय उद्‌बोधन के गीत भी सिखाते हैं।

इसी समय का लोक साहित्य फाग से अनुप्राणित कथा सामने आती है। इंसुरी, प्रियाराम, गंगाधर व्यास के सीवी अनेक स्फुट छंद वाइस चांसलर ने समसामयिक आंदोलन को अपना मत घोषित कर दिया है।

एक अन्य वर्ग व्यापक काव्य भाषा अपनाकर भी बुंदेली के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाता है। इसमें डॉक्टर लक्ष्मी प्रसाद ″राम', गौरीशंकर मंदिर ″शंकर', हरगोविंद गुप्ता, बालमुकुंद पिज्जा, रामलाल बरानिया ″द्विजदीन', गौरीशंकर पांडा, सैय्यद मीर अमीर अली ″मीर', नाथूराम और प्रेमी उनके सहयोगियों का नाम विशेष है। सारतः बुंदेली काव्य आधुनिक काल में चार प्रकार के काव्य मिलते हैं।

1. अतीत के चरित्रों को आधार रचित रचनाएँ, परंपरा वाले संस्कृति-धर्मी और देशभक्त कवि।
2. आधुनिक निजी के बुन्देली में कवि वाले कवि।
3. छिटपुट विषयों पर अल्प कृति वाले कवि।
4. लोक काव्य शैली के रचयिता कवि।

कुल मिलाकर आधुनिक काल के पूर्वार्ध में जानकी प्रसाद मंदिर , शिवसहाय चौधरी, रामचन्द्र टैगोर, हरिप्रसाद हरि लोकनाथ मंदिर सिलाकारी , संत ब्रजेश, रामचरण हयारण मित्र , सुधाकर शुक्ल शास्त्री और किशोर प्रसाद ज्योतिषी प्रमुख हैं। सैद्धांतिक रचनाएं समस्याग्रस्त शैली से प्रारंभ आधुनिक युग की समस्याएं तक केंद्रित हैं। ये बुन्देलखण्ड के जन -जीवन की बोली और बुन्देली दोनों में चित्रण करते हैं। अखंड बुंदेली में काव्य रचना करने वालों में संतोषसिंह, अज़ाब, बाबूलाल खरे, माधव शुक्ल, दुर्गेश, गुणसागर, लक्ष्मी प्रसाद गुप्ता, नीरज जैन आदि हैं। इन काव्यों में ग्राम्य जीवन , प्राकृतिक समष्टि और देहाती विपक्ष के चित्र आते हैं।

बुंदेली के नवीन वैद्यों के प्रतिनिधि भैयालाल व्यास ″विंध्य कोकिल’, चतुर्भुज चतुरेश, शर्मनलाल जैन ″पथिक’, रतिभानु तिवारी तेज ’कंज’, भगवान सिंह गौड़, शंभु स्वामीश्री ″ब्रजेश’, रामकृष्ण पैंडेय, गोरेलाल साहू, महेश कुमार मिश्र ″मधुकर’, जीजा बुंदेलखंडी, कैलाश मड़वैया, प्रकाश मड़वैया, प्रकाशेंद्र सिंह ″नागर’ सनी सिंह बुंदेला , अयोध्या पंडित, द्रोपदी प्रसाद अग्रवाल , त्रिमूर्ति अग्रवाल आदि करते हैं।

कुल मिला कर बुंदेली काव्य की एक निश्चित परंपरा है जो पिछले सात सौ वर्षों से अब तक जारी है। इसमें हिन्दी की समर्थ बोली का साहित्य है। मूल रूप से यह देखते हुए कि हमें कोई भी वैज्ञानिक भाषा का गौरव नहीं दे सकता है.

बाल्मीकि तुलसी केशव ने कविता रच दी प्यारी।।
इतै फूल रही आदि काल से काव्य कला की क्यारी।।
राष्ट्रकवि को सुघर लेखी भाषै रूप निखारै।
वीर भूमि बुन्देलखण्ड खों सगरो देश निहारे।।
चन्द्रसाखी चक्रमण, पद्माकर भाषा के उजियारे।।
लोक रागिनी प्राण ईसुरी बुंदेली के तारे।।
राय प्रवीण वीण कविता की प्यारी बोल उचारे।।

रतिभान सिंह ″कंज’ प्रेम व्यास, रसिकेन्द्र, गुणाकर, लाल विश्वनाथ मीर से कवि। काव्य कला कामना दिवाकर अमर कर गया नाम।।

प्रांत यह है गुणियों का धाम , कृष्णदास, दिग्गज रतनलाल परम कवि नारा। अंबुज, काली, नंद कुमार , नवल सिंह , पजनेश हुए थे मंचित , द्विज, अविनाश।

बुंदेलखण्ड में कवि इसलिए अधिक पाए जाते हैं कि यहाँ की प्रकृति सौन्दर्य अद्‌वितीय है। –कृष्ण कान्त अन्तर्राष्ट्रीय

वामदेव, सनकादि आदि महाऋषियों की तप स्थली हैं , महाकवि वाल्मिकी, तुलसी की कलम चलाये हैं। ज्ञानी, वेदव्यास कृष्ण द्‌वेपायन कुल केशव, शेष बिहारी, कवि पद्माकर, रत्न का बीता वैभव। जगनिक की वाणी में आल्हा ऊदल का शौर्य समर जागा, भभूति कलाधर, वेदव्यास संस्कृत का काव्य यात्रा जागा।

महाराजा छत्रसाल बुंदेला के समय में जहां बुंदेलखंड को ″इत जमुना उत नागालैंड, इत चम्बल उत टोंस ″ से जाना जाता है , इंदौर क्षेत्रीय दृष्टि जनजीवन, संस्कृति और भाषा के संदर्भ से बुंदेलखण्ड क्षत्रियों के वैभवकाल से जुड़ा हुआ है। बुंदेली इस भू –भाग की सबसे अधिक व्यवहारिक में आने वाली बोली है। पिछले 700 वर्षों से इसमें सात्त्विक साहित्य रचना हुई। बुंदेली काव्य की विभिन्न साधनाएँ , कलाकार और आदि का परिचय भी है। कवरू का आधार बुंदेलखंड की नदियां , पर्वत और उसके वीरों को बनाया गया है। बुन्देलखण्ड काव्य के कुल सात युगों पर आधारित विभिन्न प्रवृत्तियों और अभिलेखों का अध्ययन किया जा सकता है , जिसमें निम्न स्तर से अध्ययन की सुविधा शामिल है।

वर्तमान चेदि, दशार्ण एवं कारुष से यात्रा थी। यहां पर अनेक जनजातियां निवास करती हैं। इनमें से कोल , निशाद, पुलिन्द, किराड, नाग, सभी की अपनी स्वतंत्र भाषाएँ थीं , जो स्टॉक एक्सचेंज की माध्यम थीं। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में इस बोली का उल्लेख प्राप्त होता है। शबर , भील, चांडाल, सजर, द्रविड़ोद्भवा, हीना वने वर्णम् व विभाषा नाटक स्मृतिम् से बेनाफ़री का अभिप्रेत है। संस्कृत से भाषा प्राकृत एवं अपभ्रंश सागर का विकास हुआ। इन

देशज शब्दों की बहुलता थी। हेमचंद्र सूरी ने पामरजोन में नमूना प्राकृत अपभ्रंश का व्याकरण दशवी शती में लिखा। मध्यदेशीय भाषा का विकास इस काल में हो रहा था। हेमचन्द्र के कोष में विन्ध्यग्येली के अनेक शब्द निघण्टु प्राप्त हैं[66]।

बारहवीं सदी में दामोदर पंडित ने 'उक्ति व्यक्तिगत प्रसंग' की रचना की। इसमें पुरानी अवधी और शौरसेनी ब्रज के अनेक शब्दों का उल्लेख है। इसी काल में (अर्थात एक हजार ईस्वी में) बुंदेली पूर्व अपभ्रंश के उदाहरण प्राप्त होते हैं। देशज शब्दों की बहुलता थी। किशोरीदास लिपि लिखित हिंदी शब्दानुशासन के अनुसार हिंदी एक स्वतंत्र भाषा है, उसकी प्रकृति संस्कृति और अपभ्रंश से भिन्न है। बुंदेली की माता प्राकृत शौरसेनी और पिता संस्कृत भाषा है। दोनों लहरों में जन्मने के बाद भी बुंदेली भाषा की अपनी चाल, अपनी प्रकृति और वाक्य रचना को अपनी मूल शैली है। हिंदी प्राकृत की गहरी संस्कृति के निकट है।

ईसा की प्रथम सहस्त्राब्दी के सभी काल में ईसा की प्रथम सहस्त्राब्दी और उसके पूर्व सहयोगी के रूप में पुराविद्देशीय भाषा का प्रभुत्व रहा। नाथ और नाग पंथों के सिद्धों ने जिस भाषा का प्रयोग किया, उसका स्वरूप अलग-अलग-अलग-अलग जिलों में अलग-अलग था। वह देशज प्रधान लोकभाषा थी। इसके पूर्व भी भवभूति उत्तर रामचरित केग्रामीणों की भाषा विन्ध्यमयेली प्राचीन बुंदेली ही थी। संभावित चंदेल नरेश गांडदेव (संवी 940 से 999 ई.) और उनके उत्तराधिकारी विद्याधर (99 ई. से 3025 ई.) के काल में बुंदेली के प्रारंभिक रूप में महमूद गंजन की स्तुति की कतिपय पंक्तियाँ लिखी गईं। इसका विकास रासो काव्य धारा के माध्यम से हुआ। जगनिक की आल्हाखंड तथा परमाल रासो पौरूध भाषा की रचनाएँ हैं। बुंदेली के आदि कवि के रूप में

प्राप्त सामग्री के आधार पर जगनिक एवं विष्णुदास सर्वमान्य हैं, जो बुंदेली के सभी सेवकों से मंडित हैं।

जो बोली पन्ना, सागर, जैन आदि में बोली जाती है वह 'ठेठ' है और जो विदिशा, रायसेन, किआंगाबाद में बोली जाती है वह 'क्षेत्रीय बुन्देलखण्डी' कहलाती है।

उत्तर प्रदेश में स्थित जौनपुर में भी बुंदेली भाषा का शब्द वैविध्य है। जिला जालौन की बुंदेली हिंदी की चोटी बोली के अधिक निकट है। बातचीत में होने वाली बातचीत में ज्यादातर शब्द शामिल हैं, जबकि जापानी जिले के ग्रामीण क्षेत्र की बोली पर मध्य प्रदेश की सीमा का प्रभाव है। ऐसी ही एक ललितपुर की बोली है। सबसे पहले सुनने पर आपको कुछ कठोर लग सकता है, दूसरा वह अपनी बात कहने का तरीका है। जैसे कि मुरैना क्षेत्र की बोली में कुछ कर्कशताएं दिखती हैं, जो वास्तव में होती नहीं हैं।

बुंदेलखंड की पाटी पद्धति में सात स्वर और 45 व्यंजन हैं। कातंत्र व्याकरण ने संस्कृत के सरलीकरण प्रक्रिया में सहयोग दिया। बुंदेली पट्टी की शुरुआत ओना मासी घ मुख पाठ से शुरू हुई। विदुर नीति के श्लोक विनायके और चाणक्य नीति श्लोक विनायके के रूप में याद दिलाए गए थे। वणिक प्रिया के गणित के सूत्र रटाए जाते थे। नमः सिद्ध मने ने श्री गणेशाय नमः का स्थान ले लिया। कायस्थों और वैश्यों ने इस भाषा को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया, उनकी लिपि मछलिया निम्न मात्रा में थी। स्वर बाया से अक्षर और मात्रा ज्ञान समझाया गया। चला चला बिज़न वखों आई, कान से आई का लाई... वाक्य वाक्य मूल बातें। प्राचीन बुंदेली विन्ध्यगोयली की कलापी सूत्र कालपी में प्राप्त हुए हैं[79]।

बुंदेली साहित्य एवं संस्कृति का अतीत काफी समृद्ध है। यहां के कई वैज्ञानिकों ने देश में ऊंची पहचान बनाई है। इन साक्षियों के वैभव के संकलन से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हिंदू धर्म और समाज के सबसे पवित्र धार्मिक ग्रंथ रामचरित मानस की रचना बुंदेलखंड की धरती पर ही की गई है। गोस्वामी तुलसीदास ने इस धार्मिक ग्रंथ की रचना की। कालपी में महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना की , जिसमें अवतरित गीता भी भाषाओं का पवित्र ग्रंथ है। बुंदेलखण्ड में गणितज्ञ मैथिलीशरण गुप्त का जन्म हुआ , जिसमें राष्ट्रकवि की उपाधि दी गई। महाकवि केशव , उपन्यासकार सम्राट वृंदावन लाल वर्मा, पद्माकर, लाल बिहारी, श्रीपति, मंकी अजी, गंगाधर व्यास जैसे कवि-साहित्यकार और इंदीवर , निदा फ़ाज़ली और ताबाँ झाँवी जैसे बड़े शायरों और इलिफ़ल्मी लेखकों ने बुन्देलखण्ड को अलग पहचान दी। इन साज़िशों ने बुंदेली माटी को तो विश्व पटल पर प्रकाशित किया , लेकिन अधिकांश रचनाएँ हिंदी-हिन्दुस्तानी, खड़ी बोली या अवधि भाषा में रचित थीं , जबकि महाकवि ईशुरी ने बुंदेली भाषा को जहाँ दिया था। यहां के उत्सव , तीज-त्यौहार और लोक नृत्य भी विशिष्ट पहचाने जाते थे , लेकिन सरकारी अनदेखी और ग्वालों ने कभी बुंदेलखंड के समृद्धशाली साहित्य और संस्कृति को नजरअंदाज कर दिया। बुंदेली कलाकारों की खोज -परख ख़त्म हो गई , जबकि बुंदेली भाषा गाँवों की पुनर्रचना में बदल गई। बुंदेलखंड साहित्यिक महोत्सव सोसायटी एवं बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा बुंदेलखंड साहित्य महोत्सव बुंदेलखंड साहित्य एवं लोक संस्कृति के नए आयामों का आयोजन किया गया। 28 फरवरी से 1 मार्च तक चलने वाले इस 3 दिव्य महोत्सव में विश्वनाथ से आने वाले विद्वान हिंदी और बुंदेली संस्कृति और साहित्य के उद्वेलन पर मंथन करेंगे। कलाकारों को मंच उपलब्ध है , जहां वे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकेंगे[80]।

बुंदेली साहित्य की विशेषताएँः

लोक–साहित्यः बुंदेली साहित्य में लोकगीत , लोककथाएँ और लोकनृत्य जैसे लोक साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। ये बुंदेली संस्कृति और सभ्यता को प्रिय हैं।

कविताः बुंदेली में कई प्रसिद्ध कवि हुए हैं , जैसे कि तुलसीदास , केशवदास, पद्माकर आदि। उनकी कविताएँ बुंदेली भाषा और संस्कृति से समृद्ध हैं।

उपन्यास और कहानी : बुंदेली साहित्य में कुछ उपन्यास और कहानियाँ भी लिखी गई हैं, जो कि बनारस के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को महत्व देते हैं।

नाटकः बुंदेली साहित्य में नाटक भी लिखे गए हैं, जो खंड के ऐतिहासिक और सामाजिक सिद्धांतों को समर्पित हैं।

भाषाः बुंदेली भाषा हिंदी की एक प्रमुख बोली है , जो बोलियों में बोली जाती है। यह साहित्य भाषा और कला के लिए भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

बुंदेली साहित्य के कुछ प्रमुख रचनाकारः

तुलसीदासः रामचरितमानस की रचयिता और बुंदेली साहित्य की महान कविता।

केशवदासः एक महान कवि और दार्शनिक, रचनाएँ बुंदेली भाषा में हैं।

पद्माकरः बुंदेली भाषा में एक प्रसिद्ध कवि और दार्शनिक, रचनाएँ हैं।

वृन्दावनलाल वर्मा : एक प्रसिद्ध उपन्यासकार , अनगिनत के ऐतिहासिक और सामाजिक जीवन को उनके उपन्यासों में संग्रहित किया गया है।

मैत्रेयी पुष्परा : एक प्रसिद्ध उपन्यासकार , बेचैन के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को उनके उपन्यासों में संग्रहित किया गया है।

बुंदेली साहित्य का महत्व:

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण : बुंदेली साहित्य अकादमी की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में मदद मिलती है।

भाषा का विकास: बुंदेली साहित्य बुंदेली भाषा के विकास में मदद करता है।

शास्त्रज्ञ योगदान : बुंदेली साहित्य हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है।

निष्कर्ष: बुंदेली साहित्य शास्त्र की शास्त्रीय और सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह भाषा और साहित्य , दोनों ही शास्त्रीय में बौद्धों की संस्कृति को प्रिय हैं। बुंदेली साहित्य को संरक्षित और बढ़ावा देने के प्रयास की आवश्यकता है।

5. डॉ.गौरीशंकर उपाध्याय जी का योगदान

बुंदेलखंड की बोली बुंदेली को एक स्वतंत्र भाषा की पहचान दिलाने के लिए प्रयास लगातार जारी है. बुंदेली के लिए काम करने वाले रचनाकार और साहित्यकार इस दिशा में लंबे समय से मेहनत कर रहे हैं. अब युवाओं को बुंदेली से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है. बुंदेली के बड़े साहित्यकार डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल' ने भी बुंदेली शब्दकोष और बुंदेली के मुहावरे और लोकोक्ति को एक पुस्तक में संकलित किया है. उन्होंने अपनी यह पूरी मेहनत अब युवाओं को सौंप दिया है।

डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय "सरल" ने बुंदेलखंड विश्वविद्यालय में बने बुंदेली वीथिका में अपनी सभी पांडुलिपियों को भेंट कर दिया है. उन्होंने बताया कि बुंदेली बोली लुप्त होती जा रही है. युवा इस भाषा और बोली का महत्व समझ सकें इसके लिए बुंदेली शब्दकोष और मुहावरे को एकत्रित किया है. इन सभी को युवा पढ़ सकें और इसे समझने का प्रयास करें यही उनका उद्देश्य है. उन्होंने कहा कि बुंदेली वीथिका एक सार्थक प्रयास है[82]।

युवाओं को मिलेगा लाभ

भाषा और साहित्य के सवाल विषयनिष्ठ होते है।उनके किसी पक्ष पर सर्वसम्मत निष्कर्ष देना अत्यंत कठिन है। रचनाकारों के इतिवृत्त से जुडे जन्म एवं पुण्य तिथि; जन्म स्थान इत्यादि स्थूल तथ्य हों या उनके कृतित्व से जुडे गंभीर प्रश्न हों—उनके सीधे-सपष्ट और प्रत्यक्ष उत्तर भी कई बार विद्वानों; साहित्य-अध्येताओं और पाठकों को संतुष्ट नहीं कर पाते है।इसका प्रमुख कारण यह है कि साहित्य जैसी कलाओं में व्यक्तिगत अभिरुचियों की गुंजाइश सबसे ज्यादा होती है। इन सब जोखिमों के बाद

भी हम हिंदी साहित्य के वस्तुनिष्ठ इतिहास के साथ साहित्य-मर्मज्ञों और हिंदी विषय लेकर आजीविका अर्जित करने की इच्छा रखनेवाले विपुल युवा समाज के सम्मुख उपस्थित है।

प्रस्तुत इकाई में हिन्दी साहित्य के इतिहास-दर्शन और साहित्य की उपादेयता पर विचार किया जा रहा है। साहित्य क्या है? साहित्य की प्रथम प्रतिबद्धता सृष्टि की संवादशीलता को चेताए रखने की है। वह अलाव की भांति फूस फास इकट्ठा कर जलाता ही रहता है। और वह आमंत्रण देता है। सम्पूर्ण मानवता को। वह अनबोल को भी बुलाता है आओ और अपने अन्दर की वेदना को, अपने अन्दके के कौतूहल को अभिव्यक्ति दो। साहित्यकार आपसी उष्मा को बाटता है। वह मनुष्य से पहले प्रतिबद्ध है सृष्टि से। सृष्टि के क्षण को विश्रृखलित करने वाल क्रोचबध के उपर आक्रोश से पहली काव्यपंक्ति फूटती है। अभिशाप के रूप में, जाने कब तक तुम्हारे ऊपर इस अपराध की छाया रहेंगी। साहित्य भाषा है। वह चुप नहीं रहता। प्रश्नों को अपने ढंग से छेड़ाता है। प्रतिकूल परिस्थिति में नए नए ढंग से। इसलिए साहित्य का अपना प्रयोजन होता है। दूसरा प्रश्न उठता है कि क्या इसका भी कोई इतिहास है? इतिहास को देखने की हमारी दृष्टि क्या है? क्या इतिहास वर्तमान को प्रभावित करता है या वर्तमान भी इतिहास को पुनःपरिभाषित करता है। आज हम जिस साहित्य को पढ़ रहे है वह क्या किसी वैज्ञानिक दृष्टि से गुजरकर हमारे सामने आया है। वस्तुतः हिंदी साहित्य का अपना इतिहास है। विद्वान आचार्यों द्वारा समय-समय पर इसमें अपनी स्थापनाएँ दी गई हैं जिसे तथ्यों के स्तर पर प्राप्त निष्कर्षो को नही बदला जा सकता। यह न तो उचित है और न ही संभव । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के पूर्व भी अनेक विद्वानों ने इस पर कार्य किया है, किंतु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ में पूर्व से किये

कार्य के साथ अपने काल की परिस्थिति को समेटते हुए ही हमारे समाने एक विस्तृत इतिहास क्रमबद्ध किया है। किंतु आचार्य शुक्ल के इतिहास को लिखे लगभग नब्बे वर्ष से अधिक हो रहा है। फिर तब से आज तक काफी कुछ कार्य हुआ है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, संस्थाओं तथा अन्य स्त्रोतों से विगत वर्षों में हिंदी साहित्य का काफी विकास हुआ है, जिसके परिणाम हमें प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं, शोध-आलेखों में प्राप्त होते है।खासतौर पर 1980 के बाद इस पर काफी कार्य हुआ है जिसे आधार बनाकर अध्ययन करना आज की आवश्यकता है। यहाँ इन्ही प्राप्त तथ्यों, तर्को के आध् गार पर अध्ययन किया जावेगा[81]।

वेदकालीन भाषा का संशोधित स्वरूप संस्कृत में स्थिर हुआ, किंतु जन-साधारण की भाषा प्रगति-गामिनी होकर पाली में परिवर्तित हो गई। पाली प्राचीन प्राकृत का उन्नत रूप था। पाली की परिपक्वता पर लोक-भाषा (प्राकृत) फिर आगे चली और तीन धाराओं में प्रवाहित होने लगी-प्राचीन, मध्यकालीन और उत्तरकालीन। यह साहित्यिक प्राकृत चार मुख्य भागों में विभाजित हो गई-महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी और अमागधी। इन प्राकृतों में भी जब गंभीर साहित्य का सर्जन होना प्रारंभहो गया, तथा व्याकरण की श्रृंखलाओं में ये कस दी गई तब लोक-भाषा की विभिन्न धाराएं, जो स्वाभाविक रूप से अग्रसर होरही थी, 'अपभ्रंश' कहलाने लगी। अपभ्रंश के तीन प्रमुख रूप थे-नागर, ब्राचड और उपनागर। अपभ्रंशो में नागर अपभ्रंश अधिक महत्वपूर्ण थी। सुप्रसिद्ध जैन आचार्य हेमचन्द्र ने नागर अपभ्रंश को अपनाकर इसकी मान्यता बढ़ाई। किंतु काव्य-क्षेत्र में इसके दो रूप निधारित हुए-डिंगल और पिंगल। राजस्थान और ब्रज की साहित्यिक भाषा का नामकरण क्रमशः डिंगल और पिंगल हुआ। यहीं से हिन्दी का आविर्भाव हुआ। इतिहासकारों ने इसका जन्म विक्रम संवत् 700 माना है। ऐसे एक

लम्बे अंतराल से गुजरती यह भाषा साहित्य आज अपने बदले कलेवर में प्राचीन को सम्हाले और वर्तमान को सवारते हमारे सामन है। उसका समग्र विश्लषण पूरी वैज्ञानिकता के साथ करना हमारा काम है। इतिहास को हम केवल जानकारी के लिए नही पढ़ते। इतिहास हमें गढ़ता है। वह हमे निराशा से उबारता है। आशा की नई उर्जा देता है। बोली से लेकर भाषा के परिष्कृति रूप तक साहित्य को पहुचने में हजारों साल लग गए। वही धरोहर हमारे सामने है जिसे हमें आज की परिस्थिति में विश्लेषित करना है। यही साहित्य इतिहास के अध्ययन की भूमिका है।

इतिहास और साहित्य

इतिहास और दृष्टि एक लम्बे समय तक विश्व में चर्चा के विषय रहे है।एक स्थिति ऐसी भी आई कि कई-कई देशों के अस्तित्व भी इतिहास पर निर्भर हो गये। हाल ही के कुछ वर्षों में पाकिस्तान जैसे देश भी अपने देश का पांच सौ वर्ष पुराना इतिहास लिखाया। विश्व के कई ऐस देश है जहां पुरतात्विक प्रमाण जुटाने के प्रयास किये गये। भारत में भी यह प्रयत्न हुआ। किंतु यहां ऋगवेद की परंपरा इतनी प्राचीन रही कि उसका साहित्य विश्व के सामने अकाट्य प्रमाण के रूप में सामने आया। इतिहास को महत्व देने के पीछे का तर्क यह है कि कारण के रूप में पिछली घटना को और कार्य के रूप में आगे की घटना को लेना। इस प्राकर इतिहास मनुष्य और उसके अस्तित्व को समझने का एक मापदण्ड बन गया। पर यदि अध्ययन कोरा ऐतिहासिक होकर रह जाता है तोसाहित्य के भीतर बहनेबाली निरतंरता की धारा को नहीं देखा जा सकता। जिसमें इतिहास के क्रम को लांघकर कहां की कथा, कहा। का बिंब, कहां की बात और कहां का शब्द लहर पर लहर की भांति ढकेल कर आगे आ जाते है।साहित्य में इतिहास भी मिथक में रूपांतरित होकर आता है या कहें मिथक के मुकुर में परादृश्य

होकर आता है। बहुत सी साहित्यिक कृतियों में इतिहास के ऐसे लेखे-जोखों का उपयोग होता है, जिन्हें निजंधरी गाथा या कथा कहा जा सकता है। जिनका कोई लिपिबद्ध प्रमाण नहीं होता। इसलिए साहित्य में स्वप्न और स्वप्न जैसे अनुभव की चर्चा भी उतनी ही सार्थक है, जितना इंद्रियगोचर पदार्थों का प्रत्यक्ष अनुभव सार्थक है। आखिर स्वप्न अभ्यांतर यथार्थ का ही तो प्रकाशन है, भले ही अधूरा लगे। कल्पना और स्वप्न के बिना स्थूल यथार्थ केवल हड्डियों का ढाचा है। जाग्रत अवस्था जिसे कहा जाता है, वह तो मात्र इच्छाओं का वितान है। वहां आदमी भीतर से कुछ समझ पाता है, वह बस भोगता रहता है। भोग के लिए तरसता रहता है। साहित्य में दोनों व्यापारों की भूमिका है। पूरे अनुभव को साहित्य-रचना में डुबोता है तब साहित्य क्रियाशक्ति बनता है। साहित्य में तब कुछ घटित करने की क्षमता आती है। साहित्य भी इतिहास का भाग बनता है। घटनाओं के साथ-साथ साहित्य की घटना गुंफित न हो तो इतिहास लूलू-लंगड़े की तरह दिखता है। बाण और भवभूति के बिना सातवीं-आठवी शती का इतिहास कुछ अर्थ ही नहीं रखता। कबीर, जायसी, मीरा, सूर, तुलसी के बिना पूर्व मध्यकाल का इतिहास क्या रह जायेगा। स्वाधीनता - प्राप्ति के पहले का इतिहास प्रसाद, निराला, नवीन और प्रेमचंद, जैनेन्द्र के बिना समझा ही नहीं जा सकता। यह सही है कि साहित्य की क्रियाशीलता कभी-कभी अपने जमाने में सक्रिय लक्षित नहीं होती और वह आगे आने वाले जमाने में छा जाती है। पर उसकी सक्रियता के कारण उसका समकालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिवेश कुछ अधिक साकार दिखाई पड़ता है।

साहित्य का "इतिहास दर्शन"

साहित्य ने जो श्रेय अर्जित किया है, वह इसके गहरे स्थायी भावात्मक महत्व के कारण हुआ है। साहित्य के अध्ययन से हम जीवन के साथ व्यापक अंतरंग एवं नित्यनवीन

संबधों की स्थापना करते है।हम जीवन के नित्य रागात्मक सम्पर्क में आते है।यही कारण है कि सहित्य का हम पर इतना प्रभाव पड़ता है। मानव जाति ने जो देखा, परखा, पाया उन सबका साहित्य इतिवृत है। सामान्यतः साहित्य में साहित्यकार के व्यक्तिगत अनुभव उसके वाह्य और आम्यातंरिक जीवन, उसके निजी भावों और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति रहती है। परंतु साहित्यकार केवल निजी भावों और आकांक्षाओं को लेकर ही जीवन धारण नहीं करता (वह मानव-जाति का एक सदस्य भी है, वह समाज के संबंधों के बीच जीता है। अतएव उसकी रचना में मानव जाति के सुख-दुख, राग-विराग की अनुभूतियां, जनम-मरण, पाप-पुण्य आदि धारणाओं, ईश्वर-नियति इतयादि गहन सत्ताओं के प्रति संवेदनीयता भी रहती है। साहित्यकार की यही व्यापक संवेदनशीलता उसे कालक्रम में जीवन और जगत के प्रति निजी दृष्टिकोण दे देती है, विश्व के विभिन्न पक्षों के प्रति मान्यताएं एवं दृष्टिकोण एक सुनिश्चित अनुबंध प्राप्त कर साहित्यकार के जीवन दर्शन की संज्ञा प्राप्त कर लेते है।साहित्यकार का अनुभव क्षेत्र जितना व्यापक होगा, उसकी अनुभूतिक्षमता जितनी तीव्र और परिष्कृत होगी, जीवन के विभिन संबंधों और धारणाओं का उसके द्वारा आकलन उतना ही प्रामाणिक होगा[78]।

सामान्यतः 'इतिहास' शब्द से राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास का ही बोध होता है किन्तु वास्तविकता यह है कि सृष्टि की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है, जिसका इतिहास से संबंध न हो। अतः साहित्य भी इतिहास से असंबद्ध नहीं है। साहित्य के इतिहास में हम प्राकृतिक घटनाओं व मानवीय क्रिया-कलापों के स्थान पर साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टि से करते है।कोई भी रचना मानवीय क्रिया कलापों के इर्द-गिर्द ही घूमती है। वह मनुष्य के वृतियों की सूचक होती है। जिस प्रकार राजनीतिक

इतिहास में राजनेताओं के जीवन, क्रिया-कलापों, घटनाओं को संकलित किया जाता था, इसी प्रकार साहित्य के इतिहास में भी रचना और रचनाकार का स्थूल परिचय संकलित किया जाता था। किन्तु अन्य विधाओं की तरह साहित्य के इतिहास का भी समय के साथ विस्तार हुआ जिससे साहित्येतिहास के दृष्टिकोण में भी तदनुसार सूच्क्षता व गंभीरता आती गयी। यद्यपि यह मानने में कोई संकोच नही है कि आज भी अन्य की तुलना में साहित्य का साहित्यदर्शन उतना विकसित रूप में सामने नही आ सका है[83]।

साहित्येतिहास

साहित्य-युग का प्रतिबिम्ब होता है। साहित्य में युग की आकांक्षाएं सामाजिक जीवन की विशषताएं, राजनीतिक प्रयत्न, धार्मिक चेतना आदि प्रतिफलित होती है। जिस काल की जो विशेषता रहती है वह उस काल की युगचेतना कहलाती है। आध् गुनिक युग में वैज्ञानिक अनुसंधानों के द्वारा नये सत्य अथवा सृष्टि के नये अन्तर्निहित संबंध प्रकाश मेंआ रहे है।पुरानी मान्यताएं अपर्याप्त सिद्ध हो रहीं है।चिंतन के क्षेत्र में भी स्वतंत्रता और मौलिकता दिखाई दे रही है।

युग को ललकार रहा भौतिक विज्ञान आज।

मनव को निर्मित करना होगा नव समाज ॥

साहित्य के ऊपर युगीन चेतना का अनिवार्य रूप से प्रभाव काल के अनुरूप पड़ता है। हिंदी साहित्य को भी वीरगाथाकाल, भक्तिकाल रीतिकाल और आधुनिक काल आदि के नाम से बांटा। भक्तिकाल में धार्मिक और अध्यात्मिक रचनाओं का प्रभाव रहा। तत्कालीन संस्कृति अपनी रक्षा के लिए संघर्षरत रही। रीतिकाल की काव्यभूमि पर,

किसी विदेशी संकट के अभाव में, समाज में आ जानेवाली निश्चिन्तता की भावना का और राजाओं के दरबारें में विलासितापूर्ण वातावरण का प्रभाव लक्षित होताहै। आधुनिक काल के साहित्य में कालक्रम के साथ बदलती हुई युक की आवश्यकताएं और आकांक्षएं यथाक्रम व्यंजित हुई है।यूरोप के पुनरुत्थानवादी साहित्य में समसामयिक धर्म और विज्ञज्ञन के द्वन्द्व से लोगों केमन में जाग्रत धार्मिक उपचारों की कृत्रिमता के प्रति वितृष्णा का भाव है। भारतीय साहित्य में एक ही राम के रूप में युगानुरूप कितने परिवर्तन हुए! इस संबध में परंपरा का बड़ा महत्व दिखाई देता है। परंपरा केवल कुद बद्धमूल विश्वासों को ही नहीं कहते, बल्कि उन समस्त रीतिनीतियों के समूह को भी कहते हैं जो सामाजिक जीवनयापन के क्रम में सजीव हो गई है।चेतना के तीनां ही व्यापार कालक्रम में सामाजिक संबंधों के बीच, परंपरा के विभिन्न तत्वों के रूप में प्रस्तरीभूत हो जाते है।अतः परंपरा में जातीय चिंतन, विश्वास और आचार तीनों ही चले आते है।हमारे यहां साहित्यिक परंपरा वेदान्तदर्शन, भक्ति और वर्णाश्रम धर्म से प्रसूत हुई। यह निर्विवाद है कि मूलरूप में चिन्तन, विश्वास ओर कर्म के ये स्त्रोत प्राकृत एवं शुद्ध है।कभी-कभी लगता है कि परंपरा को युगचेतना ने अपदस्थ किया है किंतु यह शंका क्षणिक है। भारत में परंपरा और युगचेतना साथ साथ चलती है।हम कालबाह्य हो चुकी चीजों को छोड़ते है और युगानुकूल आवश्कता पर कई नवीन चीजे प्राप्त भी करते है[75]।

प्रस्तुत पुस्तक में वस्तुनिष्ठ विवेचन होते हुए भी प्रत्येक युग का साहित्य परिवेश; प्रमुख रचनाकारों का योगदान; युगीन साहित्यिक विशेषताएँ; आलोचकों; साहित्येतिहासकारों एवं रचनाकारों के चर्चित मत; परिभाषाओं और हिंदी साहित्य की

अंतर्वर्ती ऐतिहासिक निरंतरता विश्लेषित कर प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत किया गया है। इससे विषय को समझने में सुगमता रहती है।

विद्यार्थी-शोधार्थी ही नहीं; हर आयुवर्ग के पाठकों के लिए एक उपयोगी पुस्तक।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. मुन्ना तिवारी ने बताया कि बुंदेली वीथिका को स्थापित करने का उद्देश्य यही है कि बुंदेली बोली और भाषा के प्रति युवाओं को जागरूक किया जा सके. यहां राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त और सियारामशरण गुप्त की पांडुलिपियां भी यहां रखी गई है।

डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय ने जो शब्दकोष यहां दान किया है, उससे निश्चित ही युवाओं को लाभ होगा. डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय जो शब्दकोष दान किया है,उनमे से कुछ

बुन्देली लोकोक्तियां एवं मुहावरे

चतुर खों इसारौ भौत।	:	समझदार को संकेत काफी।
चनन की खेती, खुटत जाएँ सैं नौंनी।	:	थोड़ा थोड़ा दान पुण्य करते रहना ठीक रहता है।
चनन के धोकें ककरा/मिरचै न चबा जइयो।	:	सबको एक जैसा समझने की भूलन कर बैठना।
चना अधपका जौ को काटै, गेहूँ बाली लटकैं काटै।	:	फसल काटने का सही नियम।
चना और चुगल, मुँह लगा बुरा।	:	अधिक मुँह लगे दोनों घातक
चना खुटें खुटें जान देओ, भाग न खोटौ होय।	:	थोड़ा बहुत दान पुण्य होता रहे तो कोई घाटा नहीं।
चना चिरांजी हो रय, गौउँ मुनक्का/मउआ हो रय दाख।	:	हर चीज बेहद महँगी, महँगाई दुखदायी ।
चना चिरोंजी हो रय, गौउँ होरय दाख।	:	महँगाई का दुष्प्रभाव ।
चना चित्रा चौगुना, स्वाँति गेहूँ होय।	:	चना और गेहूँ बोने के शुभ मुहूर्त।
चना और चुगल जॉदाँ मौ लगत।	:	मनुष्य को स्वभावतः दोनों प्रियहोते हैं।
चना भदारौ जौं हरिया, गेहूँ काटौ ठकुरिया।	:	कटाई का उपयुक्त समय व फसल काटने के सही

लक्षण।

चंपा के दस फूल, चमेली को एक कली।	:	अपने-अपने गुण का प्रभाव।
चमचोला को बाप बकलफोर।	:	बेटा बाप से बढ़कर चतुर ।
चमड़ी जाए पै दमड़ी न जाए।	:	महाकंजूस ।
चमत्कार के बिना, नमस्कार नईं होत।	:	काम से नाम मिलता, शान बढ़ती
चमार के कोर्से ढ़ोर नईं मरत।	:	दूसरों के बुरा सोचने से किसी का कुछ नहीं बिगड़ता।
चट मग्नी पट्ट ब्याव।	:	तत्काल का काम ठीक रहता।
चट्ट रॉड पट्ट ऐबाती/ब्याव	:	रॉड का तत्काल पुनर्विवाह होना।
चट हगन गए पट्ट मुँतास लग आई।	:	चंचल प्रकृक्ति, बहानेबाजी।
चढ़ जा बेटा सूली पै, भलौ करेंगें राम।	:	खतरनाक परिस्थिति में डालना।
चढ़तौ बाराती सौ कौ, लौटतौ नौं कौ।	:	काम निकला, मान घटा।
चढ़ाये की नाइँन इतकी बुरी न उतकी भली।	:	न कुछ कहते बने न कुछ सुनते।
चढ़ी बेल काटी नईं जात।	:	किसी का बनता हुआ काम बिगाड़ना पाप होता हैं।
चढ़ी ज्वॉनी मॉझा ढ़ीला।	:	भरी जवानी में कमजोर पड़ना।
चढ़ेगा सो गिरेगा।	:	साहस बड़ी चीज है।
चढ़े तबा पै सबउ रोटी सेंक लेत।	:	मौके से लाभ सभी उठाते।
चतुर की चार जॉगा।	:	चतुर व्यक्ति को हर कहीं सम्मान व सुविधा मिलती है।
चतुर की चार सैंनें परत।	:	योग्य की डॉट फटकार भी लाभकारी होती।
चतुर खों चौगुनी, मूरख खों सौ गुनी।	:	चतुर से मूर्ख की समस्यायें जटिल होती।
चतुर खों चिंता बड़ी/सौ गुनी।	:	चतुर पर जिम्मेदारी का बोझ अधिक होता है।
चंदन की लकड़ी भली, भली न गाड़ी काठ की।	:	दुनियाँ में संख्या नहीं गुण की कीमत होती है।
चंदन पड़ौ चमार के, नित उठ कूटै चॉम।	:	जिसका जैसा जाति स्वभाव तैसा उसका काम।

चंदन संग बॉदें होड़ बमूरा	:	बेतुकी प्रतिद्वंदता।
चनन की खेती जब तब खोंटत रऔ।	:	थोड़ा थोड़ा करके लाभ लेते रहना ठीक होता।
घूरे कौ सोंनों, हर कोउ उठा लेत।	:	अच्छी चीज की हर कहीं कीमत ।
पेंट भरौ, बदन बदन के कान काट।	:	उम्र से कम चतुर होशियार अधिक।
घोकांत विद्या, खोकांत पानी।	:	विद्या सुख रटने से, पानी खोदने से।
घोकिया घोकत रऔं, कमरिया/ अलफतिया ब्याह लै गऔ/ठड़ौ।	:	जिसमें तत्परता होती है, वहीं लाभउठा ले जाता है।
घोरण कौ चारौ गदन खांडों, नैन डारौ जात।	:	हैसियत के अनुसार काम दिया जाता।
घोरा की पिछाई और हाकिम की अगाई न गहै।	:	घोड़े के पीछे, हाकिम के आगे नहीं चलना चाहिए।
घोरा की लात, आदमी की बात।	:	दोनों से रक्षा करना कठिन होता।
घोरा कौ गिरौ सॅवर जात, नजर गरौ नई सॅवरत।	:	खोया सम्मान सबसे बुरा होता है।
घोरा घास सैं यारी करै, तो खाय का।	:	प्रेम की भी एक सीमा होती है।
घोरा चलै चार घड़ी, ब्याज चलै आठ घड़ी।	:	ब्याज बहुत जल्दी जल्दी बढ़ता।
घोरा बैंच के सोबौ।	:	बहुत गहरी नींद में सोना।
घोरा पै बैठ के मलकबौ, सबै आउत ।	:	पद पाने पर सभी इतराने लगते।
घोरा मरें, गदन कों राज।	:	उत्तम न रहने पर नीच पुजता।
चंचल नार छैल से लड़ी, खन अंदर खन बाहर खड़ी।	:	चंचल प्रकृति की स्त्री दिखावा अधिक करती है।
चंचल नार की चाल छिपै ना, नीच छिपै न बड़प्पन पाएँ।	:	चंचल स्वभाव की स्त्री और नीच मनुष्य कैसे भी छिप नहीं सकते।
चंचू छिपे बखर के मारे।	:	आलसी व्यक्ति, कामचोर।
चकोर खों चंदा, छोड़ कछू नई भॉउत ।	:	जिससे दिल लगा उसे छोड़कर कहीं सुख नहीं मिलता।

घाव मिट जात गुड/चोट नैं मिट।	:	बीते कष्ट के चिन्ह शेष रहते हैं।
घाव में घाव डारबौ होत चतुरन कौ काम।	:	चालाकों की चालाकी को चतुराई से ही काटा जा सकता है।
घिउ कॉ गऔ खिचरी में।	:	कोई नुकसान नहीं, लाभ।
घिउ नॅगरिअॅन गुर डिंगरियॅन ।	:	थोड़ा थोड़ा करके बहुत खर्च हो जाता है।
घिउ न सिउ, पक्की बनें।	:	कोरी गप्पें मारकर ढ़ोंग करना।
घिनों लड़इया, छींट कौ बागौ।	:	अशोभनीय कार्य।
घिसौ पइसा, बखत पै कामैं आउत ।	:	कभी-कभी बुरा भी काम आ ताजा।
घी कितै गऔं, खिचरी में।	:	कहीं कोई हानिकारक नहीं।
घी घी में गऔं, कै खिचरी में।	:	हर तरह से लाभ।
घी के दिया जराबौ/बारबौ ।	:	खुशी मनाना।
घी खाओ सक्कर सैं, दुनियाँ जीतौ मकर सैं।	:	मीठे बोल से सुख उठाओ मक्कारी से बड़े बने रहो।
घी गुर के वेंगुर सें, कुदई मठा के ठेंगुर सें।	:	अच्छा भोजन करने वाला कमजोर, साधारण भोजन करने वाला बलवान कद काढ़ी का होता है।
घी जाट का, तेल हाट का।	:	शुद्धता का ठिकाना नहीं।
घुट-घुट मरबे की, पीरा का कइये।	:	तिल-तिल कर मरना कष्टदायी।
घुरवा मरें, गदन कौ राज।	:	अच्छे नहीं, तो बुरों का राज।
घुरूवा लोगनें मरत, गदा कैपरी खोय।	:	अँधेरगर्दी का काम।
घूँघट की लाज, नारी कौ साज।	:	मर्यादा नारी की शोभा है।
घूटौ नबै, तौ पेटइ/पेट खों।	:	अपनत्व का ध्यान आ ही जाता है।
घूरे के दिनों, सोउ फिरत/बल्दत ।	:	समय और परिस्थिति में बदलाव तो होता ही रहता है।
घूरे पै कौ सोंनों, उठा लऔ जात।	:	अच्छे को हर कहीं सम्मान मिलता।

घर में रउआ, खेत में मउआ, बुरा होत।	:	घर में दूसरा बसा, खेत का महुआ हानिकर होते हैं।
घर रहें घर की खाएँ, बाहर रहें बाहर की खाए।	:	जैसी परिस्थिति, तैसा काम।
घर लाला, सो बायरै लाला।	:	एक समान सम्मान सौभाग्य की बात।
घर से बाहर भले ।	:	घर से बाहर, अधिक सम्मान सुविधा।
घर सै आसूदा, उधार लेत फिरत।	:	संपन्नता में बेइज्जती कराना।
घरी भर कों दुख, सब दिन कों आराम।	:	थोड़े समय की बुराई हमेशा का सुख।
घरी भर कों बुरबाशन, सब दिन को आराम।	:	थोड़ी बुराई, अधिक भलाई ।
घरी भर की ड़ाई/बुराई/मुसीबत सब दिन कौ आराम।	:	अधिक लाभ के लिए थोड़ा कष्ट झेलना बुरा नहीं।
घरै मतै मारै, बायरै कुत्ता काटे।	:	दोनों तरफ से मुसीबत ।
घरै मजूरी, परदैसे भीक।	:	घर में मान-सम्मान का विशेष ध्यान परदेस में नहीं।
घाट-घाट कौ पानी पिएँ।	:	बहुत अनुभवी, चतुर चालाक।
घलन लगे, तब बचॉउँन लगे।	:	दिखावटी सहानुभूति दर्शाना।
घाटे की चोट, बाँनिअॅई जान्त।	:	मुसीबत जिस पर आती उसके दर्द का कष्ट वहीं जानता ।
घॉम न आसै जेठ मॉस कौ, चौमॉसें जड़कारौ।	:	मौसम के अनुसार हर चीज अच्छी और बुरी होती।
घायल की गति घायल जानें।	:	जिसे चोट पहुँचती है, पीड़ा का सही दर्द वहीं जानता है।
घायल सेर जोडो घातक होत।	:	चोट खाया अधिक घातक होता है।
घर में घर लड़ाई कौ डर।	:	हमेशा सतर्क रहने की जरूरत।
घर में तो नों लॉघनें, चेरी गाए मल्हार।	:	किसी की मजबूरी का मजाक उड़ाना।
घर में नईया चून चनन कौ, गौऊ की दो पै लड्यो।	:	गाँठ में कुछ नहीं, सपने रईसों जैसे।

घर में उखरी, घर में मूसर, बायरै कूटन जाबै।	:	काम का दिखावा कर बेवकूफ बनाना
घर में चौखरे खों डरात, सेर खों मारबे फेंटा बॉदत।	:	झूठी बहादुरी दिखाना।
घर में करबें लॉघनैं, मालपुआ खानें।	:	शेखचिल्ली सी कोरी कल्पनाएँ।
घर में नौं लॉघनँ, मल्हार काय पै	:	असलियत छिपाना ठीक नहीं।
घर में आई लुगाई, भूले बाप मताई।	:	पत्नी के मोह में माँ बाप से उदासीन होना ठीक नहीं।
घर में नइँया चून चनन कौ, ठाकुर बरी करावें।	:	घर में कुछ नहीं, बातें बड़ी-बड़ी।
घर में जोगा बनाओ, आसानी से नाग झाड़ लो।	:	चालाक लोग घरों में घुसपैठ कर बहुत नुकसान पहुँचाते
घर में नईयों दॉने, डुकरो/मईयो चली भुनॉने ।	:	हैसियत से अधिक दिखावा कोरा दिखावा ठीक नहीं।
घर में पूँजी भांगनई, नेंवत आए साठ।	:	बेवकूफी और बदनामी का काम।
घर में रय, न तीरथ गए, मूँड़ मुड़ॉय जोगी भए।	:	पाखंड़पूर्ण आचार-विचार।
घर में पूँजी भांग नईयाँ, बरातै न्योंत आए।	:	झूठी शान में मूर्खता का काम करना अपनी बदनामी कराना।
घर कौ चोर चोरी करे, कओ राम घर कैसैं चलै।	:	अपनों से ही अधिक खतरा ।
घर कौ जोगी, जोगना अंत गाँव कौ सिद्ध।	:	बुद्धिमान की घर से बाहर अधिक कीमत होती।
घर कौ परसैआ, अंधियारी रात।	:	मनमानी या बेईमानी करने का मौका पाकर लाभ उठाना।
घर कौ मौड़ा चोरी करै, कओ राम घर कैसे चलें।	:	अपने सबसे ज्यादा खतरनाक, जो कठिन समस्या खड़ी करते है।
घर कौ न घाट कौ, जानें कौन बाट कौ।	:	कोई निश्चित ठिकाना नहीं।
घर कौ भूत, सात पैरी के नाम जान्त।	:	सहज स्वाभाविक बात ।
घर कौ भेदी जो मिल जाबै, जरा मूल से लेअ।	:	घर का भेदी खतरनाक होता, धन संपत्ति सब कुछ चौपट करा देता।

घर कौन भेदी, लंका ढाहे/बारै/ज़ारै।	:	आपसी फूट और बैर भाव का परिणाम बुरा होता है।
घर खाबै, आए के सारौ।	:	र में साला रहने लगे तो मौज मारता घर नष्ट होता।
घर खीर, तौ बाहर खीर।	:	घर में सुख तो बाहर सुख।
घर गुनी बहू, सार गुनी बच्छा।	:	दोनों शोभा बढ़ाने वाली चीजें।
घर घर मटिया चूले।	:	हर घर में समस्यायें और कमियों हैं।
घर घर के निबट लेओ, बराती भौत है।	:	स्वार्थी और ओछी मनोवृति ।
घर की जोरू, चौकसी कैसे होत।	:	कठिन समस्या जिसका उपाय नहीं।
घर की अछरू माता, घरई के पन्डा।	:	भक्ति-भाव में कमी स्वाभाविक ।
घर की कुरिया, सेनई आग फूटत।	:	घर की फूट से दूसरे लाभ उठाते।
घर की आदी/आधी भली।	:	अपने घर का सुख सबसे बड़ा सुख।
घर की घरॉद आउत ।	:	कुटुम्ब के लोगों को अपनों से ही ईर्ष्या होती है।
घर की फूट, जगत की लूट।	:	आपसी कलह से दुनिया लाभ उठाती ।
घर की मुर्गी, दार बरोबर।	:	सहज उपलब्ध सुविधा।
घर के कुरवा सँई ऑख फूटत।	:	घर की फूटन घर बालों से।
घर के सब जन घर में न समॉय, आठ लठेंगर पाउने।	:	समस्या में और अधिक बढ़ोत्तरी।
घर के जानें बरातै गये, रानीपुरा कठवा में दए।	:	अच्छा काम करते समय मुसीबत में पड़े।
घर के कौरे सें आग फूटत।	:	घर के लोग ही भेदी होते है।
घर केई चोरी करें, कओ राम घर केसै चलै।	:	घर के ही घाती और बेईमान हों तो गृहस्थी का काम गड़बड़ा जाता।
घर के पीरन खों, गुर कौ मलीदा।	:	निकट वाले को महत्वहीन समझना।
घर के न घाट के।	:	कहीं के नहीं रहे।
घर के भीतर सेर, बायरै लैडू लड़इया।	:	घरवालों पर हावी, बाहर डरपोक।
घर के रोवै, बाहर के खाएँ।	:	घरवालों को सताना, बाहर वालों को धन संपत्ति

लुटानां

घर कौ उसारौ, लरके सारौ।	:	समस्या का आसान हल मिल जाना।
घर कौ खेत न खेतीबारी, हैकनियाँ की नम्बरदारी।	:	झूठा बड़प्पन दिखाना।
घटघट की राम जानें।	:	प्रभु सर्वज्ञ और सर्वत्र ।
घटघट में राम बसे हैं।	:	भगवान कण-कण में व्याप्त है।
घड़ी में तोला, घड़ी में मॉसा।	:	अस्थिर स्वभाव, क्षण में खुश क्षण में नाराज ।
घनी घनी जब सनई बोबै तब सुतरी की आसा होवै।	:	सन का बीज घना बोवै, तभी अच्छी फसल आशा रखें।
घमंड़ तौ राबनई कौ नई रऔ।	:	महाबलियों का घमंड़ भी चूर हो जाता।
घमंड़ी का सिर नीचा।	:	अहंकारी को नीचा देखना पड़ता।
घरई बैद मरै कैसे।	:	अनिष्ट की आशंका बहुत कम।
घर आई लछमी खों लात नईं मारी जात।	:	धन संपत्ति का सम्मान किया जाता अपमान नहीं किया जाता।
घर आए कुत्तन तक खों नईं भगाऔ जात।	:	किसी भी मेहमान का अपमान नहीं किया जाता।
घर आएँ मारै मताई, बाहर कुत्ता काटै।	:	दोनों और मुसीबत ।
घरे पूजै न अहि, घरे पूजै न अहि।	:	अकल की कमी।
घर आएँ नॉग न पूजें, बॉमी पूजन जायं।	:	मौके से लाभ न ले पाना।
घर कय मोय खोल देख, ब्याऔ कय मोय कर देख।	:	दोनों समस्यायें पहले छोटी दिखती फिर बड़ी बन जाती हैं।
घर का जोगी जोगना, ऑन गॉव का सिद्ध।	:	बुद्धिमान का सम्मान घर से अधिक परदेस में होता।
घर का भेदी लंका ढ़ाए।	:	घर-भेदी अधिक खतरनाक होता।
घरकिन खों हिरना सी छरकैं, बात करें सास सें लरकें।	:	नई बहू घर वालों से दूर-दूर रहती और सास से झगड़ती।

घर की खॉड़ किरकिरी, चोरी कौ गुर मीठौ।	:	मुफ्त का माल ज्यादा पसंद होता ।
घर की जमा-पूँजी मिटा, दूसरन के ऑगें हॉत फैलाउत।	:	अपना धन बर्बाद कर पराई आशा करना मूर्खता है।
गोबर मैला नीम की खली, इनसें खेती दूनी फली।	:	गोबर की खाद, नीम की खली फ्सल को लाभदायक होती है।
गोरी होरी में जाए कल्ली करेजे में अटकी।	:	दिल लगा गधी से हूर को कौन पूँछे।
गोलियाँ सैं भलों बच जात, बोली कौन नैं बचत।	:	बोली गोली से भी अधिक कौ खतरनाक होती है।
गोली से बचें पै बात सें न बचें।	:	कठोर बोला बॉनी गोली से भी अधिक खतरनाक होती है।
गोंऊँअॅन संग बथुआ खों सोऊ पानी मिल जात।	:	भाग्य से भाग्य जुड़ा होता।
गोंऊँ आवै बाल, खेत बनाबै ताल।	:	गेहूँ में बाल आए तो, तुरंत पानी दो।
गोंऊँ कलुरिया, भैंस डगरिया।	:	अच्छे जानवरों की पहचान।
गोंऊँ कौ चारौ छीन कें, भरत गदा कौ पेट।	:	अन्याय का काम पाप की जड़।
गोंऊँ पिसी खों गिरूआ, मउआ खों लगतई लौंका।	:	गेहूँ, पिसी को गिरूआ रोग और महुआ को लौंका रोग जल्दी लगता।
गौं में दयें रओ, हल्ला सें कछु सार न कड़ है।	:	शोर गुल किए बिना, मौका देखकर बदला लेना ठीक होता।
गौने कौ हाथी घर घर डोलै।	:	धन वैभव का प्रदर्शन करना।
गौर के गनगौरी, मुंस खों न देंहौ ऐकऊ कौरा।	:	गनगौर के पूजन का प्रसाद पति को नहीं खिलाया जाता।
गौर रूठे तो अपनौ सुहाग लै, का कोउ भाग लै।	:	नाराजगी से अपनी हानि और किसी का कुछ नहीं बिगाड़ता।
गुस्सैल बानियाँ, गड़ौ लोड़ा उखेरत।	:	बनियाँ बहुत धैर्यवान व गंभीर होता।
गूंगे की गति गूँगा जानें।	:	गूँगा किसी से क्या कहे।
गूँगौ का बताए गुर कौ स्वाद।	:	मजबूर क्या कर सकता है।

गू का कीरा गू में ही सुखी रहता।	:	नीच को नीच की संगत ही अच्छी।
जाओ तुम हाथी को।	:	बुरा काम तभी, जब ज्यादा लाभ हो।
गूदड़ में लाल नईं छिपत।	:	गुणवान, गरीबी में नहीं छिपता।
गाँव के संगै घुन्नौ पिसत।	:	दुष्ट के साथ सज्जन भी कष्ट पाता।
गैल में हेंगें उर आँखे नटेरें।	:	चोरी और सीनाजोरी।
गैल में हेंगें और आँखे बताए।	:	गलत काम करे और अकड़ दिखाएँ।
गैल बताव और ऑगें चलौ।	:	परोपकार कर, मुसीबत मोल लेना।
गैल चलत नेवरा मिल जाए, बाम चखु चारा खाए।	:	यात्रा करते समस शुभ सूचक भाग संकेत ।
गेंवड़े आई बरात, कातन लगे बॉडार।	:	गेंवड़े खेती गॉव सगाई, बिरले की होए भलाई।
सबको बेवकूफ बनाने का स्वॉग ।	:	गेंवड़े की खेती और गाँव की सगाई बिरलों को ही फ्लती है।
गेंवड़े खेती गॉव सगाई, जिनकर, जिनकर, जिनकर भाई।	:	गेंवड़े की खेती और गॉव की सगाई कभी न करे।
गेहूँ के संगै घुनै पिसनें परत।	:	संगत के असर का प्रभाव ।
गैर खों कुआँ खोदत, खुदउँ गिर परत ।	:	दूसरों का बुरा सोचो, तो खुद का बुरा हो जाता।
गोद कौ खिलाव, गोद में नईं रत।	:	आज का छोटा, कल बड़ा हो जाता।
गोद में लरका सहर/गाँव में गुहार।	:	होश ठिकाने न रहने की स्थिति।
गोद में लरका गाँव/सहर में ढ़िढ़ोरा।	:	होश गुम होना।
गोबर गनेस ।	:	महामूर्ख।
गोबर कौ गुबरीला।	:	संकुचित बुद्धि का व्यक्ति, छुद्र सोच वाला मनुष्य।
गुर के बाप कोलू।	:	असली जिम्मेदार व्यक्ति।
गुर गुरई रए, चेला सक्कर हो गए।	:	चेला गुरू से बढ़ कर बुद्धिमान
गुर खॉय गुलगुलन खों परेज करें।	:	व्यर्थ के नखरे दिखाना।

गुर खॉए पुअॅन खों परेज।	:	दिखावटी, ढ़ोग करना।
गुर खॉय सतन खों परेज करें।	:	झूठमॉट की बहानेबाजी।
गुर डिंगरियॅन, घिउ नॅगरियॅन।	:	थोड़ा थोड़ा कर गुड़ और घी दोनों समाप्त हो जाते।
गुर न देओ, गुर कैसी बात तौ करौ।	:	मीठी बोली बानी में क्या खर्च होता।
गुर न देओ गुरीली बातें तौ करौ।	:	भले ही कुछ न दो, मीठे तो बोलो।
गुर बेल और नीम चढ़ी।	:	अधिक से अधिक दुखदायी।
गुर भरौ हँसिया।	:	किसी के बारे में कुछ न कह पाना।
गुर भरौ हँसिया, उगलत बनै न निगलत।	:	असमंजस की स्थिति में पड़ना।
गुरू कीजैं जान कैं, पानी पीबै छान कें।	:	समझ से काम लेना हितकर होता।
गुरू गुरूइ रय, चेला सक्कर हो गए।	:	गुरू से बढ़कर चेला।
गुरू जी कौ पालागन, पंड़ित जू की जै।	:	जैसा नाम तैसा प्रभाव ।
गुरू तौ गुर रय चेला भये सक्कर।	:	गुरू से बढ़कर चेला योग्य बनना।
गुरू बड़ौ, कै चेला।	:	गुरू चेला से अधिक सम्मानीय होता।
गुरू बिन मिलै न ज्ञान, भाग बिन मिलै न संपत्ति ।	:	गुरू कृपा से ज्ञान, और संपत्ति भाग्य से मिलती है।
गुरू बिन ज्ञान, भेद बिन चोरी, भौत नईं तौ थोरी थोरी।	:	बिना गुरू के ज्ञान और बिना भेद के चोरी नहीं हो सकती।
गुरू, संतन की मानें ना, पाखेंडियॅन की बन आई।	:	गुरू संतों की उपेक्षा का लाभपाखंडी लोग उठा लेते है।
गुरु से कपाट, मित्र से चोरी, निरधन होय कै कोड़ी।	:	गुरू से कपट और मित्र से छिपाव दोनों मनुष्य को घातक बनते।
गिरस्ती के लुखरगड़े में, बिसर गई किलकोटें।	:	गृहस्थ जीवन, लड़कपन की मस्ती भूला देता और गंभीरता छा जाती।
गिरानीं के दिनों, कै कैं नई आउत ।	:	दुर्भाग्य अचानक ही आता है।
गिरी अटारी, मड़ा बरोबर।	:	धनी माँनी व्यक्ति बिल्कुल बर्बाद कभी नहीं होता।

गिरें हॉन, न खोयँ हॉन ।	:	कम कीमती चीज का खोना किसी को नहीं अखरता।
गिरौ का गिरै।	:	पतित और क्या पतित होगा।
गिलोय उर नींम चढ़ी।	:	दुर्गुण में और अधिक वृद्धि होना।
गीदड़ की मौत आउत तौ सहर तॉई भगत।	:	भवितव्यता में अकल काम नहीं करती।
गुजरे गवाई, लौटे बराती, कोऊ नईं पूछें।	:	काम निकल जाने पर लोग सबकी उपेक्षा करने लगते।
गुदड़ी कौ लाल।	:	छिपा, ढँका बुद्धिमान ।
गुंडा जब मरै जब बदरी होय।	:	दुष्ट को बुरी मौत मिले तो अच्छा।
गुन्ताड़े सें कठिन काम सहज हो जात।	:	प्रयत्न हमेशा फलदायी होता है।
गुन न थराई, हरामजादी कहाई।	:	न प्रशंसा न अहसान, बुराई हाथ आई।
गुनबारौ घर में रहे, तीन बात की हॉन, रिन बढ़े, उर गुन घटे, घर के कहैं निकाम।	:	गुणवान व्यक्ति घर में रहने से ऋण ऋण बढ़ता गुण घटता, और घर में मान कम होता।
गुन बिन पूत लठेंगर सौ गुन बिन बिटिया डेंगुर सी।	:	लड़की-लड़के दोनों का गुणवान होना जरूरी होता।
गुन न हिरॉनों गुन गाहक हिरॉनों है।	:	गुणवान की परख हर कोई नहीं कर पाता।
गुप्त दान, महाकल्याण।	:	गुप्त दान, ही सही पुण्य दान है।
गुप्तउअल बात, गुप्तइ राखी जात।	:	महत्वपूर्ण बात, गुप्त ही रखी जाती।
गुर खानें, उर पाग राखनै।	:	स्वार्थ संग, सम्मान का भी ध्यान।
गाँव में आई होरी, का माते का कोरी।	:	होली में कोई भेदभाव नहीं रहता।
गाँव छोड़े, देवता की चौतरिया छै मइनों नों पूजत ।	:	पूर्व मान्यता व दबदबा बहुत दिनों तक प्रभावी बना रहता।
गांव दमंदा मुसरचंदा, और पुरा कौ आदौ।	:	ससुराल में रहना मूर्खता होती।
गाँव के अँदरा खों भी, गाँव के खदरा दिखात ।	:	अंधा भी अनुभव से लाभ उठा लेता है।
गाँव के गॅवार, सहर के चमार।	:	स्थिति परिवर्तन से लाभ नहीं।

गाँव जानिये बसै, सों सों जानियो कसाई।	:	गाँव की बसने से, सोने की परखने से सही जाँच होती है।
गाँव तुम्हारा, नॉव हमारा।	:	पराए धन, पद से लाभ लेना।
गाँव में घर नईं, हार में खेत नईं।	:	घर गृहस्थी के नाम पर कुछ नहीं।
गाँव में मुखिया की खोपड़ी बिना पत्ते नई हिलत।	:	गाँव में प्रधान का चलावा होता है।
गाँव सदा गँवारन के।	:	गाँव में गँवारों का ही बोलबाला होता।
गाहक एक न फेरिये राखे वस्त अनेक ।	:	दुकान में हर माल हो कि ग्राहक लौटकर वापिस न जाए।
गिर पड़े की हर गंगा।	:	मजबूरी के काम को धर्म से जोड़ना।
गिरगिट की दौर बिटोरे तक।	:	जितनी सामर्थ्य उतना काम।
गिरगिट सौ रंग बल्दत।	:	किसी बात पर स्थिर न रहना।
गिरगिट की दौर मॅगरे नों।	:	औकात के भीतर का काम।
गिरधौरा कैसी मूंड़ हलाउत।	:	कोरी हॉ में हॉ मिलाना।
गिरस्त के दो पल्ले कीच में भिड़े रत।	:	गृहस्थ जीवन झंझटों से भरा होता।
गिरस्ती कौ लोडा परौ मूंड पै, भूल गए किलकोटें।	:	गृहस्थ जीवन में पड़ते ही मौज मस्ती गायब हो जाती है।
गाँठ का पूरा अकल का आधा।	:	धनी किन्तु मूर्ख व्यक्ति।
गाँठ न मुष्ठी खुरखुरा उठी।	:	गाँठ में कौड़ी नहीं, सपने लम्बे-चौड़े।
गाँठ में कौड़ी नईं बनी फिरें धन्नों बाई।	:	महा गरीब, दिखावा रईसों का।
गाँठ में नइँयाँ दानें, अम्माँ चली भुनॉने।	:	कोरी गप्पें, झूठा दिखावा।
गाँठ सें गाँठ जुरी।	:	जीवनभर के पक्के साथी।
गादर कौ मजा, पिलपिले में कॉ धरौ।	:	जवानी का मजा कुछ और ही होता।
गादर खों हर कोउ चाय, पिलपिले खों कोई नईं।	:	रसभरों की कीमत होती, फीके की कोई नहीं।

गॉन परें तौ ग्यावन, बायरै नईं कइत ।	:	ग्रहण, गर्भवती के लिए हानिकारक ।
गॉनेरू जिंदगी भर, दुख उठाउत ।	:	ग्रहण का प्रभाव दुखदायी होता है।
गॉनौ गुरिया इतईं धर जाओ, सज के जइयो-'सरल' ।	:	दूसरों को बेवकूफ बनाने की चाल चलना।
ग्यान गाक पै भक्तिभाव के लगतइ सदा तमाँचे।	:	भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग से बढ़-चढ़ कर होता।
गाय कौ दूध सो, मॉई कौ दूध।	:	गाय और माँ का दूध एक समान।
गाय दुहै बिन छाँनें लावैं, गरमा गरम तुरंत चढ़ावै।	:	गाय का तुरंत दूहा दूध बहुत स्वास्थ्यवर्धक होता।
खात मचाउत, दूसरन खों तरसाउत ।	:	बिना मीठे के सब व्यंजन बेकार।
खसम करौ तौ सोवे खों, कै पाटी लग के रोवें खों।	:	सुख-सपने धूल में मिलना, मुसीबत ढोना।
खसम करौ तौ सोबै खों लग गए पथरा ढ़ोबे खों।	:	सुख सपने चूर-चूर होना, मुसीबत के पहाड़ ढोना।
खसम सै छूटै तो यारौ के जाए।	:	मनमौजीपन पर बंधन ।
खाई गकरियों गाए गीत, जे चले चेतुआ मीत।	:	मतलब भर के साथी।
खाई गकरियों गाए गीत, घर खों चले चैतुआ मीत।	:	स्वार्थपूर्ति तक का सँग-साथ निभाने की प्रवृति ।
खाई गकरियों गुर घर सैं, डुकरा लग गऔ हमाये जिउ सें।	:	अनचाही जिम्मदारी ढोना।
खाई नॅइँयाँ पाँद टटोउत फिरत।	:	कार्य करने से पूर्व भविष्य के परिणाम की चिंता ।
खाइये मनभाता, पहरिये जगभाता।	:	खाओ मन का, पहनो सबके मन का।
खाउत के अपने, अचैउत के पराये।	:	छुद्र सोच, ओछी भावना ।
खाउत के और, दिखाउत के और।	:	बनावटी या दिखावटीपन ।
खाउत कोउ की, बजाउत कोउ की।	:	महाकपटी, बेईमान, दोगलापन।

खाउँन लाजौं।	:	खूब खाने-पीने पर भी शरीर स्वस्थ न दिखना।
खाएँ और गुर्राएँ।	:	मौज उड़ाए और हेकड़ी दिखाएँ।
खाएँ, औरनें ग्यास/ग्यारस बताएँ।	:	पर उपदेश कुशल बहुतेरे ।
गाय न बछिया, चैन की निंदिया।	:	जिम्मेदारी से मुक्त, चैन छानता।
गॉल बजावे में का लगत	:	कहना सरल होता, करना कठिन।
गांव कुरिओनें सें, तोरौ जाट।	:	कोरियों में सहज फूट पड़ जाती।
गाँव का जोगी जोगना, ऑन गाँव को सिद्ध।	:	विद्या की कीमत परदेश में अधिक होती, अपनों में नहीं।
गाँव कौ गैंवड़ौ, पाँदन की ओट।	:	हर परिस्थिति में व्यवहारिकता का ध्यान रखना जरूरी होता।
गाँव को खदरा, गाँव कौ अॅदरई जान पाउत ।	:	गाँव के अंधे को भी हर गली और गढ्ढे की सही अंदाजा होता।
गाँव भगै, बैरा बिछौना बिछाबै।	:	बहरापन खतरे में डाल देता।
गाऔ बजाऔं, सुनाए गीत, जे चले चैतुआ मीत।	:	मतलबी मीत स्थायी कहीं नहीं टिकते।
गाक और मौत का ठिकानौं नइयों।	:	ग्राहक और मौत के आने का किसी को पता नहीं रहता।
गाक पैलौ सबसें नोंनों।	:	प्रथम ग्राहक पूजा जाता ।
गागर में भर गऔ नॉज, सो चढ़ गऔ गँवारू राज।	:	जीविका की निश्चिंतता होने पर मौत मस्ती सूझने लगती।
गॉड़ में लंगोटी, न सिर पर टोपी।	:	घर गृहस्थी के नाम पर कुछ नहीं।
गाड़र ल्याए ऊन खों, चरन लगी कपास।	:	लाभ के स्थान पर हानि होना।
गाड़र कौ मुंस लड़ैया (सियार)।	:	एक से बढ़कर एक डरपोक ।
गाड़ी गड्डी दरकत नाईयों, ऑनगैन बिना प्लॉट।	:	बिना पूँजी के गृहस्थी की गाड़ी नहीं चलती।

गाड़ी बैल पटेल की, बंदे की ललकार।	:	मुफ्त की मालिकी बघारना।
गाड़ी अटक गई।	:	होते काम का बीच में रूकना।
गाड़े से पाड़ौ जिन बॉदौ।	:	खतरे का काम कभी ठीक नहीं।
गज परै उन लोगों पै, काहू सैं ना लें जो सीक।	:	दूसरों की सलाह न मानने वाले किसी काम के नहीं।
गॉज बरै, पूरन के लेखें।	:	थोड़ी सी हानि के पीछे बड़ी हानि कराना मूर्खता है।
गाजर की पुंगी बजाओ तौ बजाऔ नईतों तोड़ खाओ।	:	दोहरे लाभ का काम।
गाजर की करके तुला, बैठें चहत बिमॉन ।	:	मूर्खता का काम बेकार ।
गाँजा, भॉग, दारू और तमाखूँ, जीवन को दुखदाई लड़ाकू	:	गाँजा पियो न प्यारे, जर जैहैं कमल तुमारे- ईसुरी।
ारू और तमाखूँ और लड़ाकू स्वास्थ्य के , इसलिए लिए हानिकारक।	गाँजा :	कभी मत पियो।
गरांनी लुंदरिया फूली फूली फिरै।	:	जवानी के जोश में होश नहीं रहता।
गरीब खों सोनों भी पीतर।	:	अज्ञान को अच्छे-बुरे की पहचान नहीं होती।
गरीब की हाय बुरई।	:	गरीबं की बद्दुआ कभी न ले।
गरीब की लुगाई सब गाँव की भौजाई/भुजाई।	:	रीब को हर कोई दबा लेता, उसको कोई इज्जत नहीं देता।
खेत खाय गदहा, मार खाए जुलाहा।	:	अपराध किसी का, दंड किसी को।
खेत चरै गदहा, ठुके पिटै कुम्हरा।	:	दोषी कोई, सजा भुगते कोई।
खेत चरै उर बारी टोरें, तागत भरी बछेरा में।	:	बलवान बड़ा पराक्रमी होता।
खाय चना, रहे बना।	:	चना खाना स्वास्थ्यवर्धक होता।
खायें खसम कौ, गीत गायँ पराये के।	:	कृतघ्न और नीच प्रकृति की स्त्री।
खाय तो पछताए न खाय तो पछताए।	:	असमंजस की स्थिति।
खारी कुईयों का कामैं आउत ।	:	अनुपयोगी वस्तु बेकार।

खारे बरा नई खाए, जो मजबूर हैं।	:	किसी के एहसान से दबे नहीं।
खाल ओढ़ कैं सिंघ की, सियार सिंघ ना होय।	:	वास्तविक वास्तविक घटित होता है, नकली नकली।
खाल उड़ाये सिंघ की, स्यार सिंघ नईं होय।	:	नकली असली का ढोंग करके असली नहीं हो जाता।
खिचरी में घिउ, घिउ में खिचरी।	:	न इसमें घाटा, न उसमें घाटा।
खिजियॉनी बिलइया/बिल्ली खम्माँ नाँचे।	:	मनोरथ विफल होने पर खिन्नता प्रकट करना।
खिलाए का नाम नईं, रूलाए का नाम।	:	सुख को भूलाकर दुख का बखान कर बदनाम करना।
खीर खों भेले/सौंज महेरी खों न्यारे।	:	अच्छे में साथी, दुर्दिन के नहीं।
गरीब कौ गरे में को नों देबै।	:	गरीब को सताना पाप होता है।
गरीब कौ पाद दूर दूरई सें बसात।	:	गरीब से सभी लोग घृणा करते और झूठा बदनाम करते।
गरीबी में गीलौ आटौ।	:	मुसीबत पर मुसीबत आना।
गरीब सै परखाइए न, बड़न सै डॉड़ कराइए न।	:	हैसियत देखकर ही काम कराना ठीक रहता।
गरे की हड्डी होना।	:	न निगले बने न उगलते।
गारे हार फासौ ढोल शोरे शेर।	:	आफत में भी साहस रखना।
गारे परौ ढोल बजाए सिंह।	:	मुसीबत को हँस कर ढ़ाँकना।
गली के कुत्ता भौंकत, काटत नइँया।	:	कम खतरनाक डरने की बात नहीं।
गले पड़े कौ सौदा ।	:	मजबूरी का काम।
गव धन आदौ पाऔ।	:	अधिक हानि से थोड़ी हानि ठीक।
गँवार गौं का भार।	:	मूर्ख दूसरों को ठगने की घात में चिंतित रहता।
गवाह चुस्त, मुद्दई सुस्त ।	:	जिसका काम वह सुस्त, दूसरा बेचैन ।

गहोई अपन बाप कौन नईं होई।	:	गहोई बनियाँ किसी का मीत नहीं।
गाए, कलुरिया, भैंस डंगरिया/नोंनी।	:	अच्छे गाय भैंस की पहचान।
गाऐं गाएँ ब्याब नहीं होत।	:	कहने भर से काम नहीं हो पाता।
गाऐं गीत कौ का गाइऐ।	:	बीती बातें दुहराने से कोई लाभ नहीं।
गाऔ बजाओ, कौड़ी न पाओ।	:	कंजूस सबको बेवकूफ बनाता।
गया मर्द जिन खाई खटाई, गई रॉड जिन खाई मिठाई।	:	पुरूष को खटाई और राँड स्त्री को मिठाई खाना हानिकारक होता।
गये कोस का गिननैं।	:	पिछले काम की मेहनत का हिसाब करना उचित नहीं।
गायते रोजा छुटावे, नमाज़ गरदै परी।	:	एक मुसीबत से बचे, दूसरी में फँसे।
गरज की दुनिया सारी।	:	मतलब का संसार।
गरज परें, गदा सें बाप कनै परत।	:	मजबूरी सब कुछ कराती।
गरज परें कछु और है, गरज सटै कछु और।	:	मतलब के मीत, काम निकलने पर व्यवहार बदल लेते हैं।
गरज की पूरी दुनियाँ, बिना गरज कोउ नइँया।	:	दुनिया अपने मतलब तक की साथी है, बाद में कोई संग नहीं देता।
गरज परें, पराई मताई खों मताई कनें परत।	:	अटके पर मनुष्य को अपना स्वाभिमान भी गँवाना पड़ता।
गरजबे बारे, बरसत नइँया।	:	ड़ीगें हाँकने वाले काम नहीं करते।
ग़ैर बबली होत।	:	स्वार्थ अंधा होता है।
गरजै सौं बरसैई।	:	अनुकूल लक्षण दिखाई देना।
गरब/गरव तैं रावणै कौ नै रौ।	:	अहंकार सबको बर्बाद कर देता।
गरम गरम खाओ तौ मौ जरै।	:	कभी-कभी जल्दबाजी भी बहुत हानिकारक होती है।
गरम खाए ठंड़ौ नहाय, ओस पै चलै, बाकै सामू	:	गरम खाना, ठंडा नहाना, ओस पर चलना

बैद हँसै।		लाभदायक होता है।
गरारात सौ अर्रात/अर्राने।	:	ज्यादा घमंड मिट्टी में मिला देता।
गर्राटन सब चौपट हो जात।	:	नासमझी और झूठे अहंकार से सब कुछ नष्ट हो जाता है।
गर्रा, बैला सॉड कुआबै, मौ उठाए जॉ चॉए जावै ।	:	जवानी में मस्त, मूर्ख ऊटपटाँग हरकतों से बाज नहीं आता।
गदिया पै आम नई जमात।	:	कोई भी काम तत्काल संभव नहीं।
गदिया पै सरसों नई जमतई।	:	हर काम तुरंत संभव नहीं।
गधा गिरो पहार सै, मुर्गी के टूटे कान।	:	असंभव बात, बेतुकी झूठी बात।
गधा घोड़ा एक भाव।	:	अनुचित समानता ठीक नहीं।
गधा मरौ कुमरा कौ, धोबिन सत्ती होवै।	:	हानि किसी की दुख किसी को।
गधी भी ज्वॉनी में नौंनी लगत।	:	जवानी में सभी सुंदर लगते।
गधे का कान गधा ही खुजाता है।	:	पशु भी अपनी जात पर मरते।
गधे को गुलकंद।	:	मूर्खता का काम।
गढ़ों से हल चले तो बैल कोन बिसाए।	:	जो जिसका काम होता, उसी से सही हो पाता।
गनगौर के गनगौरा, मॉन्सन खों नई दो कौरा।	:	गणगौर का प्रसाद पति को नहीं नहीं दिया जाता।
गणेश जू खों चौक पुरौ, मदारे जू ऑन बिराजे।	:	सम्मानित का आयोजन अपात्र की घुसपैठ ।
गप्प बड़ी के सप्प।	:	झूठों का जमाबड़ा, एक से बढ़कर एक।
गपोड़न की मॅडली, सॉचन खों को पूँछत।	:	झूठों की जमात में सच्चों को कौन पूछता।
गम्म कौ फल मीठौ।	:	धैर्य का फल मीठा होता है।
गम्म खाओ कम खाओ।	:	धैर्य और कम भोजन दोनों लाभकारी।
ग्यान गरें फॅस जात, जब घर कौ नॉज बड़ात ।	:	गरीबी की मार में बुद्धि मारी जाती।
गयें हॉन न मरें पछतॉन ।	:	जाने में नुकसान नहीं, मर जाने पर पछतावा नहीं।

गया बखत हातें नईं आउत।	:	बीता हुआ समय लौट कर कभी नहीं आता।
गदइयों गुर हॅगन लगै, तौ बराई को पेरै।	:	ओछो से बड़े काम की आशा करना व्यर्थ है।
गदन की गौने, मनन की झोल।	:	सामर्थ्यनुसार कार्य व प्रबंध ठीक रहता।
गदन की बातें, गदइयॅन की लातें।	:	बेवकूफी से भरी निरर्थक बातें।
गदन कै मूँड़ै, बसंता बंध गए।	:	मूर्खा को सम्मान प्राप्त हो जाना।
गदन खाऔ खेत, पाप न पुन्न।	:	कुपात्र को दान व दया, सब बेकार।
गदन खों खुआव, पुन्न न पाप।	:	कुपात्र को दान-पुण्य बेकार।
गदन खों मुड़गरे, नईं बाँदे जात।	:	नीच को सम्मान नहीं देना चाहिए।
गदन खों गू पकबान।	:	जैसी ओछी प्रकृति तैसी रूचि।
गदन चराएँ खेत कौ पाप न पुन्न।	:	मूर्खी की सहायता करना बेकार ।
गद्द फद्द की संतान/औलाद कमजोर रउत।	:	जल्दी-जल्दी पैदा हुए बच्चे बहुत कमजोर रहते।
गदा गदैय्या सैं जीतें नईं, रँगटा के कान मरोरै।	:	कमजोर को दुनिया दबाती, सहजोर पर बस नहीं चलता।
गदा बैठबै नईं मिलत, सबारी को हाथी चॉनैं।	:	औकात से अधिक की आशा कभी फलबती नहीं हो सकती।
गदा के कण गदैयै खुजौत।	:	सहयोग अपनों का ही मिलता है।
गड़ा धोए सैं घोरा/घोड़ा नैं हो जात।	:	शरीर धोने से जाति नहीं बदलती।
घर में दीया रोशन तब मस्जिद में जलाते हैं	:	पहले नौकर पूरा करके तब परमार्थ या परोपकार किया जाता है।
अपने दही को कोई बुरा नहीं कहता	:	अपनी चीज़ को कोई बुरा नहीं कहता।
अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता	:	अपने साथ बिना काम नहीं होता।
अपने मुँह मियाँ मिठू	:	पने मुँह से अपना बड़ाई करने वाला व्यक्ति।
अभी दिल्ली दूर है	:	अभी काम पूरा हो रहा है।
आंख के अंधेरे नाम नयनसुख	:	नाम और गुण में विरोध होना,

आई है जान के साथ होगी जनाजे के साथ	:	वह विपत्ति या बीमारी जो एल्बम बना रही है।
आई मौज फकीर को, दिया झोपड़ा फांटा	:	विरक्त(बड़ा हुए) पुरुष मनमौजी होते हैं।
आगे कुआँ, पीछे की ओर	:	दोनों तरफ विपत्ति होना।
आठों पहर चौंसठ घड़ी	:	हर समय, दिन-रात।
आठों पेट कुम्मैत	:	पूरा धुर्त, घूहुआ हुआ।
चोर-चोर मौसेरे भाई	:	एक व्यवसाय या स्वभाव वालों में जल्दी मेल हो जाता है।
चोरी और सीना जोरी	:	अपराध करके अकड़ना
चाँद पर थूका, मुँह पर गिरा	:	सज्जन की बुराई करने से अपनी ही बेइज्जती होती है।
चोर के पैर नहीं होते	:	चोर चोरी करते वक्त जरा-सी आहट से डरकर भाग जाता है।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठरहता	:	बेशर्म आदमी पर किसी बात का कोई असर नहीं होता।
चिराग तले अँधेरा	:	अपनी बुराई नहीं दिखती
गागर में सागर भरना	:	कम शब्दों में बहुत कुछ कहना
खूब मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी	:	एक ही प्रकार के दो मनुष्यों का साथ।
बाप न मारे मेढकी, बेटा तीरंदाज़	:	छोटे का बड़े से बढ़ जाना।
बाप से बैर, पूत से सगाई	:	पिता से दुश्मनी और पुत्र से लगाव।
बारह बरस पीछे घूरे के भी दिन फिरते हैं	:	एक न एक दिन अच्छे दिन आ ही जाते हैं।
बासी कढ़ी में उबाल नहीं आता	:	काम करने के लिए शक्ति का होना
खग जाने खग ही की भाषा	:	साथी की बात साथी समझ लेता है।
खून सिर चढ़कर बोलता है	:	पाप स्वतः सामने आ जाता है।
खुदा गंजे को नाख़ून न दे	:	नाकाबिल को कोई अधिकार नहीं मिलना चाहिए।

खों खों जल ककरी, मते की बू ओढ़ें कथरी।	:	सर्दी से बचने को पर्याप्त साधन नहीं।
खौं गाड़ें, औ कौरा मॉगत।	:	धनी हो कर भी मान-सम्मान का ध्यान नहीं।
खौरियाक/खजियाऊ कुतिया मल - मल की झूल।	:	बेवकूफी का काम, हँसी मजाक की वस्तु ।
खेत बारी खाय बिध सैं कहा बसाए।	:	दुर्भाग्य को कौन रोक सकता है।
खेत बारी खों राखै, बारी राखै खेत खों।	:	एक दूसरे के शुभचिंतक बनें तभी सही काम बनता।
बिग खेतारे खरपतबार, सभा बिगारे दूत।	:	खरपतवार फसल विनाशक और मूर्ख दूत सभा-विनाशक होता है।
खेती उनकी जो हर हाँके, उनकी नई जो जब तब झाँकें।	:	खेती की निगरानी चौबीस घंटे हो तभी अच्छी फसल होती।
खेती आप सेती ।	:	सफल वहीं होती, जिसकी सेवा और देखभाल स्वयं की जाए।
खेती कर कर हम मरे, बहुरे के कोठे भरे।	:	मेहनत किसान करे लाभ बनियाँ ले।
खेती करे न बॅजी जाए, विद्या के बल बैठो खाए।	:	विद्या धन सर्वश्रेष्ठ धन है।
खेती करै बॅज खों जाए, दों में सैं एकउ न पाए।	:	दुविधा में दोउ गए, माया मिली न राम।
खेती करै रात/साँझ घर सोबै, काटै चोर/मूँड़ धर रोबै।	:	खेती आलसियों का काम नहीं, आलसी खेती नहीं कर सकता।
खेती करै बॅज कौं धावें, ऐसौ डूबै थाह न पावै ।	:	एक साथ दो कामों की जिम्मेदारी हानिकारक होती, कर्ज में डूबाती
खेती करै तो गाड़ा/बैलगाड़ी, भैंस रखै तो पाड़ा।	:	खेती को बैलगाड़ी, भैंस को पड़ा जरूरी।
खेती करै अधिया, बैल न बधिया।	:	बिना साधन के खेती संभव नहीं।
खेती करै तो हद माँस एक करै।	:	खेती में कड़ी मेहनत करनी पड़ती।
खेती खाद न करै किसॉना, उनके घर दरिद्र समाना।	:	खाद डाले बिना अच्छी फसल की आशाबेकार है।

खेती धन कौ नॉस, जो धनी न होवै पास।	:	कृषि कार्य में देखाभाली जरूरी अन्यथा पैदावार भी ठीक नहीं।
खुदा ने खूब मिलाई जोड़ी, इक अंधा इक कोढ़ी।	:	एक दूसरे की कमी की पूर्ति होना दोनों को हितकर है।
खुंस में मुन्स नई, फिर का चूले में देनै।	:	जरूरत पर काम न आये तो फिर वह किस काम का।
खुरचन खुरचन मथरा कौ, और सब नकल ।	:	सबसे उत्तम खुरचन/मिठाई मथुरा का ही होता।
खुर खॉसी, तोरी दाई के गरे में फाँसी।	:	खाँसी मिटाने का टोटका।
खुशामद सैं/में आमद होत।	:	सेवाभाव बहुत लाभकारी होता।
खूंटा के बल बँदरा नाचै/कुदै।	:	पराधीनता बहुत बुरी होती।
खून के बल्दै/बदलें खून।	:	ईट का जबाव पत्थर से देना।
खून खून कौं मरत।	:	रक्त का संबंध प्रबल होता है।
खून खून को पिचॉनत ।	:	आड़े वक्त पर रक्त-संबंधी ही काम आते हैं।
खरी मजूरी चोखा काम	:	मजदूरी के तुरन्त बाद नकद पैसे मिलना।
खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे	:	किसी बात पर लज्जित होकर क्रोध करना।
खोदा पहाड़ निकली चुहिया	:	बहुत कठिन परिश्रम का थोड़ा लाभ
काम का न काज का, दुश्मन अनाज का	:	किसी मतलब का न होना।
कुत्तों के भौंकने से हाथी नहीं डरते	:	विद्वान लोग मूर्खों और ओछों की बातों की परवाह नहीं करते।
कागा चले हंस की चाल	:	गुणहीन व्यक्ति का गुणवान व्यक्ति की भांति व्यवहार करना।
करे कोई, भरे कोई	:	अपराध कोई करे, दण्ड किसी और को मिले।
कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना	:	जो मिल जाए उसी में संतुष्ट रहना।
काला अक्षर भैंस बराबर	:	बिल्कुल अनपढ़ व्यक्ति
कंगाली में आटा गीला	:	परेशानी पर परेशानी आना

कहाँ राजा भोज कहाँ गाँगू तेली	:	उच्च और साधारण की तुलना कैसी
ओछे की प्रीति, बालू की भीति	:	दुष्ट का प्रेम अस्थिर होता है।
गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है	:	अपराधियों के साथ निर्दोष व्यक्ति भी दण्ड पाते हैं।
घोकांत विद्या, खोकांत पानी।	:	विद्या सुख रटने से, पानी खोदने से।
घोकिया घोकत रऔं, कमरिया/ अलफतिया ब्याह लै गऔ/ठड़ौ।	:	जिसमें तत्परता होती है, वहीं लाभउठा ले जाता है।
घोरण कौ चारौ गदन खांडों, नैन डारौ जात।	:	हैसियत के अनुसार काम दिया जाता।
घोरा की पिछाई और हाकिम की अगाई न गहै।	:	घोड़े के पीछे, हाकिम के आगे नहीं चलना चाहिए।
घोरा की लात, आदमी की बात।	:	दोनों से रक्षा करना कठिन होता।
घोरा कौ गिरौ सॅवर जात, नजर गरौ नई सॅवरत।	:	खोया सम्मान सबसे बुरा होता है।
घोरा घास सैं यारी करै, तो खाय का।	:	प्रेम की भी एक सीमा होती है।
घोरा चलै चार घड़ी, ब्याज चलै आठ घड़ी।	:	ब्याज बहुत जल्दी जल्दी बढ़ता।
घोरा बैंच के सोबौ।	:	बहुत गहरी नींद में सोना।
घोरा पै बैठ के मलकबौ, सबै आउत ।	:	पद पाने पर सभी इतराने लगते।
घोरा मरें, गदन कों राज।	:	उत्तम न रहने पर नीच पुजता।
चंचल नार छैल से लड़ी, खन अंदर खन बाहर खड़ी।	:	चंचल प्रकृति की स्त्री दिखावा अधिक करती है।
चंचल नार की चाल छिपै ना, नीच छिपै न बड़प्पन पाएँ।	:	चंचल स्वभाव की स्त्री और नीच मनुष्य कैसे भी छिप नहीं सकते।
चंचू छिपे बखर के मारे।	:	आलसी व्यक्ति, कामचोर।
चकोर खों चंदा, छोड़ कछू नई भॉउत ।	:	जिससे दिल लगा उसे छोड़कर कहीं सुख नहीं मिलता।

घाव मिट जात गुड/चोट नैं मिट।	:	बीते कष्ट के चिन्ह शेष रहते हैं।
घाव में घाव डारबौ होत चतुरन कौ काम।	:	चालाकों की चालाकी को चतुराई से ही काटा जा सकता है।
घिउ कॉ गऔ खिचरी में।	:	कोई नुकसान नहीं, लाभ।
घिउ नॅगरिअॅन गुर डिंगरियॅन ।	:	थोड़ा थोड़ा करके बहुत खर्च हो जाता है।
घिउ न सिउ, पक्की बनें।	:	कोरी गप्पें मारकर ढ़ोंग करना।
घिनों लड़इया, छींट कौ बागौ।	:	अशोभनीय कार्य।
घिसौ पइसा, बखत पै कामैं आउत ।	:	कभी-कभी बुरा भी काम आ ताजा।
घी कितै गऔं, खिचरी में।	:	कहीं कोई हानिकारक नहीं।
घी घी में गऔं, कै खिचरी में।	:	हर तरह से लाभ।
घी के दिया जराबौ/बारबौ ।	:	खुशी मनाना।
घी खाओ सक्कर सैं, दुनियाँ जीतौ मकर सैं।	:	मीठे बोल से सुख उठाओ मक्कारी से बड़े बने रहो।
घी गुर के वेंगुर सें, कुदई मठा के ठेंगुर सें।	:	अच्छा भोजन करने वाला कमजोर , साधारण भोजन करने वाला बलवान कद काढ़ी का होता है।
घी जाट का, तेल हाट का।	:	शुद्धता का ठिकाना नहीं।
घुट-घुट मरबे की, पीरा का कइये।	:	तिल-तिल कर मरना कष्टदायी।
घुरवा मरें, गदन कौ राज।	:	अच्छे नहीं, तो बुरों का राज।
घुरूवा लोगनें मरत, गदा कैपरी खोय।	:	अँधेरगर्दी का काम।
घूँघट की लाज, नारी कौ साज।	:	मर्यादा नारी की शोभा है।
घूटौ नबै, तौ पेटइ/पेट खों।	:	अपनत्व का ध्यान आ ही जाता है।
घूरे के दिनों, सोउ फिरत/बल्दत ।	:	समय और परिस्थिति में बदलाव तो होता ही रहता है।
घूरे पै कौ सोंनों, उठा लऔ जात।	:	अच्छे को हर कहीं सम्मान मिलता।

घर में रउआ, खेत में मउआ, बुरा होत।	:	घर में दूसरा बसा, खेत का महुआ हानिकर होते हैं।
घर रहें घर की खाएँ, बाहर रहें बाहर की खाए।	:	जैसी परिस्थिति, तैसा काम।
घर लाला, सो बायरै लाला।	:	एक समान सम्मान सौभाग्य की बात।
घर से बाहर भले ।	:	घर से बाहर, अधिक सम्मान सुविधा।
घर सै आसूदा, उधार लेत फिरत।	:	संपन्नता में बेइज्जती कराना।
घरी भर कों दुख, सब दिन कों आराम।	:	थोड़े समय की बुराई हमेशा का सुख।
घरी भर कों बुरबाशन, सब दिन को आराम।	:	थोड़ी बुराई, अधिक भलाई
घरी भर की लड़ाई/बुराई/मुसीबत सब दिन कौ आराम।	:	अधिक लाभ के लिए थोड़ा कष्ट झेलना बुरा नहीं।
घरै मतै मारै, बायरै कुत्ता काटे।	:	दोनों तरफ से मुसीबत ।
घरै मजूरी, परदैसे भीक।	:	घर में मान-सम्मान का विशेष ध्यान परदेस में नहीं।
घाट-घाट कौ पानी पिएँ।	:	बहुत अनुभवी, चतुर चालाक।
घलन लगे, तब बचॉउँन लगे।	:	दिखावटी सहानुभूति दर्शाना।
घाटे की चोट, बाँनिअँई जान्त।	:	मुसीबत जिस पर आती उसके दर्द का कष्ट वहीं जानता ।
घॉम न आसै जेठ मॉस कौ, चौमॉसें जड़कारौ।	:	मौसम के अनुसार हर चीज अच्छी औरबुरी होती।
घायल की गति घायल जानें।	:	जिसे चोट पहुँचती है, पीड़ा का सही दर्द वहीं जानता है।
घायल सेर जोडो घातक होत।	:	चोट खाया अधिक घातक होता है।
घर में घर लड़ाई कौ डर।	:	हमेशा सतर्क रहने की जरूरत।

घर में तो नों लॉघनें, चेरी गाए मल्हार।	:	किसी की मजबूरी का मजाक उड़ाना।
घर में नईया चून चनन कौ, गौऊ की दो पै लड्यो।	:	गाँठ में कुछ नहीं, सपने रईसों जैसे।
घर में उखरी, घर में मूसर, बायरै कूटन जाबै।	:	काम का दिखावा कर बेवकूफ बनाना
घर में चौखरे खों डरात, सेर खों मारबे फैंटा बॉदत।	:	झूठी बहादुरी दिखाना।
घर में करबें लॉघनैं, मालपुआ खानें।	:	शेखचिल्ली सी कोरी कल्पनाएँ।
घर में नौं लॉघनँ, मल्हार काय पै	:	असलियत छिपाना ठीक नहीं।
घर में आई लुगाई, भूले बाप मताई।	:	पत्नी के मोह में माँ बाप से उदासीन होना ठीक नहीं।
घर में नइँया चून चनन कौ, ठाकुर बरी करावें।	:	घर में कुछ नहीं, बातें बड़ी-बड़ी।
घर में जोगा बनाओ, आसानी से नाग झाड़ लो।	:	चालाक लोग घरों में घुसपैठ कर बहुत नुकसान पहुँचाते
घर में नईयों दॉने, डुकरो/मईयो चली भुनॉने ।	:	हैसियत से अधिक दिखावा कोरा दिखावा ठीक नहीं।
घर में पूँजी भांगनई, नेंवत आए साठ।	:	बेवकूफी और बदनामी का काम।
घर में रय, न तीरथ गए, मूँड़ मुड़ॉय जोगी भए।	:	पाखंड़पूर्ण आचार-विचार।
घर में पूँजी भांग नईयाँ, बरातै न्योंत आए।	:	झूठी शान में मूर्खता का काम करना अपनी
घर की फूट, जगत की लूट।	:	आपसी कलह से दुनिया लाभ उठाती ।
घर की मुर्गी, दार बरोबर।	:	सहज उपलब्ध सुविधा।
घर के कुरवा सँई ऑख फूटत।	:	घर की फूटन घर बालों से।
घर के सब जन घर में न समॉय, आठ	:	समस्या में और अधिक बढ़ोत्तरी।

लठेंगर पाउने।

घर के जानें बरातै गये, रानीपुरा कठवा में दए।	:	अच्छा काम करते समय मुसीबत में पड़े।
घर के कौरे सें आग फूटत।	:	घर के लोग ही भेदी होते है।
घर केई चोरी करें, कओ राम घर केसै चलै।	:	घर के ही घाती और बेईमान हों तो गृहस्थी का काम गड़बड़ा जाता।
घर के पीरन खों, गुर कौ मलीदा।	:	निकट वाले को महत्वहीन समझना।
घर के न घाट के।	:	कहीं के नहीं रहे।
घर के भीतर सेर, बायरै लैडू लड़इया।	:	घरवालों पर हावी, बाहर डरपोक।
घर के रोवै, बाहर के खाएँ।	:	घरवालों को सताना, बाहर वालों को धन संपत्ति लुटानां
घर कौ उसारौ, लरके सारौ।	:	समस्या का आसान हल मिल जाना।
घर कौ खेत न खेतीबारी, हैकनियाँ की नम्बरदारी।	:	झूठा बड़प्पन दिखाना।
घटघट की राम जानें।	:	प्रभु सर्वज्ञ और सर्वत्र ।
घटघट में राम बसे हैं।	:	
घड़ी में तोला, घड़ी में मॉसा।	:	अस्थिर स्वभाव, क्षण में खुश क्षण में नाराज
घनी घनी जब सनई बोबै तब सुतरी की आसा होवै।	:	सन का बीज घना बोवै, तभी अच्छी फसल की आशा रखें।
घमंड़ तौ राबनई कौ नई रऔ।	:	महाबलियों का घमंड़ भी चूर हो जाता।
घमंड़ी का सिर नीचा।	:	अहंकारी को नीचा देखना पड़ता।
घरई बैद मरै कैसे।	:	अनिष्ट की आशंका बहुत कम।
घर आई लछमी खों लात नईं मारी जात।	:	धन संपत्ति का सम्मान किया जाता अपमान नहीं किया जाता।
घर आए कुत्तन तक खों नईं भगाऔ	:	किसी भी मेहमान का अपमान नहीं किया

जात।		जाता।
घर आएँ मारै मताई, बाहर कुत्ता काटै।	:	दोनों और मुसीबत ।
घरे पूजै न अहि, घरे पूजै न अहि।	:	अकल की कमी।
घर आएँ नॉग न पूजें, बॉमी पूजन जायं।	:	मौके से लाभ न ले पाना।
घर कय मोय खोल देख, ब्याऔ कय मोय कर देख।	:	दोनों समस्यायें पहले छोटी दिखती फिर बड़ी बन जाती हैं।
घर का जोगी जोगना, ऑन गॉव का सिद्ध।	:	बुद्धिमान का सम्मान घर से अधिक परदेस में होता
घर-भेदी अधिक खतरनाक होता।	:	घर का भेदी लंका ढ़ाए।
घरकिन खों हिरना सी छरकैं, बात करें सास सें लरकें।	:	नई बहू घर वालों से दूर-दूर रहती और सास से झगड़ती।
घर की खॉड़ किरकिरी, चोरी कौ गुर मीठौ।	:	मुफ्त का माल ज्यादा पसंद होता ।
घर की जमा-पूँजी मिटा, दूसरन के ऑगें हॉत फैलाउत।	:	अपना धन बर्बाद कर पराई आशा करना मूर्खता है।
गोबर मैला नीम की खली, इनसें खेती दूनी फली।	:	गोबर की खाद, नीम की खली फ्सल को लाभदायक होती है।
गोरी होरी में जाए कल्ली करेजे में अटकी।	:	दिल लगा गधी से हूर को कौन पूँछे।
गोलियाँ सैं भलों बच जात, बोली कौन नैं बचत।	:	बोली गोली से भी अधिक कौ खतरनाक होती है।
गोली से बचें पै बात सें न बचें।	:	कठोर बोला बॉनी गोली से भी अधिक खतरनाक होती है।
गोंऊँअॅन संग बथुआ खों सोऊ पानी मिल जात।	:	भाग्य से भाग्य जुड़ा होता।
गोंऊँ आवै बाल, खेत बनाबै ताल।	:	गेहूँ में बाल आए तो, तुरंत पानी दो।
गोंऊँ कलुरिया, भैंस डगरिया।	:	अच्छे जानवरों की पहचान।

बादर देख के/होत नईं, पोतला नईं फोरौ जात ।	:	उतावली का काम ठीक नहीं होता है।
बॉदी के ऑगे बॉदी, मेह गिनै न ऑधी।	:	व्यसनी खतरों से नहीं डरता।
बाणियाँ कौ साढौ, अहिर कौ गाड़ौ नैन छूटत।	:	आदत किसी की नहीं छूटती।
बानियाँ गढ़ौ, पथरा उखारत।	:	बनियाँ बहुत धैर्यवान होता है।
बाप ओझा, मॉ डायेंन ।	:	दोनों खतरनाक ।
बाप की जागीर जान्त।	:	पूरा हक या अधिकार समझना।
बाप की मरन, काल की परन।	:	दुहरी मार, विपत्ति पर विपत्ति।
बाप गैरै मोगरौ, पूत गैरै रुदाक्ष।	:	एक से बढ़कर एक पाखंड़ी।
बाप तौ ठाडेंई मूतत, बेटा कोंडेरा दै कैं मूतत।	:	बेटा बाप से बढ़कर खुराफाती ।
बाप न मारी टीटरी/मेढ़की/लौखरी, बेटा तीरंदाज ।	:	फालतू की डींगें हॉकना।
बाप देवता, पूत राक्षस।	:	विपरीत आचरण।
बाप पै पूत जात पै गोरा, बहुत नैं थोड़ा सा।	:	बेटे पर बाप का घोड़े पर जात का असर कुछ न कुछ जरूर होता।
बाप बेटा बाराती/की बरात, मताई बिटिया गौरैयों।	:	बराती घराती सब घर के। बाहर का कोई नहीं।
बाप भलौ/बड़ौ न भइया, सबसें बड़ा रूपैय्या।	:	रिश्तों से बढ़कर रूपया पैसा।
बाप भिखारी, पूत भंड़ारी।	:	अपना-अपना भाग्य ।
बाप मरा बेटा गया, इसका टोटा उसमें गया।	:	लाभ-हानि बराबर-बराबर।
बाप मरे रोवै, गोव गायें सोवै।	:	जैसी परिस्थिति वैसा काम ठीक रहता है।
बात कहै जग-भाती, रोटी खाए मन-भाती।	:	बात वह कहे जो दूसरों को अच्छी लगे।

भोजन अपने मन का खाए।	:	
के बन रे बटेसा, बनावे में का बातत।	:	कोरी बातें बनाने में क्या लगता।
बातन के बतखोर, बुते कौ एकउ नइयों।	:	बातन में चतुर, काम को कामचोर।
के लड्डुअनें, फोरबे में का बात. बातन के लड्डुअन सें, पेट नईं भरत।	:	कोरी बातों से काम नहीं चलता। कोरी बातों से पेट नहीं भरता है।
बातन के गुलेला, हारकोय अलबेला।	:	एक से बढ़कर एक गप्पें हॉकना।
बात को बतंगड़, बनावे में का लगत।	:	छोटी सी बात को बड़ा कर देना।
बात गई, फिर हॉत नईं आती।	:	मौका चूके, हाथ नहीं आता।
बात पर बात ।	:	मौके पर सही उत्तर देना ही उचित।
बात बनै न बात बताबै, बिगरी बात न बात बनाबै।	:	हर बात गुप्त रखना ठीक होता।
बात बात में भॉत है, भाँत भाँत में बात।	:	कहने के ढ़ग से बात अच्छी-बुरी हो जाती है।
बातन में अफराऊत, परस कैं ल्यात नईयाँ।	:	कोरी बातों से पेट नहीं भरता है।
टांय सैं नैं मानत, तूं लातैं सैं मारत बातै परहै।	:	समझाने पर न माने तो दंडित करना जरूरी होता है
बातन सैं पेट, नईं भरत।	:	बातों से नहीं भोजन से पेट भरता।
बात रह जात, बखत निकर जात।	:	समय पर हर बात की कीमत होती।
बात लाख की, करनी खाक की।	:	बातें बड़ी काम छोटे ।
बातन हॉती पाइये, बातन हॉती लात।	:	मान, अपमान दोनों
बातें हजार की, गाँठ में छिदॉम नइँयों।	:	मन बड़ा, भाग्य कमजोर।
बादर ऊपर बादर धाबै, कहै भड्डुरी जल आतुर आबै।	:	पानी गिरने की शीघ्र संभावना।

बहुत गई थोरी रई, थोरी हू अब जाय, बहुत राई थोरी रई, थोरी हू मैं चेत।	:	थोड़ी सा हानि होने पर ही चेत जाने में ही भलाई।
बहुत दोस है लाड़ में, ताड़न बहु गुन जान।	:	अनुशासन लाभप्रद होता अधिक लाड़ दुलार हानिकारक होता है।
बहुत सोना, दरिद्दर की निसानी।	:	अधिक धन बर्बादी के लक्षण।
बहू सरम की, बेटी करम की।	:	बहू शर्मीली हो, बेटी कर्मीली हो।
बाई ने जौ का करौ, फरा में घी धरौ।	:	कृपणता में भी थोड़ी उदारता ।
बाई तो खा लेय/लै तब बॉयनौ/बॉयनौ दइहै/बोटे।	:	पहले स्वार्थ फिर परमार्थ।
बॉउन तोला, पाव रत्ती ।	:	बिल्कुल सही।
बाऔ खों तिबाओ, दैनें परत।	:	विपत्ति से बचने का उपाय जरूरी।
बाघ बकरी ऐकै घाटै पानी पियत।	:	प्रेम-भाव का व्यवहार, भेदभाव नहीं।
बॉझ की सौ जोरै ।	:	कमजोरी का लाभ लेना।
बॉझ न बिआए तौ, बूढ़ी न कहाय।	:	अच्छा स्वास्थ्य भी बुढ़ापा नहीं रोक पाता।
बॉझ न जाने, प्रसव/प्रसूत की पीरा।	:	जिसने भोगा नहीं वह कष्ट की पीड़ा क्या जाने।
बॉझ ब्यॉनी, सौठ उड़ानी।	:	अत्यधिक खुशी की बात ।
बोटेन बरक्कत होत।	:	दान-पुण्य करने से बचत होती है।
बाढ़ लगाई खेत खों, बाढ़ खेत खों खाय।	:	रक्षक ही भक्षक बन जाए तो
बॉड़ी सबसै चॉड़ी।	:	बॉड़ी अक्सर बड़ी तेज, चंट होती।
बाड़ौ धन, बिगरे पूत ।	:	अधिक धन-दौलत से संतान बिगड़ जाती है।
बाढ़े पूत पिता के धर्मा, खेती उपजै अपने कर्मा।	:	पिता के पुण्य से बेटे की उन्नति और कर्म से खेती फलती-फूलती
बात कहे लाख की।	:	जो बोलै वजनदारी से बोलै।

बरसै कऊँ निकरै, अड़वारे तरें हो।	:	बाहुबलियों की दृष्टि से कोई बच कर नहीं निकल पाता।
बरसै मेघ स्वॉत बिसॉत, चलै नैं रॉटा बजै नैं ताँत ।	:	जैसी परिस्थिति तैसा काम।
बरसै राम धड़ाकै सै, बुढ़िया मर गई फॉके सैं।	:	अच्छी वर्षा की कामना।
बरै बौ लरका जो, बसोर के झारें जिये।	:	अपमान से मिला सुख बेकार।
बरै बौ सौनों, जीसैं नाक कान छिदै।	:	कष्ट पाकर मिला सुख बेकार।
बस्त कोंन बिधना रची, जो नईं होय बिनास ।	:	एक न एक दिन सब कुछ नष्ट होता।
बंस बड़ौ बिटम बड़ौ, बंस घटौ बिटम घटौ।	:	बड़ा परिवार बड़ी समस्या छोटे की छोटी।
बसना सहर का, खेत नहर का।	:	दोनों लाभदायक।
बसकरे के ऑड्रे खों, हरौइ हरौ।	:	जो जैसा तैसी सोच।
बसत न राखै आपनौ, चोरै गारीं देय।	:	स्वयं लापरवाह दूसरों पर दोष मढ़ना।
बसंत जाड़े कौ अंत।	:	जाड़े की समाप्ति का संकेत ।
बसे तला में, मगर सौं बैर।	:	संभव ही नहीं।
बसोर कौ मठा, आए न कौनउ काम।	:	जो काम न आए बेकार।
बल से राजा सब है, बल बिन बड़ा न कोय।	:	शक्ति की दुनिया। कमजोर को कोई नहीं पूँछता।
बहरा सो गहरा।	:	बहरा गंभीर होता।
बहम कौ इलाज काठअइ नों नइँयों।	:	शक की कोई दवा नहीं।
बहादुर खों घाव छाती में लगत पीठ में नई।	:	बहादुर वहीं जो आफतों का सामना बहादुरी से करे।

बहिन घर भाई कुत्ता, ससुर घर जमाई कुत्ता।	:	बिना सम्मान का जीना बेकार।
बनियाँ मित्र न वेस्या सती।	:	झूठी आशा या विश्वास के पात्र।
बनियाँ मित्र न वेस्या सती, कागा हंस न बगला जती।	:	इनमें से कोई भी विश्वासपात्र नहीं।
बनियाँ मारै जान, ठग मारै अनजान।	:	अपनी-अपनी चतुराई का ढंग।
बनी के सँगी, बिगरै पै अगूंठा दिखाउतई।	:	अच्छे के सब सँगी साथी, बुरे समय पर संग साथ छोड़ देते
बनी बनी की दुनियाँ/के सब सँगी, बिगरी कौ कोउ नईं।	:	अच्छे के सब सँगी साथी बुरे समय का कोई नहीं।
बनी न बिगारी, तौ बुंदेला काय के।	:	बुंदेला ठाकुर बड़े झगड़ालू होते है।
बनी बिगारे, बॉनिया, बनी बिगारै जाट ।	:	स्वार्थ पर चोट आए तो दोनों उग्र हो जाते।
बमूँरा कौ बीजा बउत, ऑमन की आस करत ।	:	जैसा बोओगे तैसा ही तो काटोगे।
बर्रन के छत्ता में लोड़ मारकें, आफत मोल लै लेओ।	:	स्वयं मुसीबत मोल लेना।
बर्रन के छिदनों में, लोड़ा नई घालौ जात ।	:	जानबूझकर मुसीबत मोल नहीं ली जाती।
बर मरै चॉय कन्या, दच्छना सैं काम।	:	घोर स्वार्थी किसी की हानि की चिंता नहीं करते।
बरत आग में, कोउ नईं जातई।	:	जानबूझकर खतरा मोल न ले।
बरसन लगे अॅगनउआ, पटा फेर दो दउआ।	:	मौके से लाभ लेना हितकर होता।
बरसत बारिद बूँद नहिं, चाहत चढ़न अकास-तुलसी	:	गाँठ में कुछ नहीं, सपने बड़े-बड़े।
बरसन लगो ऊतरा, अन्न न खॉय कूतरा।	:	अच्छी वर्षा होने और खुशहाली के लक्षण।

बंद मुट्ठी लाख की, खुल जाए तौ खाक की।	:	साख बनी रहना हितकर होता है।
बंदर की दोस्ती, जी का जंजाल ।	:	खतरनाक से सावधान रहे।
बंदर घुड़की देना।	:	धौंस देना, धमकाना।
बंदरा का जानें, अदरक कौ स्वाद ।	:	मूर्ख से समझदारी की आशा बेकार।
बंदरा के गरै में, मोतियॅन की माला।	:	हानि के अलावा कोई लाभ नहीं।
बदरा हाट उस्तारा परौ, प्राण बचाबौ कठिन परौ।	:	खतरनाक खेल, जी का जंजाल।
बॅदर बैला जेठौ पूत, बाज बाज कड़ै (विरला) सपूत।	:	अधिकतर सुस्त निकम्मे होते, ही उत्तम पैदा होता।
बदी के समुन्दर में, नेकी खों का टेरत।	:	झूठी अपेक्षा या आशा बेकार।
बदौ दुक्ख कोट उपाय करौ, काटै नईं कटत।	:	भाग्य लिखा भोगना पड़ता।
बनज करे बाँनियाँ, और करें रीस	:	बनिया ही व्यापार में सफल होता।
बन पालक अरू भैस उखारी, जेठ मॉस में चार दुखारी।	:	जेठ के महीने में चारों दुखी रहते।
बन में उपजे सब कोए खाए, घर में उपजे घर ही खाए।	:	जंगल की संपत्ति सबकी घर की केवल घरवालों के लिये।
बनतन देर लगत, बिगरत नईं।	:	निर्माण में समय लगता विध्वंस में बिल्कुल हीं।
बनया बॉमन, पनयाँ सॉप, इनमें बिस न होय आप।	:	ये तीनों विषैले नहीं होते हैं।
बनाईं खाईं गकरियों गाएँ गीत, जे चले चैतुआ मीत।	:	मतलब तक रहे सँगी-साथी।
बनियाँ कौ मित्र साहू।	:	एक से स्वभाव वालों में दोस्ती अच्छी निभती
बनियाँ अपने बाप तक खों ठग लेत।	:	बनियों महा ठगैल होता है।

बड़े बोल कौ, मौ करौ।	:	घमंडी का सिर नीचा।
बड़े बोल कौ, नैचौ मूँड़।	:	घमंडी का घमंड चूर-चूर होकर रहता।
बड़े भाग सें पाऊत दाद खाज उर लाज।	:	सुख-दुख भाग्य लिखे की बात।
बड़े बड़े सॉप पथरियॅन दै मारै, जो बिच्छू सौ डंक उठॉए।	:	अपने बड़प्पन की ढ़ींग अहंकार के बोल।
बड़े सपूत करें रूजगार, सोरा सै के करें हजार।	:	घाटे का सौदा।
बड़ौ का दुख बड़ा, छोटों का छोटा होय।	:	जैसी जिसकी हस्ती तैसा सुख दुख।
बड़ौ की, बड़ी बात ।	:	धनवानों के काम बड़े।
बड़ौ कौर खा लैवै, पै बड़ों बोल ना बोलै ।	:	अहंकार के बोल ठीक नहीं होते।
बड़ौ लाड़ मोरी मौसी करें, छिनक छिनक दोउ कौर भरें।	:	लाभ से अधिक हानि ।
बटिया खेती सॉट सगाई, जामें नफा कोंन्नें पाई।	:	कोई लाभ का सौदा नहीं।
बत्ता का करै/जरै, तेलइ नइयाँ।	:	आवश्यक वस्तु नहीं, काम कैसे हो।
बत्तीस दॉतन, बीचों जीभ ।	:	मुसीबत में कठिन समस्या में फॅसे ।
बद अच्छा/अच्छौ, बदनाम बुरा/बुरौ।	:	बदनामी बहुत बुरी चीज है।
बद बदी सें न जाए, तौ नेक नेकी सेंऊ काए जाए।	:	जब बुरा बुरे काम नहीं छोड़ता तो फिर भला भलाई के काम क्यों छोड़े।
बदन में नई लत्ता, पान खाएँ अलबत्ता।	:	गाँठ में कुछ नहीं, शान बड़ों सी।
बदन के चोचले जानबौ, हर कौ के बस की नइयाँ।	:	बड़ों के नखरे, समझ से परे होते हैं।
बड़न सँग खेती करी, भुस बॉटन अबेरा परी।	:	बड़ों के सँग छोटे पिस जाते।
बड़ा रोय बड़ाई कों, छोटा रोय पेट कों (खों)	:	जिसकी जैसी हैसियत तैसी उसकी सोच।

बड़ा निबाला खाइये, बड़ा बोल न बोलिये।	:	चरमडी व्यवहार घातक होता है।
बड़ी ननद, शैतान की।	:	दुखदायी व्यवहार ठीक नहीं।
बड़ी मछली, छोटी खों खात।	:	हमेशा बड़े छोटों को सताते।
बड़ी मुतॉन औ लम्बे कान, हर देखे पै तज दै प्रान।	:	बेकार बैल की पहचान।
बड़ी पातर कौ, बरा बड़ौ।	:	मुँह देखा व्यवहार।
बड़ी बऊ, बड़े भाग।	:	बड़े को बड़प्पन मिलता ही है।
बड़ी मार करतार की, दिल/चित्त सैं देहु निकार	:	दिल में विशेष स्थान न देना ही बड़ी सजा है।
बड़ी बउ/बाई ने बड़ौ जौ जस करौ, फरा में घी धरौ।	:	चापलूसी का व्यवहार।
बड़े की पच्छ, गरीब खों धर दबा लेओ।	:	मुँह देखा काम, पक्षपातपूर्ण व्यवहार।
बड़े की बड़ाई, न छोटे की छुटाई।	:	सब धान बाईस पसेरी मानना।
बड़े बड़े बहे जात, भेड़िया पार जान चाहें। (चाय)	:	जहाँ बड़े समर्थ नहीं वहाँ छोटों की क्य औकात।
बड़े बड़े बउत जॉएँ, ढोलिया कय मोय पार लगाब ।	:	बड़ों के आगे छोटों की क्या पूँछ।
बड़े कौ बाप, छोटे की मतॉई, मॅजले कौ कोऊनई।	:	'सरल' दुनियाँ की रीति, मॅझले को कहीं कोई महत्व नहीं।
ब्याव खों बारा बरस बाट हेरी, चलाए खों दमदम पारे।	:	अधिक उतावलापन दिखाना कभी ठीक नहीं होता।
ब्याव भऔ, न बरातै गए।	:	बिल्कुल अनुभवहीन ।
ब्याव भएँ पछतात, जी कौ नईं भऔ पछतात ।	:	सबके अलग-अलग अनुभव।
ब्याह हुआ नहीं, गौने को झगड़ा।	:	बेमतलब की बात।
ब्याही बेटी का राखना, हाथी का राखना	:	अधिक खर्च की जड़ मुसीबत लाती।

बरोबर।

ब्याही बहू, साग बरोबर।	:	मनचाहा उपयोग करना।
बइ बइअर के, अड़ा के पड़ा।	:	उसी स्त्री की संतान ।
बाई बाई फ़िट, बुरी बात।	:	बुरी बात शीघ्र फैल जाती है।
बूत कोऊ नैं, औ औ धरती पै।	:	मनुष्य जन्म प्रभु की देन है।
बऊत गंगा में, हात धो लो।	:	मौके से लाभ ले लो।
बकरा की मताई, कॉनौ खैर मनाएँ।	:	एक न एक मुसीबत आकर रहती।
बखत चूकें, का पछतॉनें।	:	बाद का पछतावा बेकार ।
बख्त फेलें जुगन को फेर पर जात।	:	बीता समय लौटकर कभी नहीं आता।
बगल में तबा, तौ चायें जॉ पबा।	:	साधन हो तो हर जगह सुविधा।
बगल में मौड़ा, गाँव में ढ़िढ़ोरा।	:	बेवकूफी का झूठा प्रचार।
बगार नई लग पाऔं, बखिया उधेड़ दई।	:	अच्छे काम में बाधा डालना।
बघार लगौ नईयाँ, उचक्कन नें डेरा दऔ ।	:	अचानक आई मुसीबत ।
बच्छा बूँदै नोंनों हात, डोर पगैया मोरे हॉत।	:	व्यर्थ की उछलकूद ।
बदन की शरीगत, दोस्ती कैसे करें।	:	संभव ही नहीं। स्तर के अनुसार कार्य एवं व्यवहार
बदन की बातें, बड़ी जानें।	:	जितनी साख उतना काम।
बड़न कौ, बड़ौ पेट।	:	बड़े अधिक लालची होते है।
फूहर के घर उगी चमेली, गोबर मॉड उसी पर गैरी।	:	बेवकूफ को अच्छे बुरे की पहचान नहीं होती।
फूहर की मैल, फागुन में उत्तरत।	:	महाआलसी व्यक्ति।
फूहर चलै, सब घर हलै।	:	दिखावा अधिक काम कम।
फेरफार चुटिया पै तात, पान्डे लये आये बारात ।	:	अनावश्यक बोझ डालना

फोकट कौ हिंडोला, हमें झूल लैन देओ।	:	मुफ्त में स्वार्थ सिद्ध करना।
फोकट कौ चंदन, घिस मोरे नंदन।	:	बिना कुछ खर्च किये काम निकालना।
फोकट में मिले ती, हमई खों ल्याओ।	:	मुफ्त की वस्तु का लालच।
फोरा मिट जात, गूद नई मिटत।	:	पीड़ा के चिन्ह शेष रह जाते है।
व्याऔ बरात खों को हैं, इनै गिनें चार जनें।	:	कार्य कर्ताओं की कमी।
ब्याऔ न चलाऔ, झूठ मूंठ कौ चाऔ।	:	झूठी कल्पना, झूठा प्रचार।
रेस्टुरेंट औ दच्छना, पाछे मिले कुच्छना।	:	समय पर मिल जाए सो सही बाकी सब झूठ।
ब्यारी कभऊँ न छोड़िये, ब्यारी से बल आए।	:	रात्रि-भोजन हमेशा लाभ देता।
व्याब नई करौ, बरातें तौ देखी ।	:	कुछ न कुछ अनुभव तो है ही।
ब्याज मूर सैं, प्यारौ होत।	:	अधिक प्रिय होता है।
ब्याज बढ़ायें धन घना, रॉड बढ़ाये छोह/क्रोध।	:	दोनों चीजें अपनी-अपनी जगह ठीक।
ब्याव काज में हजार तरों के, आठ काठ जोरनें परतई।	:	शादी जैसे महत्वपूर्ण कार्य की व्यवस्था में काफी परेशानियों आती।
ब्याव कौ भरौं, चोए जिति परौ	:	भीड़भाड़ में व्यवस्था गड़बड़ा जाती।
परिये सदा, खेलिये सदा।	:	सादा जीवन सुखी रहता है।
पैरी ओढ़ी धनों दिपै, लिपौ पूतौ घर खिलै।	:	सुसज्जित स्त्री, लिपा-पुता घर शोभा देते।
पैलई कौर में माँछी।	:	प्रारंभ से ही अपशकुन होना।
पैलई सँ ठॉड़ेते, हॉत जोरें नैया खेबे।	:	अवसर की ताक में उधार बैठे थे।
पैलॉ मूँड़ कटौअल अब धरमराज।	:	पहले शेर बाद में सियार।
पैलॉ अपुन पैरबौ सीकौ, तब दूसरन कों सिकाओ।	:	पहले अच्छी बातें अपनाओ फिर दूसरों को सिखाओ।
पैलॉ अपऔ घर, पाछें बायरे के।	:	स्वार्थ पहले परमार्थ बाद में।

पैलॉ दाम, पाहूँ काम।	:	पहले पैसा, पीछे काम ।
पैलॉ दुख के बीजा बऊत, फिर पॉछै पछतात ।	:	बुरा करके पछताना।
पैलॉ घर कें, पाछें बायरे के।	:	स्वार्थ पहले परमार्थ बाद में।
पैलॉ तौलौ, फिर बौलौ।	:	सोच-समझ कर बोलना चाहिये।
पैलॉ सबा सेर, पाहूँ सबा पाव ।	:	जैसा मौका तैसा भाव।
पैलॉ मारै, सो मीर।	:	पहले हमला बोलने वाला लाभ में रहता है।
पैलॉ छेरी दूसरी गाय, तीसरी भैंस दुही न जाए।	:	प्रकृति प्रदत अंतर दिखलाई पड़ता है।
पैलेइ चूँमा गाल काट खाए।	:	आरंभ में ही अपशकुन ।
पैलैं अपाहे मौ मुसिका देओ, पाछेन औरेनें टोकौ।	:	नियम का पालन पहले स्वयं करो फिर किसीऔर को शिक्षा दो।
पैलें लिखो बाद में देओ, भूल परै कागज से लेओं।	:	लिखी पढ़ी बात ठीक होती।
पैलें तौलौ, पाछे बोलो।	:	सोचकर बोलो।
पैलै बोलत नइँयों, पाछें छोड़त नइँयों।	:	पहले बोलते नहीं पीछे छोड़ते नहीं।
पैलै मारै, पाछे सॅवारै ।	:	दोहरी चाल चलना।

6. बुन्देली मुहावरें एवं लोकोक्ति कोष

"मुहावरा

ऐसे पदबन्ध को कहा जाता है , जिसका शाब्दिक अर्थ तो कुछ और निकलना है, परन्तु लाक्षणिक अर्थ कुछ और निकलता है। जैसे 'वह चैकन्ना हो गया ' इस वाक्य में चैकन्ना का अर्थ 'चार कानों वाला ' होता है , परन्तु कोई भी मनुष्य चार कानों वाला ' नहीं होता। अतः इसका लाक्षणिक अर्थ हुआ 'बहुत सावधान'।

मुहावरा शब्द मूलतः अरबी भाषा का शब्द है , जिसका शाब्दिक अर्थ होता है- अभ्यास करना।

लोकोक्ति

किसी दृष्टान्त, घटना या परिस्थिति पर आधारित कथन होता है।

लोकोक्तियाँ सामाजिक नीति और आदर्श स्थापित करने का माध्यम बनती हैं।

लोकोक्तियों को सूक्ति अथवा सुभाषित भी कहा जाता है।

मुहावरे की विशेषताएँ

मुहवरा प्रसंग के अनुरूप अर्थ देता है।

मुहावरा पूर्ण वाक्य नहीं होता है।

मुहावरे का सामान्य अर्थ नहीं, विशिष्ट अर्थ लिया जाता है।

मुहावरों और लोकोक्ति में प्रमुख अंतर

1. संरचना और अर्थ:

मुहावरे: आमतौर पर वाक्यांश होते हैं जिनका शाब्दिक अर्थ और वास्तविक अर्थ भिन्न होता है। ये किसी विशेष स्थिति या भावना को प्रकट करने के लिए होते हैं।

लोकोक्ति: छोटे-छोटे वाक्य होते हैं जो जीवन के अनुभव , नीति या नैतिकता को व्यक्त करते हैं। इनका अर्थ शाब्दिक और वास्तविक दोनों होता है।

2. प्रयोग:

मुहावरे: विशेष परिस्थितियों में किसी भावना या क्रिया को संक्षेप में प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होते हैं। जैसे , "दिल पर पत्थर रखना" का अर्थ है अपने भावनाओं को नियंत्रित करना।

लोकोक्ति: समाज में प्रचलित सत्य या अनुभव को व्यक्त करती हैं। जैसे , "बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद" का अर्थ है जो व्यक्ति किसी चीज़ की कद्र नहीं जानता, वह उसकी महत्ता नहीं समझ सकता।

3. संदर्भ और उद्देश्य:

मुहावरे: भाषा को सजाने और बोलचाल को रोचक बनाने के उद्देश्य से प्रयोग किए जाते हैं।

लोकोक्ति: जीवन के पाठ , नीतियां, और सामाजिक सत्य को संक्षेप में व्यक्त करने के लिए प्रयोग की जाती हैं।

चतुर खों इसारौ भौत।	:	समझदार को संकेत काफी।
चनन की खेती, खुटत जाएँ सैं नौंनी।	:	थोड़ा थोड़ा दान पुण्य करते रहना ठीक रहता है।
चनन के धोकैं ककरा/मिरचै न चबा जइयो।	:	सबको एक जैसा समझने की भूलन कर बैठना।
चना अधपका जौ को काटै, गेहूँ बाली लटकैं काटै।	:	फसल काटने का सही नियम।
चना और चुगल, मुँह लगा बुरा।	:	अधिक मुँह लगे दोनों घातक
चना खुटें खुटें जान देओ, भाग न खोटौ होय।	:	थोड़ा बहुत दान पुण्य होता रहे तो कोई घाटा नहीं।
चना चिरांजी हो रय, गौउँ मुनक्का/मउआ हो रय दाख।	:	हर चीज बेहद महँगी, महँगाई दुखदायी ।

चना चिरोंजी हो रय, गौउँ होरय दाख।	:	महँगाई का दुष्प्रभाव ।
चना चित्रा चौगुना, स्वाँति गेहूँ होय।	:	चना और गेहूँ बोने के शुभ मुहूर्त।
चना और चुगल जॉदाँ मौ लगत।	:	मनुष्य को स्वभावतः दोनों प्रियहोते हैं।
चना भदारौ जौं हरिया, गेहूँ काटौ ठकुरिया।	:	कटाई का उपयुक्त समय व फसल काटने के सही लक्षण।
चंपा के दस फूल, चमेली को एक कली।	:	अपने-अपने गुण का प्रभाव।
चमचोला को बाप बकलफोर।	:	बेटा बाप से बढ़कर चतुर ।
चमड़ी जाए पै दमड़ी न जाए।	:	महाकंजूस ।
चमत्कार के बिना, नमस्कार नईं होत।	:	काम से नाम मिलता, शान बढ़ती
चमार के कोर्से ढ़ोर नईं मरत।	:	दूसरों के बुरा सोचने से किसी का कुछ नहीं बिगड़ता।
चट मग्नी पट्ट ब्याव।	:	तत्काल का काम ठीक रहता।
चट्ट रॉड पट्ट ऐबाती/ब्याव	:	रॉड का तत्काल पुनर्विवाह होना।
चट हगन गए पट्ट मुँतास लग आई।	:	चंचल प्रकृक्ति, बहानेबाजी।
चढ़ जा बेटा सूली पै, भलौ करेंगें राम।	:	खतरनाक परिस्थिति में डालना।
चढ़तौ बाराती सौ कौ, लौटतौ नौं कौ।	:	काम निकला, मान घटा।
चढ़ाये की नाइँन इतकी बुरी न उतकी भली।	:	न कुछ कहते बने न कुछ सुनते।
चढ़ी बेल काटी नईं जात।	:	किसी का बनता हुआ काम बिगाड़ना पाप होता हैं।
चढ़ी ज्वॉनी मॉझा ढ़ीला।	:	भरी जवानी में कमजोर पड़ना।
चढ़ेगा सो गिरेगा।	:	साहस बड़ी चीज है।
चढ़े तबा पै सबउ रोटी सेंक लेत।	:	मौके से लाभ सभी उठाते।
चतुर की चार जॉगा।	:	चतुर व्यक्ति को हर कहीं सम्मान व सुविधा मिलती है।
चतुर की चार सैंनें परत।	:	योग्य की डॉट फटकार भी लाभकारी होती।

चतुर खों चौगुनी, मूरख खों सौ गुनी।	:	चतुर से मूर्ख की समस्यायें जटिल होती।
चतुर खों चिंता बड़ी/सौ गुनी।	:	चतुर पर जिम्मेदारी का बोझ अधिक होता है।
चंदन की लकड़ी भली, भली न गाड़ी काठ की।	:	दुनियाँ में संख्या नहीं गुण की कीमत होती है।
चंदन पड़ौ चमार के, नित उठ कूटै चॉम।	:	जिसका जैसा जाति स्वभाव तैसा उसका काम।
चंदन संग बॉदें होड़ बमूरा	:	बेतुकी प्रतिद्वंदता।
चनन की खेती जब तब खोंटत रऔ।	:	थोड़ा थोड़ा करके लाभ लेते रहना ठीक होता।
घूरे कौ सोंनों, हर कोउ उठा लेत।	:	अच्छी चीज की हर कहीं कीमत ।
पेंट भरौ, बदन बदन के कान काट।	:	उम्र से कम चतुर होशियार अधिक।
घोकांत विद्या, खोकांत पानी।	:	विद्या सुख रटने से, पानी खोदने से।
घोकिया घोकत रऔं, कमरिया/ अलफतिया ब्याह लै गऔ/ठड़ौ।	:	जिसमें तत्परता होती है, वहीं लाभउठा ले जाता है।
घोरण कौ चारौ गदन खांडों, नैन डारौ जात।	:	हैसियत के अनुसार काम दिया जाता।
घोरा की पिछाई और हाकिम की अगाई न गहै।	:	घोड़े के पीछे, हाकिम के आगे नहीं चलना चाहिए।
घोरा की लात, आदमी की बात।	:	दोनों से रक्षा करना कठिन होता।
घोरा कौ गिरौ सॅवर जात, नजर गरौ नई सॅवरत।	:	खोया सम्मान सबसे बुरा होता है।
घोरा घास सैं यारी करै, तो खाय का।	:	प्रेम की भी एक सीमा होती है।
घोरा चलै चार घड़ी, ब्याज चलै आठ घड़ी।	:	ब्याज बहुत जल्दी जल्दी बढ़ता।
घोरा बैंच के सोबौ।	:	बहुत गहरी नींद में सोना।
घोरा पै बैठ के मलकबौ, सबै आउत ।	:	पद पाने पर सभी इतराने लगते।
घोरा मरें, गदन कों राज।	:	उत्तम न रहने पर नीच पुजता।
चंचल नार छैल से लड़ी, खन अंदर खन बाहर खड़ी।	:	चंचल प्रकृति की स्त्री दिखावा अधिक करती है।
चंचल नार की चाल छिपै ना, नीच छिपै न	:	चंचल स्वभाव की स्त्री और नीच मनुष्य कैसे भी

बड़प्पन पाएँ।		छिप नहीं सकते।
चंचू छिपे बखर के मारे।	:	आलसी व्यक्ति, कामचोर।
चकोर खों चंदा, छोड़ कछू नई भॉउत ।	:	जिससे दिल लगा उसे छोड़कर कहीं सुख नहीं मिलता।
घाव मिट जात गुड/चोट नैं मिट।	:	बीते कष्ट के चिन्ह शेष रहते हैं।
घाव में घाव डारबौ होत चतुरन कौ काम।	:	चालाकों की चालाकी को चतुराई से ही काटा जा सकता है।
घिउ कॉ गऔ खिचरी में।	:	कोई नुकसान नहीं, लाभ।
घिउ नॅगरिअॅन गुर डिंगरियॅन ।	:	थोड़ा थोड़ा करके बहुत खर्च हो जाता है।
घिउ न सिउ, पक्की बनें।	:	कोरी गप्पें मारकर ढ़ोंग करना।
घिनों लड़इया, छींट कौ बागौ।	:	अशोभनीय कार्य।
घिसौ पइसा, बखत पै कामैं आउत ।	:	कभी-कभी बुरा भी काम आ ताजा।
घी कितै गऔं, खिचरी में।	:	कहीं कोई हानिकारक नहीं।
घी घी में गऔं, कै खिचरी में।	:	हर तरह से लाभ।
घी के दिया जराबौ/बारबौ ।	:	खुशी मनाना।
घी खाओ सक्कर सैं, दुनियाँ जीतौ मकर सैं।	:	मीठे बोल से सुख उठाओ मक्कारी से बड़े बने रहो।
घी गुर के वेंगुर सें, कुदई मठा के ठेंगुर सें।	:	अच्छा भोजन करने वाला कमजोर, साधारण भोजन करने वाला बलवान कद काढ़ी का होता है।
घी जाट का, तेल हाट का।	:	शुद्धता का ठिकाना नहीं।
घुट-घुट मरबे की, पीरा का कइये।	:	तिल-तिल कर मरना कष्टदायी।
घुरवा मरें, गदन कौ राज।	:	अच्छे नहीं, तो बुरों का राज।
घुरूवा लोगनें मरत, गदा कैपरी खोय।	:	अँधेरगर्दी का काम।
घूँघट की लाज, नारी कौ साज।	:	मर्यादा नारी की शोभा है।

घूटौ नबै, तौ पेटइ/पेट खों।	:	अपनत्व का ध्यान आ ही जाता है।
घूरे के दिनों, सोउ फिरत/बल्दत ।	:	समय और परिस्थिति में बदलाव तो होता ही रहता है।
घूरे पै कौ सोंनों, उठा लऔ जात।	:	अच्छे को हर कहीं सम्मान मिलता।
घर में रउआ, खेत में मउआ, बुरा होत।	:	घर में दूसरा बसा, खेत का महुआ हानिकर होते हैं।
घर रहें घर की खाएँ, बाहर रहें बाहर की खाए।	:	जैसी परिस्थिति, तैसा काम।
घर लाला, सो बायरै लाला।	:	एक समान सम्मान सौभाग्य की बात।
घर से बाहर भले ।	:	घर से बाहर, अधिक सम्मान सुविधा।
घर सै आसूदा, उधार लेत फिरत।	:	संपन्नता में बेइज्जती कराना।
घरी भर कों दुख, सब दिन कों आराम।	:	थोड़े समय की बुराई हमेशा का सुख।
घरी भर कों बुरबाशन, सब दिन को आराम।	:	थोड़ी बुराई, अधिक भलाई ।
घरी भर की ड़ाई/बुराई/मुसीबत सब दिन कौ आराम।	:	अधिक लाभ के लिए थोड़ा कष्ट झेलना बुरा नहीं।
घरै मतै मारै, बायरै कुत्ता काटे।	:	दोनों तरफ से मुसीबत ।
घरै मजूरी, परदैसे भीक।	:	घर में मान-सम्मान का विशेष ध्यान परदेस में नहीं।
घाट-घाट कौ पानी पिएँ।	:	बहुत अनुभवी, चतुर चालाक।
घलन लगे, तब बचॉउँन लगे।	:	दिखावटी सहानुभूति दर्शाना।
घाटे की चोट, बाँनिअॅई जान्त।	:	मुसीबत जिस पर आती उसके दर्द का कष्ट वहीं जानता ।
घॉम न आसै जेठ मॉस कौ, चौमॉसें जड़कारौ।	:	मौसम के अनुसार हर चीज अच्छी और बुरी होती।
घायल की गति घायल जानें।	:	जिसे चोट पहुँचती है, पीड़ा का सही दर्द वहीं जानता है।
घायल सेर जोडो घातक होत।	:	चोट खाया अधिक घातक होता है।

घर में घर लड़ाई कौ डर।	:	हमेशा सतर्क रहने की जरूरत।
घर में तो नों लॉघनें, चेरी गाए मल्हार।	:	किसी की मजबूरी का मजाक उड़ाना।
घर में नईया चून चनन कौ, गौऊ की दो पै लड्यो।	:	गाँठ में कुछ नहीं, सपने रईसों जैसे।
घर में उखरी, घर में मूसर, बायरै कूटन जाबै।	:	काम का दिखावा कर बेवकूफ बनाना
घर में चौखरे खों डरात, सेर खों मारबे फेंटा बॉदत।	:	झूठी बहादुरी दिखाना।
घर में करबें लॉघनें, मालपुआ खानें।	:	शेखचिल्ली सी कोरी कल्पनाएँ।
घर में नौं लॉघनँ, मल्हार काय पै	:	असलियत छिपाना ठीक नहीं।
घर में आई लुगाई, भूले बाप मताई।	:	पत्नी के मोह में माँ बाप से उदासीन होना ठीक नहीं।
घर में नइँया चून चनन कौ, ठाकुर बरी करावें।	:	घर में कुछ नहीं, बातें बड़ी-बड़ी।
घर में जोगा बनाओ, आसानी से नाग झाड़ लो।	:	चालाक लोग घरों में घुसपैठ कर बहुत नुकसान पहुँचाते
घर में नईयों दॉने, डुकरो/मईयो चली भुनॉने ।	:	हैसियत से अधिक दिखावा कोरा दिखावा ठीक नहीं।
घर में पूँजी भांगनई, नेंवत आए साठ।	:	बेवकूफी और बदनामी का काम।
घर में रय, न तीरथ गए, मूँड़ मुड़ॉय जोगी भए।	:	पाखंड़पूर्ण आचार-विचार।
घर में पूँजी भांग नईयाँ, बरातै न्योंत आए।	:	झूठी शान में मूर्खता का काम करना अपनी बदनामी कराना।
घर कौ चोर चोरी करे, कओ राम घर कैसैं चलै।	:	अपनों से ही अधिक खतरा ।
घर कौ जोगी, जोगना अंत गाँव कौ सिद्ध।	:	बुद्धिमान की घर से बाहर अधिक कीमत होती।
घर कौ परसैआ, अंधियारी रात।	:	मनमानी या बेईमानी करने का मौका पाकर लाभ उठाना।
घर कौ मौड़ा चोरी करै, कओ राम घर कैसे चलें।	:	अपने सबसे ज्यादा खतरनाक, जो कठिन समस्या खड़ी करते है।

घर कौ न घाट कौ, जानें कौन बाट कौ।	:	कोई निश्चित ठिकाना नहीं।
घर कौ भूत, सात पैरी के नाम जान्त।	:	सहज स्वाभाविक बात ।
घर कौ भेदी जो मिल जाबै, जरा मूल से लेअ।	:	घर का भेदी खतरनाक होता, धन संपत्ति सब कुछ चौपट करा देता।
घर कौन भेदी, लंका ढाहे/बारै/ज़ारै।	:	आपसी फूट और बैर भाव का परिणाम बुरा होता है।
घर खाबै, आए के सारौ।	:	र में साला रहने लगे तो मौज मारता घर नष्ट होता।
घर खीर, तौ बाहर खीर।	:	घर में सुख तो बाहर सुख।
घर गुनी बहू, सार गुनी बच्छा।	:	दोनों शोभा बढ़ाने वाली चीजें।
घर घर मटिया चूले।	:	हर घर में समस्यायें और कमियों हैं।
घर घर के निबट लेओ, बराती भौत है।	:	स्वार्थी और ओछी मनोवृति ।
घर की जोरू, चौकसी कैसे होत।	:	कठिन समस्या जिसका उपाय नहीं।
घर की अछरू माता, घरई के पन्डा।	:	भक्ति-भाव में कमी स्वाभाविक ।
घर की कुरिया, सेनई आग फूटत।	:	घर की फूट से दूसरे लाभ उठाते।
घर की आदी/आधी भली।	:	अपने घर का सुख सबसे बड़ा सुख।
घर की घरॉद आउत ।	:	कुटुम्ब के लोगों को अपनों से ही ईर्ष्या होती है।
घर की फूट, जगत की लूट।	:	आपसी कलह से दुनिया लाभ उठाती ।
घर की मुर्गी, दार बरोबर।	:	सहज उपलब्ध सुविधा।
घर के कुरवा सँई ऑख फूटत।	:	घर की फूटन घर बालों से।
घर के सब जन घर में न समॉय, आठ लठेंगर पाउने।	:	समस्या में और अधिक बढ़ोत्तरी।
घर के जानें बरातै गये, रानीपुरा कठवा में दए।	:	अच्छा काम करते समय मुसीबत में पड़े।
घर के कौरे सें आग फूटत।	:	घर के लोग ही भेदी होते है।
घर केई चोरी करें, कओ राम घर केसै चलै।	:	घर के ही घाती और बेईमान हों तो गृहस्थी का काम गड़बड़ा जाता।

घर के पीरन खों, गुर कौ मलीदा।	:	निकट वाले को महत्वहीन समझना।
घर के न घाट के।	:	कहीं के नहीं रहे।
घर के भीतर सेर, बायरै लैडू लड़इया।	:	घरवालों पर हावी, बाहर डरपोक।
घर के रोवै, बाहर के खाएँ।	:	घरवालों को सताना, बाहर वालों को धन संपत्ति लुटानां
घर कौ उसारौ, लरके सारौ।	:	समस्या का आसान हल मिल जाना।
घर कौ खेत न खेतीबारी, हैकनियाँ की नम्बरदारी।	:	झूठा बड़प्पन दिखाना।
घटघट की राम जानें।	:	प्रभु सर्वज्ञ और सर्वत्र ।
घटघट में राम बसे हैं।	:	भगवान कण-कण में व्याप्त है।
घड़ी में तोला, घड़ी में मॉसा।	:	अस्थिर स्वभाव, क्षण में खुश क्षण में नाराज ।
घनी घनी जब सनई बोबै तब सुतरी की आसा होवै।	:	सन का बीज घना बोवै, तभी अच्छी फसल आशा रखें।
घमंड़ तौ राबनई कौ नई रऔ।	:	महाबलियों का घमंड़ भी चूर हो जाता।
घमंड़ी का सिर नीचा।	:	अहंकारी को नीचा देखना पड़ता।
घरई बैद मरै कैसे।	:	अनिष्ट की आशंका बहुत कम।
घर आई लछमी खों लात नईं मारी जात।	:	धन संपत्ति का सम्मान किया जाता अपमान नहीं किया जाता।
घर आए कुत्तन तक खों नईं भगाऔ जात।	:	किसी भी मेहमान का अपमान नहीं किया जाता।
घर आएँ मारै मताई, बाहर कुत्ता काटै।	:	दोनों और मुसीबत ।
घरे पूजै न अहि, घरे पूजै न अहि।	:	अकल की कमी।
घर आएँ नॉग न पूजें, बॉमी पूजन जायं।	:	मौके से लाभ न ले पाना।
घर कय मोय खोल देख, ब्याऔ कय मोय कर देख।	:	दोनों समस्यायें पहले छोटी दिखती फिर बड़ी बन जाती हैं।

घर का जोगी जोगना, ऑन गॉव का सिद्ध।	:	बुद्धिमान का सम्मान घर से अधिक परदेस में होता।
घर का भेदी लंका ढ़ाए।	:	घर-भेदी अधिक खतरनाक होता।
घरकिन खों हिरना सी छरकैं, बात करें सास सें लरकें।	:	नई बहू घर वालों से दूर-दूर रहती और सास से झगड़ती।
घर की खॉड़ किरकिरी, चोरी कौ गुर मीठौ।	:	मुफ्त का माल ज्यादा पसंद होता ।
घर की जमा-पूँजी मिटा, दूसरन के ऑगें हॉत फैलाउत।	:	अपना धन बर्बाद कर पराई आशा करना मूर्खता है।
गोबर मैला नीम की खली, इनसें खेती दूनी फली।	:	गोबर की खाद, नीम की खली फ्सल को लाभदायक होती है।
गोरी होरी में जाए कल्ली करेजे में अटकी।	:	दिल लगा गधी से हूर को कौन पूँछे।
गोलियाँ सैं भलों बच जात, बोली कौन नैं बचत।	:	बोली गोली से भी अधिक कौ खतरनाक होती है।
गोली से बचें पै बात सें न बचें।	:	कठोर बोला बॉनी गोली से भी अधिक खतरनाक होती है।
गोंऊँअॅन संग बथुआ खों सोऊ पानी मिल जात।	:	भाग्य से भाग्य जुड़ा होता।
गोंऊँ आवै बाल, खेत बनाबै ताल।	:	गेहूँ में बाल आए तो, तुरंत पानी दो।
गोंऊँ कलुरिया, भेंस डगरिया।	:	अच्छे जानवरों की पहचान।
गोंऊँ कौ चारौ छीन कें, भरत गदा कौ पेट।	:	अन्याय का काम पाप की जड़।
गोंऊँ पिसी खों गिरूआ, मउआ खों लगतई लौंका।	:	गेहूँ, पिसी को गिरूआ रोग और महुआ को लौंका रोग जल्दी लगता।
गौं में दयें रओ, हल्ला सें कछु सार न कड़ है।	:	शोर गुल किए बिना, मौका देखकर बदला लेना ठीक होता।
गौने कौ हाथी घर घर डोलै।	:	धन वैभव का प्रदर्शन करना।
गौर के गनगौरी, मुंस खों न देंहौ ऐकऊ कौरा।	:	गनगौर के पूजन का प्रसाद पति को नहीं खिलाया जाता।
गौर रूठे तो अपनौ सुहाग लै, का कोउ भाग लै।	:	नाराजगी से अपनी हानि और किसी का कुछ नहीं

बिगाड़ता।

गुस्सैल बानियाँ, गड़ौ लोड़ा उखेरत।	:	बनियाँ बहुत धैर्यवान व गंभीर होता।
गूंगे की गति गूँगा जानें।	:	गूँगा किसी से क्या कहे।
गूँगौ का बताए गुर कौ स्वाद।	:	मजबूर क्या कर सकता है।
गू का कीरा गू में ही सुखी रहता।	:	नीच को नीच की संगत ही अच्छी।
जाओ तुम हाथी को।	:	बुरा काम तभी, जब ज्यादा लाभ हो।
गूदड़ में लाल नईं छिपत।	:	गुणवान, गरीबी में नहीं छिपता।
गाँव के संगै घुन्नौ पिसत।	:	दुष्ट के साथ सज्जन भी कष्ट पाता।
गैल में हेंगें उर आँखे नटेरें।	:	चोरी और सीनाजोरी।
गैल में हेंगें और आँखे बताए।	:	गलत काम करे और अकड़ दिखाएँ।
गैल बताव और ऑगें चलौ।	:	परोपकार कर, मुसीबत मोल लेना।
गैल चलत नेवरा मिल जाए, बाम चखु चारा खाए।	:	यात्रा करते समस शुभ सूचक भाग संकेत ।
गेंवड़े आई बरात, कातन लगे बॉडार।	:	गेंवड़े खेती गॉव सगाई, बिरले की होए भलाई।
सबको बेवकूफ बनाने का स्वॉग ।	:	गेंवड़े की खेती और गाँव की सगाई बिरलों को ही फ्लती है।
गेंवड़े खेती गॉव सगाई, जिनकर, जिनकर, जिनकर भाई।	:	गेंवड़े की खेती और गॉव की सगाई कभी न करे।
गेहूँ के संगै घुनै पिसनें परत।	:	संगत के असर का प्रभाव ।
गैर खों कुआँ खोदत, खुदउँ गिर परत ।	:	दूसरों का बुरा सोचो, तो खुद का बुरा हो जाता।
गोद कौ खिलाव, गोद में नईं रत।	:	आज का छोटा, कल बड़ा हो जाता।
गोद में लरका सहर/गाँव में गुहार।	:	होश ठिकाने न रहने की स्थिति।
गोद में लरका गाँव/सहर में ढ़िढ़ोरा।	:	होश गुम होना।
गोबर गनेस ।	:	महामूर्ख।

गोबर कौ गुबरीला।	:	संकुचित बुद्धि का व्यक्ति, छुद्र सोच वाला मनुष्य।
गुर के बाप कोलू।	:	असली जिम्मेदार व्यक्ति।
गुर गुरई रए, चेला सक्कर हो गए।	:	चेला गुरू से बढ़ कर बुद्धिमान
गुर खॉय गुलगुलन खों परेज करें।	:	व्यर्थ के नखरे दिखाना।
गुर खॉए पुअॅन खों परेज।	:	दिखावटी, ढ़ोग करना।
गुर खॉय सतन खों परेज करें।	:	झूठमॉट की बहानेबाजी।
गुर डिंगरियॅन, घिउ नॅगरियॅन।	:	थोड़ा थोड़ा कर गुड़ और घी दोनों समाप्त हो जाते।
गुर न देओ, गुर कैसी बात तौ करौ।	:	मीठी बोली बानी में क्या खर्च होता।
गुर न देओ गुरीली बातें तौ करौ।	:	भले ही कुछ न दो, मीठे तो बोलो।
गुर बेल और नीम चढ़ी।	:	अधिक से अधिक दुखदायी।
गुर भरौ हँसिया।	:	किसी के बारे में कुछ न कह पाना।
गुर भरौ हँसिया, उगलत बनै न निगलत।	:	असमंजस की स्थिति में पड़ना।
गुरू कीजें जान कैं, पानी पीबै छान कें।	:	समझ से काम लेना हितकर होता।
गुरू गुरूइ रय, चेला सक्कर हो गए।	:	गुरू से बढ़कर चेला।
गुरू जी कौ पालागन, पंड़ित जू की जै।	:	जैसा नाम तैसा प्रभाव ।
गुरू तौ गुर रय चेला भये सक्कर।	:	गुरू से बढ़कर चेला योग्य बनना।
गुरू बड़ौ, कै चेला।	:	गुरू चेला से अधिक सम्मानीय होता।
गुरू बिन मिलै न ज्ञान, भाग बिन मिलै न संपत्ति ।	:	गुरू कृपा से ज्ञान, और संपत्ति भाग्य से मिलती है।
गुरू बिन ज्ञान, भेद बिन चोरी, भौत नईं तौ थोरी थोरी।	:	बिना गुरू के ज्ञान और बिना भेद के चोरी नहीं हो सकती।
गुरू, संतन की मानें ना, पाखेंडियॅन की बन आई।	:	गुरू संतों की उपेक्षा का लाभपाखंडी लोग उठा लेते है।
गुरु से कपाट, मित्र से चोरी, निरधन होय कै	:	गुरू से कपट और मित्र से छिपाव दोनों मनुष्य को

कोड़ी।		घातक बनते।
गिरस्ती के लुखरगड़े में, बिसर गई किलकोटें।	:	गृहस्थ जीवन, लड़कपन की मस्ती भूला देता और गंभीरता छा जाती।
गिरानीं के दिनों, कै कैं नई आउत ।	:	दुर्भाग्य अचानक ही आता है।
गिरी अटारी, मड़ा बरोबर।	:	धनी माँनी व्यक्ति बिल्कुल बर्बाद कभी नहीं होता।
गिरें हॉन, न खोयँ हॉन ।	:	कम कीमती चीज का खोना किसी को नहीं अखरता।
गिरौ का गिरै।	:	पतित और क्या पतित होगा।
गिलोय उर नींम चढ़ी।	:	दुर्गुण में और अधिक वृद्धि होना।
गीदड़ की मौत आउत तौ सहर तॉई भगत।	:	भवितव्यता में अकल काम नहीं करती।
गुजरे गवाई, लौटे बराती, कोऊ नईं पूछें।	:	काम निकल जाने पर लोग सबकी उपेक्षा करने लगते।
गुदड़ी कौ लाल।	:	छिपा, ढँका बुद्धिमान ।
गुंडा जब मरै जब बदरी होय।	:	दुष्ट को बुरी मौत मिले तो अच्छा।
गुन्ताड़े सें कठिन काम सहज हो जात।	:	प्रयत्न हमेशा फलदायी होता है।
गुन न थराई, हरामजादी कहाई।	:	न प्रशंसा न अहसान, बुराई हाथ आई।
गुनबारौ घर में रहे, तीन बात की हॉन, रिन बढ़े, उर गुन घटे, घर के कहैं निकाम।	:	गुणवान व्यक्ति घर में रहने से ऋण ऋण बढ़ता गुण घटता, और घर में मान कम होता।
गुन बिन पूत लठेंगर सौ गुन बिन बिटिया डेंगुर सी।	:	लड़की-लड़के दोनों का गुणवान होना जरूरी होता।
गुन न हिरॉनों गुन गाहक हिरॉनों है।	:	गुणवान की परख हर कोई नहीं कर पाता।
गुप्त दान, महाकल्याण।	:	गुप्त दान, ही सही पुण्य दान है।
गुप्तउअल बात, गुप्तइ राखी जात।	:	महत्वपूर्ण बात, गुप्त ही रखी जाती।
गुर खानें, उर पाग राखनै।	:	स्वार्थ संग, सम्मान का भी ध्यान।
गाँव में आई होरी, का माते का कोरी।	:	होली में कोई भेदभाव नहीं रहता।

गाँव छोड़े, देवता की चौतरिया छै मइनों नों पूजत ।	:	पूर्व मान्यता व दबदबा बहुत दिनों तक प्रभावी बना रहता।
गांव दमंदा मुसरचंदा, और पुरा कौ आदौ।	:	ससुराल में रहना मूर्खता होती।
गाँव के अँदरा खों भी, गाँव के खदरा दिखात ।	:	अंधा भी अनुभव से लाभ उठा लेता है।
गाँव के गॅवार, सहर के चमार।	:	स्थिति परिवर्तन से लाभ नहीं।
गाँव जानिये बसै, सों सों जानियो कसाई।	:	गाँव की बसने से, सोने की परखने से सही जाँच होती है।
गाँव तुम्हारा, नॉव हमारा।	:	पराए धन, पद से लाभ लेना।
गाँव में घर नईं, हार में खेत नईं।	:	घर गृहस्थी के नाम पर कुछ नहीं।
गाँव में मुखिया की खोपड़ी बिना पत्ते नई हिलत।	:	गाँव में प्रधान का चलावा होता है।
गाँव सदा गँवारन के।	:	गाँव में गँवारों का ही बोलबाला होता।
गाहक एक न फेरिये राखे वस्त अनेक ।	:	दुकान में हर माल हो कि ग्राहक लौटकर वापिस न जाए।
गिर पड़े की हर गंगा।	:	मजबूरी के काम को धर्म से जोड़ना।
गिरगिट की दौर बिटोरे तक।	:	जितनी सामर्थ्य उतना काम।
गिरगिट सौ रंग बल्दत।	:	किसी बात पर स्थिर न रहना।
गिरगिट की दौर मॅगरे नों।	:	औकात के भीतर का काम।
गिरधौरा कैसी मूंड़ हलाउत।	:	कोरी हॉ में हॉ मिलाना।
गिरस्त के दो पल्ले कीच में भिड़े रत।	:	गृहस्थ जीवन झंझटों से भरा होता।
गिरस्ती कौ लोडा परौ मूंड पै, भूल गए किलकोटें।	:	गृहस्थ जीवन में पड़ते ही मौज मस्ती गायब हो जाती है।
गाँठ का पूरा अकल का आधा।	:	धनी किन्तु मूर्ख व्यक्ति।
गाँठ न मुष्ठी खुरखुरा उठी।	:	गाँठ में कौड़ी नहीं, सपने लम्बे-चौड़े।

गाँठ में कौड़ी नईं बनी फिरें धन्नों बाई।	:	महा गरीब, दिखावा रईसों का।
गाँठ में नइँयाँ दानें, अम्माँ चली भुनॉने।	:	कोरी गप्पें, झूठा दिखावा।
गाँठ सें गाँठ जुरी।	:	जीवनभर के पक्के साथी।
गादर कौ मजा, पिलपिले में कॉ धरौ।	:	जवानी का मजा कुछ और ही होता।
गादर खों हर कोउ चाय, पिलपिले खों कोई नईं।	:	रसभरों की कीमत होती, फीके की कोई नहीं।
गॉन परें तौ ग्यावन, बायरै नईं कइत ।	:	ग्रहण, गर्भवती के लिए हानिकारक ।
गॉनेरू जिंदगी भर, दुख उठाउत ।	:	ग्रहण का प्रभाव दुखदायी होता है।
गॉनौ गुरिया इतईं धर जाओ, सज के जइयो-'सरल' ।	:	दूसरों को बेवकूफ बनाने की चाल चलना।
ग्यान गाक पै भक्तिभाव के लगतइ सदा तमाँचे।	:	भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग से बढ़-चढ़ कर होता।
गाय कौ दूध सो, मॉई कौ दूध।	:	गाय और माँ का दूध एक समान।
गाय दुहै बिन छाँनें लावैं, गरमा गरम तुरंत चढ़ावै।	:	गाय का तुरंत दूहा दूध बहुत स्वास्थ्यवर्धक होता।
खात मचाउत, दूसरन खों तरसाउत ।	:	बिना मीठे के सब व्यंजन बेकार।
खसम करौ तौ सोवे खों, कै पाटी लग के रोवें खों।	:	सुख-सपने धूल में मिलना, मुसीबत ढोना।
खसम करौ तौ सोबै खों लग गए पथरा ढ़ोबे खों।	:	सुख सपने चूर-चूर होना, मुसीबत के पहाड़ ढोना।
खसम सै छूटै तो यारौ के जाए।	:	मनमौजीपन पर बंधन ।
खाई गकरियों गाए गीत, जे चले चेतुआ मीत।	:	मतलब भर के साथी।
खाई गकरियों गाए गीत, घर खों चले चैतुआ मीत।	:	स्वार्थपूर्ति तक का सँग-साथ निभाने की प्रवृति ।
खाई गकरियों गुर घर सैं, डुकरा लग गऔ हमाये जिउ सें।	:	अनचाही जिम्मदारी ढोना।

खाई नॅइँयाँ पाँद टटोउत फिरत।	:	कार्य करने से पूर्व भविष्य के परिणाम की चिंता ।
खाइये मनभाता, पहरिये जगभाता।	:	खाओ मन का, पहनो सबके मन का।
खाउत के अपने, अचैउत के पराये।	:	छुद्र सोच, ओछी भावना ।
खाउत के और, दिखाउत के और।	:	बनावटी या दिखावटीपन ।
खाउत कोउ की, बजाउत कोउ की।	:	महाकपटी, बेईमान, दोगलापन।
खाउँन लाजौं।	:	खूब खाने-पीने पर भी शरीर स्वस्थ न दिखना।
खाएँ और गुर्राएँ।	:	मौज उड़ाए और हेकड़ी दिखाएँ।
खाएँ, औरनें ग्यास/ग्यारस बताएँ।	:	पर उपदेश कुशल बहुतेरे ।
गाय न बछिया, चैन की निंदिया।	:	जिम्मेदारी से मुक्त, चैन छानता।
गॉल बजावे में का लगत	:	कहना सरल होता, करना कठिन।
गांव कुरिओनें सें, तोरौ जाट।	:	कोरियों में सहज फूट पड़ जाती।
गाँव का जोगी जोगना, ऑन गाँव को सिद्ध।	:	विद्या की कीमत परदेश में अधिक होती, अपनों में नहीं।
गाँव कौ गैंवड़ौ, पाँदन की ओट।	:	हर परिस्थिति में व्यवहारिकता का ध्यान रखना जरूरी होता।
गाँव को खदरा, गाँव कौ अॅदरई जान पाउत ।	:	गाँव के अंधे को भी हर गली और गढ्ढे की सही अंदाजा होता।
गाँव भगै, बैरा बिछौना बिछाबै।	:	बहरापन खतरे में डाल देता।
गाऔ बजाऔं, सुनाए गीत, जे चले चैतुआ मीत।	:	मतलबी मीत स्थायी कहीं नहीं टिकते।
गाक और मौत का ठिकानौं नइयों।	:	ग्राहक और मौत के आने का किसी को पता नहीं रहता।
गाक पैलौ सबसें नोंनों।	:	प्रथम ग्राहक पूजा जाता ।
गागर में भर गऔ नॉज, सो चढ़ गऔ गँवारू राज।	:	जीविका की निश्चिंतता होने पर मौत मस्ती सूझने लगती।

गॉड़ में लंगोटी, न सिर पर टोपी।	:	घर गृहस्थी के नाम पर कुछ नहीं।
गाड़र ल्याए ऊन खों, चरन लगी कपास।	:	लाभ के स्थान पर हानि होना।
गाड़र कौ मुंस लड़ैया (सियार)।	:	एक से बढ़कर एक डरपोक ।
गाड़ी गड्डी दरकत नाईयों, ऑनगैन बिना प्लॉट।	:	बिना पूँजी के गृहस्थी की गाड़ी नहीं चलती।
गाड़ी बैल पटेल की, बंदे की ललकार।	:	मुफ्त की मालिकी बघारना।
गाड़ी अटक गई।	:	होते काम का बीच में रूकना।
गाड़े से पाड़ौ जिन बॉदौ।	:	खतरे का काम कभी ठीक नहीं।
गज परै उन लोगों पै, काहू सैं ना लें जो सीक।	:	दूसरों की सलाह न मानने वाले किसी काम के नहीं।
गॉज बरै, पूरन के लेखें।	:	थोड़ी सी हानि के पीछे बड़ी हानि कराना मूर्खता है।
गाजर की पुंगी बजाओ तौ बजाऔ नईतों तोड़ खाओ।	:	दोहरे लाभ का काम।
गाजर की करके तुला, बैठें चहत बिमॉन ।	:	मूर्खता का काम बेकार ।
गाँजा, भॉग, दारू और तमाखूँ, जीवन को दुखदाई लड़ाकू	:	गाँजा पियो न प्यारे, जर जैहैं कमल तुमारे- ईसुरी।
ारू और तमाखूँ और लड़ाकू स्वास्थ्य के , इसलिए	गाँजा लिए	: कभी मत पियो। हानिकारक।
गरांनी लुंदरिया फूली फूली फिरै।	:	जवानी के जोश में होश नहीं रहता।
गरीब खों सोनों भी पीतर।	:	अज्ञान को अच्छे-बुरे की पहचान नहीं होती।
गरीब की हाय बुरई।	:	गरीबं की बद्दुआ कभी न ले।
गरीब की लुगाई सब गाँव की भौजाई/भुजाई।	:	रीब को हर कोई दबा लेता, उसको कोई इज्जत नहीं देता।
खेत खाय गदहा, मार खाए जुलाहा।	:	अपराध किसी का, दंड किसी को।
खेत चरै गदहा, ठुके पिटै कुम्हरा।	:	दोषी कोई, सजा भुगते कोई।
खेत चरै उर बारी टोरें, तागत भरी बछेरा में।	:	बलवान बड़ा पराक्रमी होता।

खाय चना, रहे बना।	:	चना खाना स्वास्थ्यवर्धक होता।
खायें खसम कौ, गीत गायँ पराये के।	:	कृतघ्न और नीच प्रकृति की स्त्री।
खाय तो पछताए न खाय तो पछताए।	:	असमंजस की स्थिति।
खारी कुईयों का कामैं आउत ।	:	अनुपयोगी वस्तु बेकार।
खारे बरा नई खाए, जो मजबूर हैं।	:	किसी के एहसान से दबे नहीं।
खाल ओढ़ कैं सिंघ की, सियार सिंघ ना होय।	:	वास्तविक वास्तविक घटित होता है, नकली नकली।
खाल उड़ाये सिंघ की, स्यार सिंघ नईं होय।	:	नकली असली का ढोंग करके असली नहीं हो जाता।
खिचरी में घिउ, घिउ में खिचरी।	:	न इसमें घाटा, न उसमें घाटा।
खिजियॉनी बिलइया/बिल्ली खम्माँ नाँचे।	:	मनोरथ विफल होने पर खिन्नता प्रकट करना।
खिलाए का नाम नईं, रूलाए का नाम।	:	सुख को भूलाकर दुख का बखान कर बदनाम करना।
खीर खों भेले/सौंज महेरी खों न्यारे।	:	अच्छे में साथी, दुर्दिन के नहीं।
गरीब कौ गरे में को नों देबै।	:	गरीब को सताना पाप होता है।
गरीब कौ पाद दूर दूरई सें बसात।	:	गरीब से सभी लोग घृणा करते और झूठा बदनाम करते।
गरीबी में गीलौ आटौ।	:	मुसीबत पर मुसीबत आना।
गरीब सै परखाइए न, बड़न सै डॉड़ कराइए न।	:	हैसियत देखकर ही काम कराना ठीक रहता।
गरे की हड्डी होना।	:	न निगले बने न उगलते।
गारे हार फासौ ढोल शोरे शेर।	:	आफत में भी साहस रखना।
गारे परौ ढोल बजाए सिंह।	:	मुसीबत को हँस कर ढ़ाँकना।
गली के कुत्ता भौंकत, काटत नइँया।	:	कम खतरनाक डरने की बात नहीं।

गले पड़े कौ सौदा ।	:	मजबूरी का काम।
गव धन आदौ पाऔ।	:	अधिक हानि से थोड़ी हानि ठीक।
गँवार गौं का भार।	:	मूर्ख दूसरों को ठगने की घात में चिंतित रहता।
गवाह चुस्त, मुद्दई सुस्त ।	:	जिसका काम वह सुस्त, दूसरा बेचैन ।
गहोई अपन बाप कौन नईं होई।	:	गहोई बनियाँ किसी का मीत नहीं।
गाए, कलुरिया, भैंस डंगरिया/नोंनी।	:	अच्छे गाय भैंस की पहचान।
गाऐं गाएँ ब्याब नहीं होत।	:	कहने भर से काम नहीं हो पाता।
गाऐं गीत कौ का गाइऐ।	:	बीती बातें दुहराने से कोई लाभ नहीं।
गाऔ बजाओ, कौड़ी न पाओ।	:	कंजूस सबको बेवकूफ बनाता।
गया मर्द जिन खाई खटाई, गई रॉड जिन खाई मिठाई।	:	पुरूष को खटाई और राँड स्त्री को मिठाई खाना हानिकारक होता।
गये कोस का गिननैं।	:	पिछले काम की मेहनत का हिसाब करना उचित नहीं।
गायते रोजा छुटावे, नमाज़ गरदै परी।	:	एक मुसीबत से बचे, दूसरी में फँसे।
गरज की दुनिया सारी।	:	मतलब का संसार।
गरज परें, गदा सें बाप कनै परत।	:	मजबूरी सब कुछ कराती।
गरज परें कछु और है, गरज सटै कछु और।	:	मतलब के मीत, काम निकलने पर व्यवहार बदल लेते हैं।
गरज की पूरी दुनियाँ, बिना गरज कोउ नइँया।	:	दुनिया अपने मतलब तक की साथी है, बाद में कोई संग नहीं देता।
गरज परें, पराई मताई खों मताई कनें परत।	:	अटके पर मनुष्य को अपना स्वाभिमान भी गँवाना पड़ता।
गरजबे बारे, बरसत नइँया।	:	ड़ीगें हाँकने वाले काम नहीं करते।
ग़ैर बबली होत।	:	स्वार्थ अंधा होता है।

गरजै सौं बरसैई।	:	अनुकूल लक्षण दिखाई देना।
गरब/गरव तैं रावणै कौ नै रौ।	:	अहंकार सबको बर्बाद कर देता।
गरम गरम खाओ तौ मौ जरै।	:	कभी-कभी जल्दबाजी भी बहुत हानिकारक होती है।
गरम खाए ठंड़ौ नहाय, ओस पै चलै, बाकै सामू बैद हँसै।	:	गरम खाना, ठंडा नहाना, ओस पर चलना लाभदायक होता है।
गरााट सौ अर्राट/अर्राने।	:	ज्यादा घमंड मिट्टी में मिला देता।
गर्राटन सब चौपट हो जात।	:	नासमझी और झूठे अहंकार से सब कुछ नष्ट हो जाता है।
गर्रा, बैला सॉड कुआबै, मौ उठाए जॉ चॉए जावै ।	:	जवानी में मस्त, मूर्ख ऊटपटाँग हरकतों से बाज नहीं आता।
गदिया पै आम नई जमात।	:	कोई भी काम तत्काल संभव नहीं।
गदिया पै सरसों नई जमतई।	:	हर काम तुरंत संभव नहीं।
गधा गिरो पहार सै, मुर्गी के टूटे कान।	:	असंभव बात, बेतुकी झूठी बात।
गधा घोड़ा एक भाव।	:	अनुचित समानता ठीक नहीं।
गधा मरौ कुमरा कौ, धोबिन सत्ती होवै।	:	हानि किसी की दुख किसी को।
गधी भी ज्वॉनी में नौंनी लगत।	:	जवानी में सभी सुंदर लगते।
गधे का कान गधा ही खुजाता है।	:	पशु भी अपनी जात पर मरते।
गधे को गुलकंद।	:	मूर्खता का काम।
गढ़ों से हल चले तो बैल कोन बिसाए।	:	जो जिसका काम होता, उसी से सही हो पाता।
गनगौर के गनगौरा, मॉन्सन खों नई दो कौरा।	:	गणगौर का प्रसाद पति को नहीं नहीं दिया जाता।
गणेश जू खों चौक पुरौ, मदारे जू ऑन बिराजे।	:	सम्मानित का आयोजन अपात्र की घुसपैठ ।
गप्प बड़ी के सप्प।	:	झूठों का जमाबड़ा, एक से बढ़कर एक।
गपोड़न की मॅडली, सॉचन खों को पूँछत।	:	झूठों की जमात में सच्चों को कौन पूछता।
गम्म कौ फल मीठौ।	:	धैर्य का फल मीठा होता है।

गम्म खाओ कम खाओ।	:	धैर्य और कम भोजन दोनों लाभकारी।
ग्यान गरें फॅस जात, जब घर कौ नॉज बड़ात ।	:	गरीबी की मार में बुद्धि मारी जाती।
गयें हॉन न मरें पछतॉन ।	:	जाने में नुकसान नहीं, मर जाने पर पछतावा नहीं।
गया बखत हातें नईं आउत।	:	बीता हुआ समय लौट कर कभी नहीं आता।
गदइयों गुर हॅगन लगै, तौ बराई को पेरै।	:	ओछो से बड़े काम की आशा करना व्यर्थ है।
गदन की गौने, मनन की झोल।	:	सामर्थ्यनुसार कार्य व प्रबंध ठीक रहता।
गदन की बातें, गदइयॅन की लातें।	:	बेवकूफी से भरी निरर्थक बातें।
गदन कै मूँड़ै, बसंता बंध गए।	:	मूर्खा को सम्मान प्राप्त हो जाना।
गदन खाऔ खेत, पाप न पुन्न।	:	कुपात्र को दान व दया, सब बेकार।
गदन खों खुआव, पुन्न न पाप।	:	कुपात्र को दान-पुण्य बेकार।
गदन खों मुड़गरे, नई बाँदे जात।	:	नीच को सम्मान नहीं देना चाहिए।
गदन खों गू पकबान।	:	जैसी ओछी प्रकृति तैसी रूचि।
गदन चराएँ खेत कौ पाप न पुन्न।	:	मूर्खी की सहायता करना बेकार ।
गद्द फद्द की संतान/औलाद कमजोर रउत।	:	जल्दी-जल्दी पैदा हुए बच्चे बहुत कमजोर रहते।
गदा गदैय्या सैं जीतें नई, रँगटा के कान मरोरै।	:	कमजोर को दुनिया दबाती, सहजोर पर बस नहीं चलता।
गदा बैठबै नईं मिलत, सबारी को हाथी चॉनैं।	:	औकात से अधिक की आशा कभी फलबती नहीं हो सकती।
गदा के कण गदैयै खुजौत।	:	सहयोग अपनों का ही मिलता है।
गड़ा धोए सैं घोरा/घोड़ा नैं हो जात।	:	शरीर धोने से जाति नहीं बदलती।
घर में दीया रोशन तब मस्जिद में जलाते हैं	:	पहले नौकर पूरा करके तब परमार्थ या परोपकार किया जाता है।
अपने दही को कोई बुरा नहीं कहता	:	अपनी चीज़ को कोई बुरा नहीं कहता।

अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता	:	अपने साथ बिना काम नहीं होता।
अपने मुँह मियाँ मिळू	:	पने मुँह से अपना बड़ाई करने वाला व्यक्ति।
अभी दिल्ली दूर है	:	अभी काम पूरा हो रहा है।
आंख के अंधेरे नाम नयनसुख	:	नाम और गुण में विरोध होना,
आई है जान के साथ होगी जनाजे के साथ	:	वह विपत्ति या बीमारी जो एल्बम बना रही है।
आई मौज फकीर को, दिया झोपड़ा फांटा	:	विरक्त(बड़ा हुए) पुरुष मनमौजी होते हैं।
आगे कुआँ, पीछे की ओर	:	दोनों तरफ विपत्ति होना।
आठों पहर चौंसठ घड़ी	:	हर समय, दिन-रात।
आठों पेट कुम्मैत	:	पूरा धुर्त, घूहुआ हुआ।
चोर-चोर मौसेरे भाई	:	एक व्यवसाय या स्वभाव वालों में जल्दी मेल हो जाता है।
चोरी और सीना जोरी	:	अपराध करके अकड़ना
चाँद पर थूका, मुँह पर गिरा	:	सज्जन की बुराई करने से अपनी ही बेइज्जती होती है।
चोर के पैर नहीं होते	:	चोर चोरी करते वक्त जरा-सी आहट से डरकर भाग जाता है।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठरहता	:	बेशर्म आदमी पर किसी बात का कोई असर नहीं होता।
चिराग तले अँधेरा	:	अपनी बुराई नहीं दिखती
गागर में सागर भरना	:	कम शब्दों में बहुत कुछ कहना
खूब मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी	:	एक ही प्रकार के दो मनुष्यों का साथ।
बाप न मारे मेढकी, बेटा तीरंदाज़	:	छोटे का बड़े से बढ़ जाना।
बाप से बैर, पूत से सगाई	:	पिता से दुश्मनी और पुत्र से लगाव।
बारह बरस पीछे घूरे के भी दिन फिरते हैं	:	एक न एक दिन अच्छे दिन आ ही जाते हैं।

बासी कढ़ी में उबाल नहीं आता	:	काम करने के लिए शक्ति का होना
खग जाने खग ही की भाषा	:	साथी की बात साथी समझ लेता है।
खून सिर चढ़कर बोलता है	:	पाप स्वतः सामने आ जाता है।
खुदा गंजे को नाख़ून न दे	:	नाकाबिल को कोई अधिकार नहीं मिलना चाहिए।
खों खों जल ककरी, मते की बू ओढ़ें कथरी।	:	सर्दी से बचने को पर्याप्त साधन नहीं।
खौं गाड़ें, औ कौरा मॉगत।	:	धनी हो कर भी मान-सम्मान का ध्यान नहीं।
खौरियाक/खजियाऊ कुतिया मल - मल की झूल।	:	बेवकूफी का काम, हँसी मजाक की वस्तु ।
खेत बारी खाय बिध सैं कहा बसाए।	:	दुर्भाग्य को कौन रोक सकता है।
खेत बारी खों राखै, बारी राखै खेत खों।	:	एक दूसरे के शुभचिंतक बनें तभी सही काम बनता।
बिग खेतारे खरपतबार, सभा बिगारे दूत।	:	खरपतवार फसल विनाशक और मूर्ख दूत सभा-विनाशक होता है।
खेती उनकी जो हर हाँके, उनकी नई जो जब तब झॉकें।	:	खेती की निगरानी चौबीस घंटे हो तभी अच्छी फसल होती।
खेती आप सेती ।	:	सफल वहीं होती, जिसकी सेवा और देखभाल स्वयं की जाए।
खेती कर कर हम मरे, बहुरे के कोठे भरे।	:	मेहनत किसान करे लाभ बनियाँ ले।
खेती करे न बॅजी जाए, विद्या के बल बैठो खाए।	:	विद्या धन सर्वश्रेष्ठ धन है।
खेती करै बॅज खों जाए, दों में सैं एकउ न पाए।	:	दुविधा में दोउ गए, माया मिली न राम।
खेती करै रात/साँझ घर सोबै, काटै चोर/मूँड़ धर रोबै।	:	खेती आलसियों का काम नहीं, आलसी खेती नहीं कर सकता।
खेती करै बॅज कौं धावें, ऐसौ डूबै थाह न पावै ।	:	एक साथ दो कामों की जिम्मेदारी हानिकारक होती, कर्ज में डूबाती
खेती करै तो गाड़ा/बैलगाड़ी, भैंस रखै तो पाड़ा।	:	खेती को बैलगाड़ी, भैंस को पड़ा जरूरी।

खेती करै अधिया, बैल न बधिया।	:	बिना साधन के खेती संभव नहीं।
खेती करै तो हद माँस एक करै।	:	खेती में कड़ी मेहनत करनी पड़ती।
खेती खाद न करै किसॉना, उनके घर दरिद्र समाना।	:	खाद डाले बिना अच्छी फसल की आशाबेकार है।
खेती धन कौ नॉस, जो धनी न होवै पास।	:	कृषि कार्य में देखाभाली जरूरी अन्यथा पैदावार भी ठीक नहीं।
खुदा ने खूब मिलाई जोड़ी, इक अंधा इक कोढ़ी।	:	एक दूसरे की कमी की पूर्ति होना दोनों को हितकर है।
खुंस में मुन्स नई, फिर का चूले में देनै।	:	जरूरत पर काम न आये तो फिर वह किस काम का।
खुरचन खुरचन मथरा कौ, और सब नकल ।	:	सबसे उत्तम खुरचन/मिठाई मथुरा का ही होता।
खुर खॉसी, तोरी दाई के गरे में फाँसी।	:	खाँसी मिटाने का टोटका।
खुशामद सैं/में आमद होत।	:	सेवाभाव बहुत लाभकारी होता।
खूंटा के बल बँदरा नाचै/कुदै।	:	पराधीनता बहुत बुरी होती।
खून के बल्दै/बदलें खून।	:	ईट का जबाव पत्थर से देना।
खून खून कौं मरत।	:	रक्त का संबंध प्रबल होता है।
खून खून को पिचॉनत ।	:	आड़े वक्त पर रक्त-संबंधी ही काम आते हैं।
खरी मजूरी चोखा काम	:	मजदूरी के तुरन्त बाद नकद पैसे मिलना।
खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे	:	किसी बात पर लज्जित होकर क्रोध करना।
खोदा पहाड़ निकली चुहिया	:	बहुत कठिन परिश्रम का थोड़ा लाभ
काम का न काज का, दुश्मन अनाज का	:	किसी मतलब का न होना।
कुत्तों के भौंकने से हाथी नहीं डरते	:	विद्वान लोग मूर्खों और ओछों की बातों की परवाह नहीं करते।
कागा चले हंस की चाल	:	गुणहीन व्यक्ति का गुणवान व्यक्ति की भांति

व्यवहार करना।

करे कोई, भरे कोई	:	अपराध कोई करे, दण्ड किसी और को मिले।
कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना	:	जो मिल जाए उसी में संतुष्ट रहना।
काला अक्षर भैंस बराबर	:	बिल्कुल अनपढ़ व्यक्ति
कंगाली में आटा गीला	:	परेशानी पर परेशानी आना
कहाँ राजा भोज कहाँ गाँगू तेली	:	उच्च और साधारण की तुलना कैसी
ओछे की प्रीति, बालू की भीति	:	दुष्ट का प्रेम अस्थिर होता है।
गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है	:	अपराधियों के साथ निर्दोष व्यक्ति भी दण्ड पाते हैं।
घोकांत विद्या, खोकांत पानी।	:	विद्या सुख रटने से, पानी खोदने से।
घोकिया घोकत रऔं, कमरिया/ अलफतिया ब्याह लै गऔ/ठड़ौ।	:	जिसमें तत्परता होती है, वहीं लाभउठा ले जाता है।
घोरण कौ चारौ गदन खांडों, नैन डारौ जात।	:	हैसियत के अनुसार काम दिया जाता।
घोरा की पिछाई और हाकिम की अगाई न गहै।	:	घोड़े के पीछे, हाकिम के आगे नहीं चलना चाहिए।
घोरा की लात, आदमी की बात।	:	दोनों से रक्षा करना कठिन होता।
घोरा कौ गिरौ सॅवर जात, नजर गरौ नई सॅवरत।	:	खोया सम्मान सबसे बुरा होता है।
घोरा घास सैं यारी करै, तो खाय का।	:	प्रेम की भी एक सीमा होती है।
घोरा चलै चार घड़ी, ब्याज चलै आठ घड़ी।	:	ब्याज बहुत जल्दी जल्दी बढ़ता।
घोरा बैंच के सोबौ।	:	बहुत गहरी नींद में सोना।
घोरा पै बैठ के मलकबौ, सबै आउत ।	:	पद पाने पर सभी इतराने लगते।
घोरा मरें, गदन कों राज।	:	उत्तम न रहने पर नीच पुजता।
चंचल नार छैल से लड़ी, खन अंदर खन बाहर खड़ी।	:	चंचल प्रकृति की स्त्री दिखावा अधिक करती है।

चंचल नार की चाल छिपै ना, नीच छिपै न बड़प्पन पाएँ।	:	चंचल स्वभाव की स्त्री और नीच मनुष्य कैसे भी छिप नहीं सकते।
चंचू छिपे बखर के मारे।	:	आलसी व्यक्ति, कामचोर।
चकोर खों चंदा, छोड़ कछू नई भॉउत ।	:	जिससे दिल लगा उसे छोड़कर कहीं सुख नहीं मिलता।
घाव मिट जात गुड/चोट नैं मिट।	:	बीते कष्ट के चिन्ह शेष रहते हैं।
घाव में घाव डारबौ होत चतुरन कौ काम।	:	चालाकों की चालाकी को चतुराई से ही काटा जा सकता है।
घिउ कॉ गऔ खिचरी में।	:	कोई नुकसान नहीं, लाभ।
घिउ नॅगरिअॅन गुर डिंगरियॅन ।	:	थोड़ा थोड़ा करके बहुत खर्च हो जाता है।
घिउ न सिउ, पक्की बनें।	:	कोरी गप्पें मारकर ढ़ोंग करना।
घिनों लड़इया, छींट कौ बागौ।	:	अशोभनीय कार्य।
घिसौ पइसा, बखत पै कामैं आउत ।	:	कभी-कभी बुरा भी काम आ ताजा।
घी कितै गऔं, खिचरी में।	:	कहीं कोई हानिकारक नहीं।
घी घी में गऔं, कै खिचरी में।	:	हर तरह से लाभ।
घी के दिया जराबौ/बारबौ ।	:	खुशी मनाना।
घी खाओ सक्कर सैं, दुनियाँ जीतौ मकर सैं।	:	मीठे बोल से सुख उठाओ मक्कारी से बड़े बने रहो।
घी गुर के वेंगुर सें, कुदई मठा के ठेंगुर सें।	:	अच्छा भोजन करने वाला कमजोर , साधारण भोजन करने वाला बलवान कद काढ़ी का होता है।
घी जाट का, तेल हाट का।	:	शुद्धता का ठिकाना नहीं।
घुट-घुट मरबे की, पीरा का कइये।	:	तिल-तिल कर मरना कष्टदायी।
घुरवा मरें, गदन कौ राज।	:	अच्छे नहीं, तो बुरों का राज।
घुरूवा लोगनें मरत, गदा कैपरी खोय।	:	अँधेरगर्दी का काम।

घूँघट की लाज, नारी कौ साज।	:	मर्यादा नारी की शोभा है।
घूटौ नबै, तौ पेटइ/पेट खों।	:	अपनत्व का ध्यान आ ही जाता है।
घूरे के दिनों, सोउ फिरत/बल्दत ।	:	समय और परिस्थिति में बदलाव तो होता ही रहता है।
घूरे पै कौ सोंनों, उठा लऔ जात।	:	अच्छे को हर कहीं सम्मान मिलता।
घर में रउआ, खेत में मउआ, बुरा होत।	:	घर में दूसरा बसा, खेत का महुआ हानिकर होते हैं।
घर रहें घर की खाएँ, बाहर रहें बाहर की खाए।	:	जैसी परिस्थिति, तैसा काम।
घर लाला, सो बायरै लाला।	:	एक समान सम्मान सौभाग्य की बात।
घर से बाहर भले ।	:	घर से बाहर, अधिक सम्मान सुविधा।
घर सै आसूदा, उधार लेत फिरत।	:	संपन्नता में बेइज्जती कराना।
घरी भर कों दुख, सब दिन कों आराम।	:	थोड़े समय की बुराई हमेशा का सुख।
घरी भर कों बुरबाशन, सब दिन को आराम।	:	थोड़ी बुराई, अधिक भलाई
घरी भर की लड़ाई/बुराई/मुसीबत सब दिन कौ आराम।	:	अधिक लाभ के लिए थोड़ा कष्ट झेलना बुरा नहीं।
घरै मतै मारै, बायरै कुत्ता काटे।	:	दोनों तरफ से मुसीबत ।
घरै मजूरी, परदैसे भीक।	:	घर में मान-सम्मान का विशेष ध्यान परदेस में नहीं।
घाट-घाट कौ पानी पिएँ।	:	बहुत अनुभवी, चतुर चालाक।
घलन लगे, तब बचॉउँन लगे।	:	दिखावटी सहानुभूति दर्शाना।
घाटे की चोट, बाँनिअँई जान्त।	:	मुसीबत जिस पर आती उसके दर्द का कष्ट वहीं जानता ।
घॉम न आसै जेठ मॉस कौ, चौमॉसें	:	मौसम के अनुसार हर चीज अच्छी औरबुरी

जड़कारौ। होती।

घायल की गति घायल जानें। : जिसे चोट पहुँचती है, पीड़ा का सही दर्द वहीं जानता है।

घायल सेर जोडो घातक होत। : चोट खाया अधिक घातक होता है।

घर में घर लड़ाई कौ डर। : हमेशा सतर्क रहने की जरूरत।

घर में तो नों लॉघनें, चेरी गाए मल्हार। : किसी की मजबूरी का मजाक उड़ाना।

घर में नईया चून चनन कौ, गौऊ की दो पै लड्यो। : गाँठ में कुछ नहीं, सपने रईसों जैसे।

घर में उखरी, घर में मूसर, बायरै कूटन जाबै। : काम का दिखावा कर बेवकूफ बनाना

घर में चौखरे खों डरात, सेर खों मारबे फेंटा बॉदत। : झूठी बहादुरी दिखाना।

घर में करबें लॉघनैं, मालपुआ खानें। : शेखचिल्ली सी कोरी कल्पनाएँ।

घर में नौं लॉघनँ, मल्हार काय पै : असलियत छिपाना ठीक नहीं।

घर में आई लुगाई, भूले बाप मताई। : पत्नी के मोह में माँ बाप से उदासीन होना ठीक नहीं।

घर में नइँया चून चनन कौ, ठाकुर बरी करावें। : घर में कुछ नहीं, बातें बड़ी-बड़ी।

घर में जोगा बनाओ, आसानी से नाग झाड़ लो। : चालाक लोग घरों में घुसपैठ कर बहुत नुकसान पहुँचाते

घर में नईयों दॉने, डुकरो/मईयो चली भुनॉने । : हैसियत से अधिक दिखावा कोरा दिखावा ठीक नहीं।

घर में पूँजी भांगनई, नेंवत आए साठ। : बेवकूफी और बदनामी का काम।

घर में रय, न तीरथ गए, मूँड़ मुड़ॉय जोगी भए। : पाखंड़पूर्ण आचार-विचार।

घर में पूँजी भांग नईयाँ, बरातै न्योंत : झूठी शान में मूर्खता का काम करना अपनी

आए।

घर की फूट, जगत की लूट।	:	आपसी कलह से दुनिया लाभ उठाती ।
घर की मुर्गी, दार बरोबर।	:	सहज उपलब्ध सुविधा।
घर के कुरवा सँई ऑख फूटत।	:	घर की फूटन घर बालों से।
घर के सब जन घर में न समॉय, आठ लठेंगर पाउने।	:	समस्या में और अधिक बढ़ोत्तरी।
घर के जानें बरातै गये, रानीपुरा कठवा में दए।	:	अच्छा काम करते समय मुसीबत में पड़े।
घर के कौरे सें आग फूटत।	:	घर के लोग ही भेदी होते है।
घर केई चोरी करें, कओ राम घर केसै चलै।	:	घर के ही घाती और बेईमान हों तो गृहस्थी का काम गड़बड़ा जाता।
घर के पीरन खों, गुर कौ मलीदा।	:	निकट वाले को महत्वहीन समझना।
घर के न घाट के।	:	कहीं के नहीं रहे।
घर के भीतर सेर, बायरै लैडू लड़इया।	:	घरवालों पर हावी, बाहर डरपोक।
घर के रोवै, बाहर के खाएँ।	:	घरवालों को सताना, बाहर वालों को धन संपत्ति लुटानां
घर कौ उसारौ, लरके सारौ।	:	समस्या का आसान हल मिल जाना।
घर कौ खेत न खेतीबारी, हैकनियाँ की नम्बरदारी।	:	झूठा बड़प्पन दिखाना।
घटघट की राम जानें।	:	प्रभु सर्वज्ञ और सर्वत्र ।
घटघट में राम बसे हैं।	:	
घड़ी में तोला, घड़ी में मॉसा।	:	अस्थिर स्वभाव, क्षण में खुश क्षण में नाराज
घनी घनी जब सनई बोबै तब सुतरी की आसा होवै।	:	सन का बीज घना बोवै, तभी अच्छी फसल की आशा रखें।
घमंड़ तौ राबनई कौ नई रऔ।	:	महाबलियों का घमंड़ भी चूर हो जाता।

घमंड़ी का सिर नीचा।	:	अहंकारी को नीचा देखना पड़ता।
घरई बैद मरै कैसे।	:	अनिष्ट की आशंका बहुत कम।
घर आई लछमी खों लात नईं मारी जात।	:	धन संपत्ति का सम्मान किया जाता अपमान नहीं किया जाता।
घर आए कुत्तन तक खों नईं भगाऔ जात।	:	किसी भी मेहमान का अपमान नहीं किया जाता।
घर आएँ मारै मताई, बाहर कुत्ता काटै।	:	दोनों और मुसीबत ।
घरे पूजै न अहि, घरे पूजै न अहि।	:	अकल की कमी।
घर आएँ नॉग न पूजें, बॉमी पूजन जायं।	:	मौके से लाभ न ले पाना।
घर कय मोय खोल देख, ब्याऔ कय मोय कर देख।	:	दोनों समस्यायें पहले छोटी दिखती फिर बड़ी बन जाती हैं।
घर का जोगी जोगना, ऑन गॉव का सिद्ध।	:	बुद्धिमान का सम्मान घर से अधिक परदेस में होता
घर-भेदी अधिक खतरनाक होता।	:	घर का भेदी लंका ढ़ाए।
घरकिन खों हिरना सी छरकैं, बात करें सास सें लरकें।	:	नई बहू घर वालों से दूर-दूर रहती और सास से झगड़ती।
घर की खॉड़ किरकिरी, चोरी कौ गुर मीठौ।	:	मुफ्त का माल ज्यादा पसंद होता ।
घर की जमा-पूँजी मिटा, दूसरन के ऑगें हॉत फैलाउत।	:	अपना धन बर्बाद कर पराई आशा करना मूर्खता है।
गोबर मैला नीम की खली, इनसें खेती दूनी फली।	:	गोबर की खाद, नीम की खली फ्सल को लाभदायक होती है।
गोरी होरी में जाए कल्ली करेजे में अटकी।	:	दिल लगा गधी से हूर को कौन पूँछे।
गोलियाँ सैं भलों बच जात, बोली कौन नैं बचत।	:	बोली गोली से भी अधिक कौ खतरनाक होती है।

गोली से बचें पै बात सें न बचें।	:	कठोर बोला बॉनी गोली से भी अधिक खतरनाक होती है।
गोंऊँअॅन संग बथुआ खों सोऊ पानी मिल जात।	:	भाग्य से भाग्य जुड़ा होता।
गोंऊँ आवै बाल, खेत बनाबै ताल।	:	गेहूँ में बाल आए तो, तुरंत पानी दो।
गोंऊँ कलुरिया, भेंस डगरिया।	:	अच्छे जानवरों की पहचान।
बादर देख के/होत नईं, पोतला नईं फोरौ जात ।	:	उतावली का काम ठीक नहीं होता है।
बॉदी के ऑगे बॉदी, मेह गिनै न ऑधी।	:	व्यसनी खतरों से नहीं डरता।
बाणियाँ कौ साढौ, अहिर कौ गाड़ौ नैन छूटत।	:	आदत किसी की नहीं छूटती।
बानियाँ गढ़ौ, पथरा उखारत।	:	बनियाँ बहुत धैर्यवान होता है।
बाप ओझा, मॉ डायेंन ।	:	दोनों खतरनाक ।
बाप की जागीर जान्त।	:	पूरा हक या अधिकार समझना।
बाप की मरन, काल की परन।	:	दुहरी मार, विपत्ति पर विपत्ति।
बाप गैरै मोगरौ, पूत गैरै रुदाक्ष।	:	एक से बढ़कर एक पाखंड़ी।
बाप तौ ठाडेंई मूतत, बेटा कोंडेरा दै कैं मूतत।	:	बेटा बाप से बढ़कर खुराफाती ।
बाप न मारी टीटरी/मेढ़की/लौखरी, बेटा तीरंदाज ।	:	फालतू की डींगें हॉकना।
बाप देवता, पूत राक्षस।	:	विपरीत आचरण।
बाप पै पूत जात पै गोरा, बहुत नैं थोड़ा सा।	:	बेटे पर बाप का घोड़े पर जात का असर कुछ न कुछ जरूर होता।
बाप बेटा बाराती/की बरात, मताई बिटिया गौरैयों।	:	बराती घराती सब घर के। बाहर का कोई नहीं।
बाप भलौ/बड़ौ न भइया, सबसें बड़ा	:	रिश्तों से बढ़कर रूपया पैसा।

रूपैय्या।

बाप भिखारी, पूत भंड़ारी।	:	अपना-अपना भाग्य ।
बाप मरा बेटा गया, इसका टोटा उसमें गया।	:	लाभ-हानि बराबर-बराबर।
बाप मरे रोवै, गोव गायें सोवै।	:	जैसी परिस्थिति वैसा काम ठीक रहता है।
बात कहै जग-भाती, रोटी खाए मन-भाती।	:	बात वह कहे जो दूसरों को अच्छी लगे।
भोजन अपने मन का खाए।	:	
के बन रे बटेसा, बनावे में का बातत।	:	कोरी बातें बनाने में क्या लगता।
बातन के बतखोर, बुते कौ एकउ नइयों।	:	बातन में चतुर, काम को कामचोर।
के लड्डुअनें, फोरबे में का बात. बातन के लड्डुअन सें, पेट नईं भरत।	:	कोरी बातों से काम नहीं चलता। कोरी बातों से पेट नहीं भरता है।
बातन के गुलेला, हारकोय अलबेला।	:	एक से बढ़कर एक गप्पें हॉकना।
बात को बतंगड़, बनावे में का लगत।	:	छोटी सी बात को बड़ा कर देना।
बात गई, फिर हॉत नईं आती।	:	मौका चूके, हाथ नहीं आता।
बात पर बात ।	:	मौके पर सही उत्तर देना ही उचित।
बात बनै न बात बताबै, बिगरी बात न बात बनाबै।	:	हर बात गुप्त रखना ठीक होता।
बात बात में भॉत है, भाँत भाँत में बात।	:	कहने के ढ़ग से बात अच्छी-बुरी हो जाती है।
बातन में अफराऊत, परस कैं ल्यात नईयाँ।	:	कोरी बातों से पेट नहीं भरता है।
टांय सैं नैं मानत, तूं लातैं सैं मारत बातै परहै।	:	समझाने पर न माने तो दंडित करना जरूरी होता है
बातन सैं पेट, नईं भरत।	:	बातों से नहीं भोजन से पेट भरता।
बात रह जात, बखत निकर जात।	:	समय पर हर बात की कीमत होती।

बात लाख की, करनी खाक की।	:	बातें बड़ी काम छोटे ।
बातन हॉती पाइये, बातन हॉती लात।	:	मान, अपमान दोनों
बातें हजार की, गाँठ में छिदॉम नइँयों।	:	मन बड़ा, भाग्य कमजोर।
बादर ऊपर बादर धाबै, कहै भड्डुरी जल आतुर आबै।	:	पानी गिरने की शीघ्र संभावना।
बहुत गई थोरी रई, थोरी हू अब जाय, बहुत राई थोरी रई, थोरी हू मैं चेत।	:	थोड़ी सा हानि होने पर ही चेत जाने में ही भलाई।
बहुत दोस है लाड़ में, ताड़न बहु गुन जान।	:	अनुशासन लाभप्रद होता अधिक लाड़ दुलार हानिकारक होता है।
बहुत सोना, दरिद्दर की निसानी।	:	अधिक धन बर्बादी के लक्षण।
बहू सरम की, बेटी करम की।	:	बहू शर्मीली हो, बेटी कर्मीली हो।
बाई ने जौ का करौ, फरा में घी धरौ।	:	कृपणता में भी थोड़ी उदारता ।
बाई तो खा लेय/लै तब बॉयनौ/बॉयनौ दइहै/बोटे।	:	पहले स्वार्थ फिर परमार्थ।
बॉउन तोला, पाव रत्ती ।	:	बिल्कुल सही।
बाऔ खों तिबाओ, दैनें परत।	:	विपत्ति से बचने का उपाय जरूरी।
बाघ बकरी ऐकै घाटै पानी पियत।	:	प्रेम-भाव का व्यवहार, भेदभाव नहीं।
बॉझ की सौ जोरै ।	:	कमजोरी का लाभ लेना।
बॉझ न बिआए तौ, बूढ़ी न कहाय।	:	अच्छा स्वास्थ्य भी बुढ़ापा नहीं रोक पाता।
बॉझ न जाने, प्रसव/प्रसूत की पीरा।	:	जिसने भोगा नहीं वह कष्ट की पीड़ा क्या जाने।
बॉझ ब्यॉनी, सौठ उड़ानी।	:	अत्यधिक खुशी की बात ।
बोटेन बरक्कत होत।	:	दान-पुण्य करने से बचत होती है।

बाढ़ लगाई खेत खों, बाढ़ खेत खों खाय।	:	रक्षक ही भक्षक बन जाए तो
बॉड़ी सबसै चॉड़ी।	:	बॉड़ी अक्सर बड़ी तेज, चंट होती।
बाड़ौ धन, बिगरे पूत ।	:	अधिक धन-दौलत से संतान बिगड़ जाती है।
बाढ़े पूत पिता के धर्मा, खेती उपजै अपने कर्मा।	:	पिता के पुण्य से बेटे की उन्नति और कर्म से खेती फलती-फूलती
बात कहे लाख की।	:	जो बोलै वजनदारी से बोलै।
बरसै कऊँ निकरै, अड़वारे तरें हो।	:	बाहुबलियों की दृष्टि से कोई बच कर नहीं निकल पाता।
बरसै मेघ स्वॉत बिसॉत, चलै नैं रॉटा बजै नैं ताँत ।	:	जैसी परिस्थिति तैसा काम।
बरसै राम धड़ाकै सै, बुढ़िया मर गई फॉके सैं।	:	अच्छी वर्षा की कामना।
बरै बौ लरका जो, बसोर के झारें जिये।	:	अपमान से मिला सुख बेकार।
बरै बौ सौनों, जीसैं नाक कान छिदै।	:	कष्ट पाकर मिला सुख बेकार।
बस्त कोंन बिधना रची, जो नईं होय बिनास ।	:	एक न एक दिन सब कुछ नष्ट होता।
बंस बड़ौ बिटम बड़ौ, बंस घटौ बिटम घटौ।	:	बड़ा परिवार बड़ी समस्या छोटे की छोटी।
बसना सहर का, खेत नहर का।	:	दोनों लाभदायक।
बसकरे के ऑड्रे खों, हरौइ हरौ।	:	जो जैसा तैसी सोच।
बसत न राखै आपनौ, चोरै गारीं देय।	:	स्वयं लापरवाह दूसरों पर दोष मढ़ना।
बसंत जाड़े कौ अंत।	:	जाड़े की समाप्ति का संकेत ।
बसे तला में, मगर सौं बैर।	:	संभव ही नहीं।
बसोर कौ मठा, आए न कौनउ काम।	:	जो काम न आए बेकार।

बल से राजा सब है, बल बिन बड़ा न कोय।	:	शक्ति की दुनिया। कमजोर को कोई नहीं पूँछता।
बहरा सो गहरा।	:	बहरा गंभीर होता।
बहम कौ इलाज काठअइ नों नइँयों।	:	शक की कोई दवा नहीं।
बहादुर खों घाव छाती में लगत पीठ में नई।	:	बहादुर वहीं जो आफतों का सामना बहादुरी से करे।
बहिन घर भाई कुत्ता, ससुर घर जमाई कुत्ता।	:	बिना सम्मान का जीना बेकार।
बनियाँ मित्र न वेस्या सती।	:	झूठी आशा या विश्वास के पात्र।
बनियाँ मित्र न वेस्या सती, कागा हंस न बगला जती।	:	इनमें से कोई भी विश्वासपात्र नहीं।
बनियाँ मारै जान, ठग मारै अनजान।	:	अपनी-अपनी चतुराई का ढंग।
बनी के सँगी, बिगरै पै अगूंठा दिखाउतई।	:	अच्छे के सब सँगी साथी, बुरे समय पर संग साथ छोड़ देते
बनी बनी की दुनियाँ/के सब सँगी, बिगरी कौ कोउ नईं।	:	अच्छे के सब सँगी साथी बुरे समय का कोई नहीं।
बनी न बिगारी, तौ बुंदेला काय के।	:	बुंदेला ठाकुर बड़े झगड़ालू होते है।
बनी बिगारे, बॉनिया, बनी बिगारै जाट ।	:	स्वार्थ पर चोट आए तो दोनों उग्र हो जाते।
बमूँरा कौ बीजा बउत, ऑमन की आस करत ।	:	जैसा बोओगे तैसा ही तो काटोगे।
बर्रन के छत्ता में लोड़ मारकें, आफत मोल लै लेओ।	:	स्वयं मुसीबत मोल लेना।
बर्रन के छिदनों में, लोड़ा नई घालौ जात ।	:	जानबूझकर मुसीबत मोल नहीं ली जाती।

बर मरै चॉय कन्या, दच्छना सैं काम।	:	घोर स्वार्थी किसी की हानि की चिंता नहीं करते।
बरत आग में, कोउ नईं जातई।	:	जानबूझकर खतरा मोल न ले।
बरसन लगे अॅगनउआ, पटा फेर दो दउआ।	:	मौके से लाभ लेना हितकर होता।
बरसत बारिद बूँद नहिं, चाहत चढ़न अकास–तुलसी	:	गाँठ में कुछ नहीं, सपने बड़े–बड़े।
बरसन लगो ऊतरा, अन्न न खॉय कूतरा।	:	अच्छी वर्षा होने और खुशहाली के लक्षण।
बंद मुट्ठी लाख की, खुल जाए तौ खाक की।	:	साख बनी रहना हितकर होता है।
बंदर की दोस्ती, जी का जंजाल ।	:	खतरनाक से सावधान रहे।
बंदर घुड़की देना।	:	धौंस देना, धमकाना।
बंदरा का जानें, अदरक कौ स्वाद ।	:	मूर्ख से समझदारी की आशा बेकार।
बंदरा के गरै में, मोतियॅन की माला।	:	हानि के अलावा कोई लाभ नहीं।
बदरा हाट उस्तारा परौ, प्राण बचाबौ कठिन परौ।	:	खतरनाक खेल, जी का जंजाल।
बॅदर बैला जेठौ पूत, बाज बाज कड़ै (विरला) सपूत।	:	अधिकतर सुस्त निकम्मे होते, ही उत्तम पैदा होता।
बदी के समुन्दर में, नेकी खों का टेरत।	:	झूठी अपेक्षा या आशा बेकार।
बदौ दुक्ख कोट उपाय करौ, काटै नईं कटत।	:	भाग्य लिखा भोगना पड़ता।
बनज करे बाँनियाँ, और करें रीस	:	बनिया ही व्यापार में सफल होता।
बन पालक अरू भैस उखारी, जेठ मॉस में चार दुखारी।	:	जेठ के महीने में चारों दुखी रहते।
बन में उपजे सब कोए खाए, घर में उपजे घर ही खाए।	:	जंगल की संपत्ति सबकी घर की केवल घरवालों के लिये।
बनतन देर लगत, बिगरत नईं।	:	निर्माण में समय लगता विध्वंस में बिल्कुल हीं।

बनया बॉमन, पनयाँ सॉप, इनमें बिस न होय आप। : ये तीनों विषैले नहीं होते हैं।

बनाईं खाईं गकरियों गाएँ गीत, जे चले चैतुआ मीत। : मतलब तक रहे सँगी-साथी।

बनियाँ कौ मित्र साहू। : एक से स्वभाव वालों में दोस्ती अच्छी निभती

बनियाँ अपने बाप तक खों ठग लेत। : बनियों महा ठगैल होता है।

बड़े बोल कौ, मौ करौ। : घमंडी का सिर नीचा।

बड़े बोल कौ, नैचौ मूँड़। : घमंडी का घमंड चूर-चूर होकर रहता।

बड़े भाग सें पाऊत दाद खाज उर लाज। : सुख-दुख भाग्य लिखे की बात।

बड़े बड़े सॉप पथरियॅन दै मारै, जो बिच्छू सौ डंक उठॉए। : अपने बड़प्पन की ढ़ींग अहंकार के बोल।

बड़े सपूत करें रूजगार, सोरा सै के करें हजार। : घाटे का सौदा।

बड़ौ का दुख बड़ा, छोटों का छोटा होय। : जैसी जिसकी हस्ती तैसा सुख दुख।

बड़ौ की, बड़ी बात । : धनवानों के काम बड़े।

बड़ौ कौर खा लैवै, पै बड़ों बोल ना बोलै । : अहंकार के बोल ठीक नहीं होते।

बड़ौ लाड़ मोरी मौसी करें, छिनक छिनक दोउ कौर भरें। : लाभ से अधिक हानि ।

बटिया खेती सॉट सगाई, जामें नफा कोंन्नें पाई। : कोई लाभ का सौदा नहीं।

बत्ता का करै/जरै, तेलइ नइयाँ। : आवश्यक वस्तु नहीं, काम कैसे हो।

बत्तीस दॉतन, बीचों जीभ । : मुसीबत में कठिन समस्या में फॅसे ।

बद अच्छा/अच्छौ, बदनाम बुरा/बुरौ। : बदनामी बहुत बुरी चीज है।

बद बदी सें न जाए, तौ नेक नेकी सेंऊ काए जाए। : जब बुरा बुरे काम नहीं छोड़ता तो फिर भला भलाई के काम क्यों छोड़े।

बदन में नई लत्ता, पान खाएँ अलबत्ता।	:	गाँठ में कुछ नहीं, शान बड़ों सी।
बदन के चोचले जानबौ, हर कौ के बस की नइयाँ।	:	बड़ों के नखरे, समझ से परे होते हैं।
बड़न सँग खेती करी, भुस बॉटन अबेरा परी।	:	बड़ों के सँग छोटे पिस जाते।
बड़ा रोय बड़ाई कों, छोटा रोय पेट कों (खों)	:	जिसकी जैसी हैसियत तैसी उसकी सोच।
बड़ा निबाला खाइये, बड़ा बोल न बोलिये।	:	चरमडी व्यवहार घातक होता है।
बड़ी ननद, शैतान की।	:	दुखदायी व्यवहार ठीक नहीं।
बड़ी मछली, छोटी खों खात।	:	हमेशा बड़े छोटों को सताते।
बड़ी मुतॉन औ लम्बे कान, हर देखे पै तज दै प्रान।	:	बेकार बैल की पहचान।
बड़ी पातर कौ, बरा बड़ौ।	:	मुँह देखा व्यवहार।
बड़ी बऊ, बड़े भाग।	:	बड़े को बड़प्पन मिलता ही है।
बड़ी मार करतार की, दिल/चित्त सैं देहु निकार	:	दिल में विशेष स्थान न देना ही बड़ी सजा है।
बड़ी बउ/बाई ने बड़ौ जौ जस करौ, फरा में घी धरौ।	:	चापलूसी का व्यवहार।
बड़े की पच्छ, गरीब खों धर दबा लेओ।	:	मुँह देखा काम, पक्षपातपूर्ण व्यवहार।
बड़े की बड़ाई, न छोटे की छुटाई।	:	सब धान बाईस पसेरी मानना।
बड़े बड़े बहे जात, भेड़िया पार जान चाहें। (चाय)	:	जहाँ बड़े समर्थ नहीं वहाँ छोटों की क्य औकात।
बड़े बड़े बउत जॉएँ, ढोलिया कय मोय पार लगाब ।	:	बड़ों के आगे छोटों की क्या पूँछ।
बड़े कौ बाप, छोटे की मतॉई, मॅजले कौ कोऊनई।	:	'सरल' दुनियाँ की रीति, मॅझले को कहीं कोई महत्व नहीं।

ब्याव खों बारा बरस बाट हेरी, चलाए खों दमदम पारे।	:	अधिक उतावलापन दिखाना कभी ठीक नहीं होता।
ब्याव भऔ, न बरातै गए।	:	बिल्कुल अनुभवहीन ।
ब्याव भएँ पछतात, जी कौ नईं भऔ पछतात ।	:	सबके अलग-अलग अनुभव।
ब्याह हुआ नहीं, गौने को झगड़ा।	:	बेमतलब की बात।
ब्याही बेटी का राखना, हाथी का राखना बरोबर।	:	अधिक खर्च की जड़ मुसीबत लाती।
ब्याही बहू, साग बरोबर।	:	मनचाहा उपयोग करना।
बइ बइअर के, अड़ा के पड़ा।	:	उसी स्त्री की संतान ।
बाई बाई फ़िट, बुरी बात।	:	बुरी बात शीघ्र फैल जाती है।
बूत कोऊ नैं, औ औ धरती पै।	:	मनुष्य जन्म प्रभु की देन है।
बऊत गंगा में, हात धो लो।	:	मौके से लाभ ले लो।
बकरा की मताई, कॉनौ खैर मनाएँ।	:	एक न एक मुसीबत आकर रहती।
बखत चूकें, का पछतॉनें।	:	बाद का पछतावा बेकार ।
बख्त फेलें जुगन को फेर पर जात।	:	बीता समय लौटकर कभी नहीं आता।
बगल में तबा, तौ चायें जॉ पबा।	:	साधन हो तो हर जगह सुविधा।
बगल में मौड़ा, गाँव में ढ़िढ़ोरा।	:	बेवकूफी का झूठा प्रचार।
बगार नई लग पाऔं, बखिया उधेड़ दई।	:	अच्छे काम में बाधा डालना।
बघार लगौ नईयाँ, उचक्कन नें डेरा दऔ ।	:	अचानक आई मुसीबत ।
बच्छा बूँदै नोंनों हात, डोर पगैया मोरे हॉत।	:	व्यर्थ की उछलकूद ।
बदन की शरीगत, दोस्ती कैसे करें।	:	संभव ही नहीं। स्तर के अनुसार कार्य एवं व्यवहार
बदन की बातें, बड़ी जानें।	:	जितनी साख उतना काम।

बड़न कौ, बड़ौ पेट।	:	बड़े अधिक लालची होते है।
फूहर के घर उगी चमेली, गोबर मॉड उसी पर गैरी।	:	बेवकूफ को अच्छे बुरे की पहचान नहीं होती।
फूहर की मैल, फागुन में उत्तरत।	:	महाआलसी व्यक्ति।
फूहर चलै, सब घर हलै।	:	दिखावा अधिक काम कम।
फेरफार चुटिया पै तात, पान्डे लये आये बारात ।	:	अनावश्यक बोझ डालना
फोकट कौ हिंडोला, हमें झूल लैन देओ।	:	मुफ्त में स्वार्थ सिद्ध करना।
फोकट कौ चंदन, घिस मोरे नंदन।	:	बिना कुछ खर्च किये काम निकालना।
फोकट में मिले ती, हमई खों ल्याओ।	:	मुफ्त की वस्तु का लालच।
फोरा मिट जात, गूद नई मिटत।	:	पीड़ा के चिन्ह शेष रह जाते है।
व्याऔ बरात खों को हैं, इनै गिनें चार जनें।	:	कार्य कर्ताओं की कमी।
ब्याऔ न चलाऔ, झूठ मूंठ कौ चाऔ।	:	झूठी कल्पना, झूठा प्रचार।
रेस्टुरेंट औ दच्छना, पाछे मिले कुच्छना।	:	समय पर मिल जाए सो सही बाकी सब झूठ।
ब्यारी कभऊँ न छोड़िये, ब्यारी से बल आए।	:	रात्रि-भोजन हमेशा लाभ देता।
व्याब नई करौ, बरातें तौ देखी ।	:	कुछ न कुछ अनुभव तो है ही।
ब्याज मूर सैं, प्यारौ होत।	:	अधिक प्रिय होता है।
ब्याज बढ़ायें धन घना, रॉड बढ़ाये छोह/क्रोध।	:	दोनों चीजें अपनी-अपनी जगह ठीक।
ब्याव काज में हजार तरों के, आठ काठ जोरनें परतई।	:	शादी जैसे महत्वपूर्ण कार्य की व्यवस्था में काफी परेशानियों आती।
ब्याव कौ भरौं, चोए जिति परौ	:	भीड़भाड़ में व्यवस्था गड़बड़ा जाती।
परिये सदा, खेलिये सदा।	:	सादा जीवन सुखी रहता है।

पैरी ओढ़ी धनों दिपै, लिपौ पूतौ घर खिलै।	:	सुसज्जित स्त्री, लिपा-पुता घर शोभा देते।
पैलई कौर में माँछी।	:	प्रारंभ से ही अपशकुन होना।
पैलई सँ ठॉड़ेते, हॉत जोरें नैया खेबे।	:	अवसर की ताक में उधार बैठे थे।
पैलॉ मूँड़ कटौअल अब धरमराज।	:	पहले शेर बाद में सियार।
पैलॉ अपुन पैरबौ सीकौ, तब दूसरन कों सिकाओ।	:	पहले अच्छी बातें अपनाओ फिर दूसरों को सिखाओ।
पैलॉ अपऔ घर, पाछें बायरे के।	:	स्वार्थ पहले परमार्थ बाद में।
पैलॉ दाम, पाहूँ काम।	:	पहले पैसा, पीछे काम ।
पैलॉ दुख के बीजा बऊत, फिर पॉछै पछतात ।	:	बुरा करके पछताना।
पैलॉ घर कें, पाछें बायरे के।	:	स्वार्थ पहले परमार्थ बाद में।
पैलॉ तौलौ, फिर बौलौ।	:	सोच-समझ कर बोलना चाहिये।
पैलॉ सबा सेर, पाहूँ सबा पाव ।	:	जैसा मौका तैसा भाव।
पैलॉ मारै, सो मीर।	:	पहले हमला बोलने वाला लाभ में रहता है।
पैलॉ छेरी दूसरी गाय, तीसरी भैंस दुही न जाए।	:	प्रकृति प्रदत अंतर दिखलाई पड़ता है।
पैलेइ चूँमा गाल काट खाए।	:	आरंभ में ही अपशकुन ।
पैलैं अपाहे मौ मुसिका देओ, पाछेन औरेनें टोकौ।	:	नियम का पालन पहले स्वयं करो फिर किसीऔर को शिक्षा दो।
पैलें लिखो बाद में देओ, भूल परै कागज से लेओं।	:	लिखी पढ़ी बात ठीक होती।
पैलें तौलौ, पाछे बोलो।	:	सोचकर बोलो।
पैलै बोलत नइँयों, पाछें छोड़त नइँयों।	:	पहले बोलते नहीं पीछे छोड़ते नहीं।
पैलै मारै, पाछे सॅवारै ।	:	दोहरी चाल चलना।

7. निष्कर्ष एवं शोध उपयोगिता

7.1 निष्कर्ष

बुन्देली लोकोक्ति के विकास में गौरीशंकर जी का योगदान

डॉ. श्री गौरीशंकर उपाध्याय ने बुन्देली भाषा के मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियों का अनुपम संग्रह किया है। 'बुन्देली' की अपनी एक मिठास है और इसके माधुर्य का आस्वादन वहीं कर सकता है जो बुन्देली भाषा में रचा-बसा हो, जो बुन्देलखण्ड के अंचलों से परिचित हो और बुन्देली की व्यापकता को महत्व भी देता हो। बुन्देली भाषा का क्षेत्र उत्तर-प्रदेश की व्यापकता को महत्व भी देता हो।

हनुमान की पूँछ में लग न पाई आग।
लंका सारी जल गई, गए निशाचर भाग ।।

'सरल जी' के इस लोकोक्ति कोष में बुझौअल पहेलियों की बातें मानव जीवन को ज्ञान बाँटने वाली प्रतीत होती है, जो आज प्रायः लुप्त हो रही हैं। वास्तव में ये पहेलियाँ बड़े-बुजुर्गन के साथ बैठकर सुनने को मिलती है। यहीं लोक जीवन के स्कूल रहे हैं। इन सुन्दर पहेलियों द्वारा बड़ी सरलता से गंभीर कथा सूत्रों का ज्ञान सृजित किया गया है यथाः

पहर चौसठ घड़ी, ठाकुर पै ठकुरॉन चढ़ी (तुलसी, सालिग्राम)
पन्द्रा फुट की एक टॉग, तीन रंग की चोली
बीच पेट में चक्र बनौ, बूझौ सही पहेली (तिरंगा झंड़ा)
गेंदा के दस फूल, बेला की एक कली (रावण और सीता)
दो पग चले चार लटकाबें, सुनों परोसन बैनौं।

ऐसो भओ न हुइये आगे, तीन मूँड़ दो नैना ।।

(श्रवण कुमार और उनके माता-पिता)

इस प्रकार विद्वान साहित्य मनीषी डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल जी' ने अपने इस 'लोकोक्ति कोष' में लोक-शास्त्र निहित, लोक-वार्ता साहित्य के सभी अंगों को समाहित करने का सुन्दर प्रयास किया है। ऐसे लोक-वार्ता साहित्य के प्रति अग्रज विद्वानों का अभिमत है कि अनेकार्थी भाषा, बोलियों, उपबोलियों में व्यक्त लोकोक्ति कहावतें व पहेलियों जैसा वार्ता साहित्य वैभव हमें गाँव से मिला है जिसमें जीवन की उन्मुक्त धारा में साहित्य मुखरित होता है। ऐसे साहित्य को संग्रहीत कर डॉ. सरल जी ने बुन्देली, हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि का सुकर्म किया है इसके लिए वह बधाई के पात्र है यह 'लोकोक्ति कोष' साहित्येत्सु व मनीषियों की स्वीकारोक्ति प्राप्त करने में अवश्य सफल होगा। डॉ. ग्रियर्सन ने इस जिले में प्रचलित बुंदेली रूप को 'पँवारी' कहा है। इस जिले में परमार अथवा पँवार राजपूत एक बड़ी संख्या में बसे हुए हैं।

संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश की विकास परम्परा में हिन्दी के अस्तित्व पर विचार करने के पूर्व यह उल्लेखनीय है कि किसी भी भाषा और उसके साहित्य का इतिहास समवर्ती नहीं हो सकता क्योंकि प्रत्येक भाषा मूलतः लोकभाषा के रूप में विकसित होती है और उसके बहुत पश्चात् उसमें साहित्य की सृष्टि होती है। यह साहित्य भी प्रारम्भ में लोक साहित्य ही होता है। बुन्देली अथवा बुन्देलखण्ड़ी के सम्बन्ध में भी यही स्थिति रही है। बुन्देली में प्रचुर साहित्य है। सर्वप्रथम आल्हा ऊदल से संबंधित वीर चरित्र काव्य है जो अभी भी संपूर्ण उत्तर भारत में पाया जाता है। इसके पूर्व भी लोक में प्रचलित लोकोक्तियाँ (कहावतें और मुहावरे) जनसाधारण के बीच विद्यमान रहे हैं, जिनकी श्रृंखला

बुन्देली समाज में आज भी चली आ रही है। इस प्रकार बुन्देली एक जन्भाषा है और उसका अस्तित्व यहाँ के नर-नारियों के मुख से मुखरित होता है। साधारण बुद्धि का मानव ऐसी सूक्तियाँ व्यक्त करता है, जो गागर में सागर भरने की, कहावत चरितार्थ करती है। अनुभव भरी उक्तियाँ प्रकाश स्तम्भकी भाँति कार्य करती हैं, वे मनोरंजक तो होती ही है, साथ ही बुद्धिपरक भी हैं।

डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के कथनानुसार ″ऋग्वेद से शुरू करके अब तक के भारतीय साहित्य में पाद और कहावतों का एक स्थान रहा है। ऋग्वेद और अर्थवेद में कितने ही पगरे अर्थऋक, पाद या अर्थपाद को अर्थतः लोकोक्ति या कहावत कहा जाता है।″ डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने लोकोक्ति साहित्य के संबंध में लिखा है ″लोकोक्तियाँ मानवीय ज्ञान के चोखे और चुभते हुए सूत्र हैं। लोकोक्तियाँ मानवीय ज्ञान के घनीभूत रत्न हैं, जिन्हें बुद्धि और अनुभव की किरणों से फूटने वाली ज्योति प्राप्त होती है।″ इस प्रकार के मनोरंजक एवं, बुद्धिपरक लोक साहित्य कौ खुन्स, ओटपाव, कहावतें, पहेलियाँ, लटके और ढ़कोसले एवं मुहावरें के रूप में बाँटा जा सकता है। लोकोक्ति साहित्य प्रकृति के ज्ञान की भाँति सार्वभौम है। न उसका कोई कर्त्ता है, न उसका देशकाल से उतना घनिष्ठ संबंध है, जितना अन्य साधारण साहित्य का होता है। साधारणतःलोकोक्ति में व्यंगार्धा की प्रधानता रहती है और कहावत में समास शैली को अपनाया जाता है। कहावत को अहाना, कधनी, कहन, कहनावत, कहतूत, कहावति, कहौअल, रवायत, नेवा, मकूला, मसल, मिसाल, और लोकोक्ति कहते हैं। कहावतें गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों प्रकार की होती हैं। पहेलियों की भाँति यह भी अनेक रूपों में विभक्त हैं। बुन्देली में कहावत, मुहावरे, पहेलियों अनेक रूपों में विभक्त है। यथा-कहावतें-कृषि, स्थान, नीति, पादप, पुष्प, पशु-पक्षी, शकुनापशकुन, वर्षा, काल, जाति, आकृति,

स्वास्थ्य, दिशा–शूल, मानव–प्रकृति, इतिहास आदि से संबंधित। पहेली को आड़ी, पहेलिका, बुझनी, बुझौअल, मुकरी तथ् प्सस्या भी कहा जाता है। उसके भी अनेक भेद हैं।

यथा–पादप–पुष्प संबंधी, कीट–पतंग, खाद्य–पदार्थ, कृषि, सूर्य–चन्द्र, तारा, मेघ, आकाश आदि, कूप–तालाब, नदी–झरना, आदि वेश–भूषा, पशु–पक्षी, गणित, अस्त्र–शस्त्र, देवी–देवता आदि से संबंधित ।

बुन्देलखण्ड़ में लोकोक्ति साहित्य का अपार भंडार विद्यमान है जो सैकड़ों वर्षों से समाज में परम्परागत मुखाग्र रूप से प्रचलित होता रहा है, इसका प्रकाशन भी बहुत कम हो सका है, और संग्रह भी न के बराबर ही है। इस क्षेत्र में अनेक विद्वान, मनीषियों ने संकलन कार्य में सहयोग किया है। जिनमें सर्वश्री बनारसीदास चतुर्वेदी, कृष्णानन्द गुप्त, डॉ. वृन्दावन लाल वर्मा, डॉ. सत्येन्द्र, पं. गौरीशंकर द्विवेदी, भगवानदास ज्योतिषी, डॉ. गनेशीलाल बुधौलिया, डॉ. श्याम सुन्दर बादल, दुर्गा प्रसाद समाधिया, लक्ष्मीचंद्र नुन्ना, हरगोविन्द गुप्त, द्वारिकेश मिश्र, रामचरण हयारण ″मित्र″, ″कन्हैयालाल″ ″कलश″ आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पं. बनारसी दास चतुर्वेदी ने ″मधुकर″ पत्रिका के माध्यम से इस दिशा में बहुत कुछ कार्य कराया है तथा इसका प्रकाशन भी किया है।

ऋग्वेद में प्रयुक्त ब्रहोदयों से ज्ञात होता है कि पहेलियाँ मानव की विकासोन्मुख अवस्था के साथ ही क्रमशः विकसित हुई। पूर्व वैदिक काल में मौखिक साहित्य ने वेदों के निर्माताओं को अपनी महत्ता से आकर्षित किया इसीलिए आज जब इस लोक में प्रचलित एवं बुद्धिपरक साहित्य के विस्तार का अध्ययन करते हैं तो कुतूहल होता है। ऋगवेद का यह देवता देहाती रूप में आज भी हमारे सामने है। सभ्य और शिक्षित समाज के लिए ग्रामीणों के पास

यह अनमोल निधि संचित है। गाँव वालों ने युगों से चली आई इस घुमावदार सलोनी नदी को अभी तक सूखने नहीं दिया। डॉ. भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी श्वागीश शास्त्रीश् ने 'प्राचीन भारतीय भाषाओं के अभ्युदय में बुन्देली भाषा का योगदान' नामक अपने शोध निबंध में अनेक महत्वपूर्ण उद्धरण देते हुए लिखा है' भारत की महत्वपूर्ण प्रादेशिक भाषाओं में बुन्देली अन्यतम भाषा है। कश्मीरी, पंजाबी तथा मागघी भाषा की भाँति यह भी पर्याप्त प्राचीन है। कुछ अंशों में यह बुन्देली भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं में प्राचीन और उत्कृष्ट है।' आपने इस निबंध में वैदिक और लौकिक संस्कृत, देशज तथा प्राकृत भाषाओं के कुछ शब्दों अर्थाभ्युपगम में बुन्देली भाषा के योग का परीक्षण किया है। उन्होंने निष्कर्ष रूप में बताया है. कि 'यह प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति का आदपन है।'

उपर्युक्त विश्लेषण करने की आवश्यकता मुझे इसलिए हुई कि मेरे सामने बुन्देलखण्ड के ही लोकभाषा विशेषज्ञ डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल' का विशालतम बुन्देली मुहावरों एवं कहावतों का संग्रह विद्यमान है, जिसे देखकर हतप्रभ हो गया, हजारों की संख्या में संग्रहीत सामग्री देखकर यह अनुमान लगाना रवाभाविक है कि इन्होंने अनगिनत वर्षों के दुर्लभ प्रयास से ग्रामीण अंचलों की खाक छानकर इनका संग्रह किया है, और लुप्त होते जा रहे बुन्देली कहावतों-मुहावरों को एकत्र करने का अथक प्रयास किया है। मैंने अनेक विद्वानों द्वारा इस क्षेत्र में किए गये योगदान को देखा है किन्तु इनका इतना विशाल संग्रह आज तक देखने को नहीं मिला। इस दिशा में इन्होंने अनवरत मूक साधना की है, संग्रह संकलन भी स्वाभाविक ढंग से किया है, गाँवों की अथारी तक पहुँचे है, जन-जन की जिह्वा से अद्भुत इन कहावतों-मुहावरों को सुनने की ललक रही है। इन्होंने बुन्देली भाव और स्वरूप की रक्षा करने कर

कृत संकल्प किया है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रयास करते रहने का भी बीड़ा उठाया है। जन-साधारण के निकट उठे-बैठे है। उन्हें देखा, परखा और समझा है। उनकी जीवन शैली का अध्ययन किया है। उनके हाव-भाव भंगिमा सुनने-परखने के लिये लालायित रहे है। तात्पर्य यह है कि इस दुर्लभ प्रयास के लिये इन्होंने घाट-घाट का पानी पिया है, और असंख्य कहावतों-मुहावरों का संकलन कर अभी तक के किये गये प्रयासों को बहुत पीछे छोड़ दिया है। यह अद्भुत और श्रम साध्य कार्य है। बुन्देली भाषा को जीवन्त बनाये रखने का अनोखा प्रयास है। इस संकलन में जहाँ लोक-जीवन एवं लोक-संस्कृति का यथार्थ स्वरूप उजागर हुआ है, वहीं बुन्देली भाषा के शब्द-भंडार में भी असीमित वृद्धि हुई है। आपने अपने 'बुन्देली शब्द कोष' एवं 'लोकोक्ति शब्द कोष' को नये ढंग से सजाया और सँवारा है। बुन्देली में ही इन कहावतों-मुहावरों के शाब्दिक भावार्थ को स्पष्ट करके उसे और अधिक रोचक बनाया है। इस दुर्लभसंग्रह से बुन्देली भाषा-साहित्य की दिशा में भी अभूतपूर्व योगदान हुआ है। इससे बुन्देलखण्ड़ी भाषा, बुनियादी शब्द-भण्डार एवं व्याकरण के लिये भी दिशा बोध हुआ है। पानी और वाणी चार-चार कोस के अन्तराल में किस रूप-स्वरूप में परिवर्तित-परिवर्धित होती रही है, इसकी भी जानकारी इससें मिल जाती है। बुन्देली भाषा, साहित्य और व्याकरण को इस 'बुन्देली लोकोक्ति कोष' से स्पष्ट दिशा निर्देशन मिलेगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। वर्णानुक्रम से इसका संग्रह करते रहने का उन्हें बल-सम्बल प्राप्त होता रहेगा, ऐसी मैं आशा करता हूँ। यद्यपि यह श्रम साध्य और कठोर व्रत-उपासना की माँग करता है। संग्रहकर्त्ता श्री उपाध्याय जी इसका निर्वहन किस रूप में कर सके है, यह वे ही जानें। मेरे लिए तो यह अकथ कहानी ही है।

अंत में मैं तो इन्हें मूक तपस्वी ही स्वीकार करता हूँ। बिना किसी प्रलोभन के यह सतत् साधना में वर्षों जुटे रहे। यह सब इनकी खोजी प्रवृति को ही दर्शाता है। इनका यह शोध प्रयास आगे आने वाली पीढ़ी के लिये निःसंदेह वरदान सिद्ध होगा, और बुन्देली कवि, साहित्यकार, लेखक, विचारक, शोध-कर्ता, प्राध्यापक, छात्र तथा सामान्य नागारिक के लिये प्रेरक एवं मार्गदर्शक बनेगा, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। यह इनकी गहरी अनुभूति एवं सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति की ही प्रतिफल है तथा बुन्देली भाषा एवं साहित्य को गतिशील बनाये रखने के लिये अद्भुत वरदान है। लोक मानस के लिये तो यह 'मानसरोवर' की भाँति है, जिससे यह न केवल शिक्षा ग्रहण कर सकता है वरन् वह मानसिक व्यायाम से बुद्धिमान बने रहने के लिये उद्यत रह सकेगा।

हजारों वर्ष पुरानी बुन्देली शब्द ज्ञान परम्परा की विरासत में मिली-बिखरी गौरवशाली सम्पदा को एकत्र कर संग्रहकर्ता श्री उपाध्याय जी ने जो उत्कृष्ट प्रयास किया है, उसकी मैं मुक्त कंठ से भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ। आज बुन्देली भाषा उपेक्षा की दृष्टि से देखी जा रही है। इस दृष्टि से यह सर्वेक्षण हमें बताता है कि यह कितने महत्व की भाषा है। राष्ट्र की इस धरोहर की अवश्य रक्षा होनी चाहिये।

आभ्यान्तरिक सरसत्वा तथा प्रकृति प्रदत्त प्रतिभा मात्र बुद्धिजीवियों की सम्पत्ति नहीं है। वह न्यूनाधिक रूप से जन सामान्य में प्रतिष्ठित रहती है। हर व्यक्ति अपने अन्तर भावों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, तथा भाव प्रकाशन प्रक्रिया को सूत्र रूपता प्रदान करने का यत्न करता है। अभिव्यक्ति की यह प्रक्रिया भाषा के अभिधात्मक रूप में कम मिलती है। उसमें सहज एवं अनजाने ही लक्षणा और आगे बढ़कर व्यंजना का समावेश हो जाता है। लोक जीवन में पारस्परिक विचारों एवं भावों के आदान-

प्रदान में बहुत प्रयोजनीय होने से यह विद्या लोकोक्ति तथा सामान्य जनों द्वारा कथनीय होने से कहावत (बुन्देली रूप कैनाउत) कहीं जानें लगी है।

रचित तथा लिखित साहित्य में प्राणत्व प्रदान करने के लिये कवि तथा लेखक प्रतिभा तथा मौलिकता का सम्बल ग्रहण कर पूर्ववर्ती रचना शैलियों से ग्रहण कर स्वयं पूर्व प्रयोजित लक्षणा अथवा व्यंजना जनित सोद्देशीय पदावलि वाक्यावलि का प्रयोग करता है। ये सब सर्व प्रयोजनीयता ग्रहण करके लोक व्यवहार में आ जाती है तो मुहावरों का रूप ले लेती है।

'यथा-पराधीन स्वप्नहुँ सुख नहीं' (गो. तुलसीदास)

पूर्व काल से ही ऋषियों के मंत्रों द्वारा लोकोक्तियों, कहावतों तथा मुहावरों के प्रयोग की परम्परा चली आ रही है। प्रायोजित भाषा के परिवेश परिवर्तन के साथ ही उनका परिवेश परिवर्तित होता रहता है। काल तथा परिस्थितियों के परिवर्तन स्वरूप तथा सामान्य जन की चिन्तन शीलता के परिवर्तन एवम् सहसा घंटित घटना के प्रभाव से भी इन में किसी न किसी अंश में परिवर्तन होता रहता है। यथा 'मार के भगिये खा के परिये' और 'पैलॉ मार पाछें सम्हार' (छत्रसाल की युद्धनीति) । सीमित क्षेत्र में कुछ कहावतें घटनाओं अथवा विशेष स्थितियों के आधार पर बन जाती है। यथा ललितपुर जनपद में प्रचलित 'कुरौरा के आल्दे' और 'अजाची के भूत होना' आदि।

विश्व की सभी भाषाओं में परम्परागत रूप से लोकोक्तियों, कहावतों तथा मुहावरों का प्रयोग चला आ रहा है। इसके उदाहरण अंग्रेजी में Tit For Tat, तथा Every thing is fair and good in war and love फारसी में, 'अल खामौशी नीम रजा' तथा 'नीम हकीम खतरे जान' है।

ओरछा नरेश महाराज वीरसिंहदेव (द्वितीय) को बुन्देलखण्ड़ एवं बुन्देली से विशेष लगाव था। वे बुन्देली का सर्वागीण विकास चाहते थे। आचार्य पं. बनारसीदास चर्तुवेदी की संरक्षा एवम् सम्पादकत्व में इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु मधुकर पत्रिका का प्रकाशन होता रहा इससे प्रेरणा प्राप्त करके बुन्देली शब्दावलि के संकलन के साथ बुन्देली लोकोक्तियों तथा कहावतों के संकलन का कार्य पं. सीताराम पटसारिया श्री कृष्णानंद गुप्त तथा पं. गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' ने आरम्भ किया, इन महानुभाव के अतिरिक्त श्री हरगोविन्द गुप्त श्री रामचरण हयारण मिश्र एवं पं. द्वारिकेश मिश्र भी इस कार्य की पूर्ति हेतु आजीवन सोद्योग रहे।

वस्तुतः यह कार्य एक संघ के रूप में करणीय था। किन्तु इसे करने के लिये सम्बद्ध पूरे बुन्देलखण्ड के प्रयासरत विद्वानों की कोई समिति नहीं बन प्रायी, फलतः प्रत्येक विद्वान का किया गया प्रयास एकदेशीय ही रह गया। इस महान कार्य के लिये सूत्रपात करने वाले आचार्य बनारसीदास चर्तुवेदी के साथ पूर्ण लगन से कार्यरत समस्त महानुभावों का प्रयास निस्संदेह अतुल्य है। किन्तु इसे पूर्णता प्रदान करने का श्रेय डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय को जाता है। जिन्होंने अपनी लगन तथा समस्त बुन्देलखण्ड़ के अनेक जनपदों के अन्चलों में फैले ग्रामों में जाकर शिक्षित-अशिक्षित निवासियों से सम्पर्क स्थापित करके सहस्त्रों लोकोक्तियों का संकलन करके इस रूप में प्रस्तुत किया तथा प्रस्तुत भावों के साथ उनके प्रयोगात्मक रूप भी पाठकों के समक्ष रखे।

काव्य-रचना में अलंकार, भाषा-सौन्दर्य और अर्थ-संप्रेषण की अभिव्यंजना में विशेष महत्वपूर्ण माने गए काव्य-विवेचन, शब्द अर्थ, ध्वनि, नाद, वक्रोक्ति आदि के प्रयोग से लय, सुर, ध्वनि, व्यंजना आदि की अभिव्यक्ति में सौन्दर्य की स्थापना करते हैं साथ ही काव्य की आनन्दमयी स्थिति को भी

बनाए रखने का प्रयास करते हैं। कविता मनुष्य-मात्र को सर्व प्रथम प्रभावित करने का अनादिकाल से माध्यम रही है। किन्तु, गद्य लेखन के विषय में इन्हीं उपकरणों का अभाव आलेख को सुसंगठित बनाए रखता है। 'गद्य कविना निकषः वदन्ति' कहकर आचायों ने कवियों की परख गद्य लेखन से की है।

एक सहज प्रश्न हैः- क्या गद्य लेखन में भी अलंकारों की भाँति ऐसे भाषायी प्रयोग हैं जो आलेख, निबंध, आख्यायिका आदि विधाओं को अलंकृत कर सकें ? ऐसे भाषायी उपकरणों में लोकोक्ति, मुहावरें, कहावतें, दृष्टांत, उदाहरण, उद्धरण, संस्मरण आदि का अध्ययन और लेखन में व्यवहारिक प्रयोग आलेख को सौंदर्य प्रदान करता है। काव्य में अलंकार का स्थान अपेक्षाकृत सीमित है, ठीक उसी प्रकार लोकोक्ति और मुहावरों का प्रयोग भी गद्य-लेखन में उपयुक्तता के सहारे चलता है।

'मुहावरे और कहावतें' अनुभव, घटना, कल्पना, कथा आदि पर निर्भर है और उन्हीं से दीर्घ कालावधि से प्रचलन में आकर एक सामाजिक बोध कराते हैं। मुहावरों और कहावतों का मुख्य आधार अनुभव रहा होगा, जो घटनाओं से सम्बद्ध है। घटना की निरन्तर आवृत्ति जिस स्थायी निष्कर्ष को जन्म देती है उसे लेखक परोक्ष रूप से सामान्यीकृत और साधारणीकृत कर सर्वमान्य स्वीकृति दिलाने और देने का प्रयास करता है। परोक्ष कथन की सत्यता भी प्रमाणिक होती है जिसमें लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्तियों अपने लाघव से हेतु-संप्रेषण की क्रिया सम्पादित करती है। अर्थात् प्रत्यक्षः वह अभिधा के प्रतीकों से परोक्ष रूप में व्यंजना द्वारा अर्थ-संप्रेषण करता है। लक्षणा और व्यंजना में बहुत कम अंतर है-व्यंजना अन्तर्निहित अर्थ का उद्घाटन करती है तो लक्षणा गुणीभूत होती है। मुहावरे और कहावतें अपने कलेवर में अभिधा

परक होती है। किन्तु, संप्रेषण में वे ही लक्षणा और व्यंजना परक हो लगभग बाइस जनपदों और और ग्रामीणों अंचलों तक व्याप्त है। मध्यप्रदेश के होशंगाबाद और रायसेन के ग्रामीण क्षेत्रों में जितनी शुद्ध बुन्देली बोली जाती है उतनी हमें झाँसी-ललितपुर-जालौन-हमीरपुर में भी नहीं मिलती। उ.प्र. के इन क्षेत्रों में अन्य पूर्वी भाषाओं का भी छिटपुट दर्शन हो जाता है। बाँदा की भाषा में बुन्देली के अतिरिक्त भी अधिकांश भाग पूर्वी-हिन्दी का है।

इतने पर भी डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय ने अपने दीर्घकालीन अन्वेषण, शोध, खोज और ग्रामीण अंचलों में रहकर मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों का अनूठा संग्रह किया है इन्हें वर्णमाला कर्म में सजाया है, साथ ही इनके अर्थ भी दिए है। अतः इस संकलन और सम्पादन के कौशल पर उनके परिश्रम की प्रशंसा करना उनके मूल्यांकन को कम करना है। श्री उपाध्याय जी ने बुन्देली परिवेश को यथा-संभव बनाए रखने की चेष्टा की है। विषय की दृष्टि से आज के युग में भाषायी सौंदर्य और व्याकरण में अध्येताओं की रूचि की कमी दृष्टिगत होती है, तथापि सुधीजनों का समाज में अभाव भी नहीं है। इन सुधीजनों के पास यह कृति जब प्रकाशित होकर पहुँचेगी तो उसकी महत्ता निःसंदेह है। मैं स्वयं बुन्देलखण्ड के ग्रामीण अंचल का निवासी हूँ। अतः मुझे तो उस संकलन ने प्रभावित किया ही है तथापि जहाँ कहीं या जब कभी बुन्देली भाषा की चर्चा होगी या पुस्तकालय-वाचनालय की स्थापना होगी अथवा बुन्देली भाषा-साहित्य पर अनुसंधानित्सुक जन शोध कार्य करेगें तो इस ग्रंथ की उपादेयता द्विगुणित होकर जिज्ञासुओं को लाभान्वित करेगी। ऐसी मेरी मान्यता है। 'अपनी मताई सें भट्टी कोउ नई कत' तो मैं कैसे कहूँ। परन्तु, मेरा विश्वास है कि आप सब इस बुन्देली माँ को सम्मान देंगे। बुन्देली के इस अभिनव कोष का अध्ययन-मनन करेंगे। यह ग्रंथ मनीषी साहित्य

प्रेमियों के लिए तो उपादेय है ही विद्यार्थी समुदाय के लिए भी यह उपयोगी सिद्ध होगा।

डॉ. श्री गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल' जी के इस एकनिष्ठ कोष के संकलन-सम्पादन हेतु मैं उन्हें साधुवाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि इसके प्रकाशन से साहित्य जगत लाभान्वित हो।

लोकोक्तियाँ लोक मन से उद्भूत सूक्ति-वाक्य हैं जो मानव जीवन के सूत्र, श्रुति रूप में जुड़े हैं, और लोक रीति-नीति, प्रतीती, अनुराग-विराग, हास-परिहास, ज्ञान-विज्ञान, विधान, साहित्य-संगीत-संस्कृति, संस्कार व सामाजिक सरोकारों के आधार बनकर लोक विचारों में उद्धत होते रहते है, तथा कहावतें, मुहावरें, पहेलियाँ आने-अटका आदि के रूप में विभिन्न लोक प्रचलित हैं। लोक वैभव में समाज और साहित्य दोनों अन्तः साक्ष्य के रूप में प्रतिपादित चले आ रहे हैं। यह लोक वार्ता साहित्य माना जाता है। लोकोक्तियों, सामाजिक, देशीय सीमाओं में नहीं बँधती वरन् क्षेत्रीय विविधताओं में सतत् प्रवहमान रहती हैं। जो जन-श्रुति, श्रुति-साहित्य व सूक्ति साहित्य जैसे विपुल विशाल प्रकरणों में वर्णित हैं।

यह साहित्य हमारे पुराण वाङ्गमय वेद पुराण, रामायण, महाभारत आदि में प्रचुरता से देखने को मिलता है। संस्कृत साहित्य तो प्रासंगिक है। कालिदास के काव्य में इन लोकोक्तियों की महत्ता का प्रयोग किया गया है- 'निर्गतासु न वाक्यस्य कालिदास्य सूक्तिसः' हिन्दी साहित्य के पुरोधा तुलसी रहीम, कबीर आदि ने अपनी कविताओं में इन लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। बुंदेली भाषा साहित्य में तो लोकोक्तियों की प्रधानता ही उनके वैज्ञानिक गौरव की पहचान है। जो कलाकार के मुखपृष्ठ के रूप में और बाद में प्रकाशित साहित्य के रूप में देखने को मिलता है। बुंदेली कहावत कोष (सं. कृष्णानंद गुप्त),

लोकोक्तियां (शोध प्रबंध), जगदीश सन्न उपाध्याय 1960 के लगभग प्रकाशित। इसके बाद बुंदेली आने-अटके (आचार्य लाल कलश) सन् 1983 में प्रकाशित हुए और 'बुंदेली साहित्य लोक में लोकोक्तियाँ और मुहावरे' (डॉ. कैलाश बिहारी मठ) सन् 2008 में प्रकाशित हुए। लोक- साहित्य साहित्य के समान क्रम में डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय ने विपुल लोकोक्ति साहित्य में अपना असाध्य अभ्यास प्रकाशित किया है, जो संभवतः अभी तक बुंदेली लोकोक्ति साहित्य में वृहत्तर प्रमाणिक है।

डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय ने अपने इस 'लोकोक्ति कोष' में विपुल लोक वार्ता साहित्य को तीन भागों में प्रस्तुत किया है। जिनमें लोकोक्तियों, कहावतें तथा बुझौअल आदि हैं। इन तीनों में विद्यमान अन्तर बहुत सूक्ष्म रूप में ही होता है। इस कोष में लोकोक्तियों को परम्परागत वर्णानुसार क्रम में सजाया गया है। इन लोकोक्तियों में ज्योतिष, कृषि जीवन के उपांगों जैसे आध्यात्म संकीर्तन, संतोष, होनी-अनहोनी, रीति-नीति, संगति विपत्ति, माया-मोह की बातें देखने को मिलती हैं। इनकी कुछ बानगी का रूप देखने योग्य हैं।

आध्यात्म क्रूर का जानें ईसुर की भक्ति
संकीर्तन जौ हर-नाम संजीवन बूटी
असंगति चंदन संग बॉदे होड़ बमूरा'
कृषि अकुलॉय खेती, सुस्ताय बंज
ज्योतिषि अगिन कोण जो बहे समीरा,
पड़ै अकाल दुख सहै सरीरा,
अनहोनी होनी नईं हौबे खेवनहार

लोक–जीवन में जुड़े मानवीय आचरणों की अभिव्यक्ति और शत्रुता, गुप्तचरी व सामाजिक भेद–विभेद सम्मत लोकाचार की लोकाभिव्यक्ति की झलक देती लोकोक्तियाँ बड़ी स्पष्ट हैं।

मसक मार दैवै बैरी खों, कभउँ न पनपन देवै

हिन्नों से कान ठॉड़े करें

पॉत में दुभाँत नईं होत

कै जागै बिटिया को बाप, कै जी घर में होवै सॉप

परन्तु लोक संतोष की बातें भी करता है–

और बात खोटी, सही दार रोटी

माया, मोह–बाबा कौ जिउ बँगला में

इसके अतिरिक्त इस 'लोकोक्ति कोष' में पौराणिक गाथाओं से जुड़े लोक सुभाषित भी मिलते हैं। संगति और विपत्ति की कथाएँ इसके उदाहरण है यथाः –

संगत गुन अनेक, चढ़ महेश के सीस। इसमें तुलसी और शिव की कथा का संकेत है।

जाती हैं। किसी को 'गधा' कहने से वह गधा नहीं हो जाता अपितु उसमें निहित लक्षणों के आधार पर लक्षणार्थ या व्यंजनार्थ कर शब्द में मूर्खता का गुण मूर्तमान किया जाता है। परोक्ष कथन का यही सौंदर्य है। 'कोई लाज–शरम घोलकर तो नहीं पी जाता' का निरन्तर प्रयोग समाज में प्रचलित होकर जिस अर्थ को ग्रहण करता है या जिसका वह सम्प्रेषण करता है, वही किसी संदर्भ में घटित अनुभव है। निरंतर आवृत्ति से यह अनुभव परिपुष्ट होता है

और सामाजिक-प्रचलन से एक ऐसा अर्थ ग्रहण करता है जो शनैः शनैः अपने परिवेश में रूढ़ होकर एक नए अर्थ की सृष्टि करता है।

मुहावरे और कहावतें भाषायी सौंदर्य हैं। संपूर्ण घटनाक्रम, चाहे वह पूर्व घटित हो या उस संदर्भ में उपयुक्त हो, अभिव्यक्त नहीं किया जाता अपितु अनुभव आधारित वैसी ही स्थितियों से प्राप्त मुहावरें का प्रयोग-संपूर्ण प्रकरण को सीमाबद्ध कर कतिपय शब्दों में निहितार्थ को अभिव्यक्त कर देता है। यही मुहावरों और कहावतों की सफलता का रहस्य है।

मुहावरों और कहावतों में बहुत सूक्ष्म अंतर है। कहावतें अन्ततः कथ्य ही है अतः प्रसंगवश घटना आधारित है। मुहावरे घटना के निष्कर्षतः अनुभव की शब्द-सिद्धि हैं। अतः एक क्षेत्र की कहावत की प्रभावोत्पादकता उस क्षेत्र विशेष में किंचित अधिक महत्वपूर्ण होगी 'ईद का चाँद' कठिनाई से दिखाई देता है। कठिनाई एक लक्षण है-सामाजिक प्रचलन से यह मुहावरा सर्व-सामान्य के लिए उपयुक्त हो सकता है, किन्तु इस मुहावरे का उद्‌गम किसी जाति-धर्म और क्षेत्र विशेष से होने के कारण अर्थ सीमा में आबद्ध है। जापान जैसे देश में 'ईद का चाँद' का कोई महत्व न भी हो किन्तु क्या अरब देशों में इसके महत्व को नकारा जा सकता है?

7.2 **शोध उपयोगिता**

लोकोक्तियाँ और मुहावरे भाषा को अधिक प्रभावशाली और रंगीन बनाने के लिए उपयोग किए जाते है।भविष्य में भी इनकी उपयोगिता बनी रहेगी क्योंकि वे विचारों को स्पष्ट और संक्षिप्त रूप से व्यक्त करने , भाषा में आकर्षण लाने और संस्कृति को बनाए रखने में मदद करते है।

शोध, उपयोगिता, लोकोक्ति, और मुहावरे जैसे शब्दों को मिलाकर, हम शोध कार्य में उपयोगिता को उजागर करने के लिए लोकोक्ति और मुहावरों के उपयोग की बात कर सकते हैं। शोध उपयोगिता का अर्थ है कि शोध का उपयोग करके प्राप्त किए गए ज्ञान का व्यावहारिक स्तर पर उपयोग करना। लोकोक्तियाँ और मुहावरे, जो कि आम बोलचाल की भाषा का हिस्सा हैं, का उपयोग करके शोध कार्य की उपयोगिता को अधिक प्रभावी ढंग से समझाया जा सकता है।

उदाहरण : “अंधों में काना राजा ” लोकोक्ति का उपयोग करके , शोध के महत्व को समझाया जा सकता है , जहां एक ऐसा व्यक्ति जो अपने क्षेत्र में दूसरों की तुलना में थोड़ा अधिक जानता है , वह ज्ञान को साझा करके दूसरों की मदद कर सकता है।

″अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता लोकोक्ति का उपयोग करके ″, शोध के लिए टीम वर्क की आवश्यकता को समझाया जा सकता है , जहां एक व्यक्ति को एक शोध कार्य को पूरा करने में अन्य लोगों की मदद की आवश्यकता हो सकती है।

″आँख का अंधा नाम नयनसुख” मुहावरे का उपयोग करके ″, शोध में पूर्वाग्रह को उजागर किया जा सकता है , जहां एक व्यक्ति का दृष्टिकोण ज्ञान को प्रभावित कर सकता है.

संक्षेप में, लोकोक्तियाँ और मुहावरे शोध कार्य की उपयोगिता को समझाने और समझाने में मदद कर सकते हैं।

लोकोक्तियाँ और मुहावरों की उपयोगिताः

भाषा को प्रभावशाली बनाना : मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में एक खास प्रभाव पड़ता है , जिससे सुनने वाला या पाठक अधिक आकर्षित होता है।

संक्षिप्तताः वे जटिल विचारों को संक्षिप्त और स्पष्ट तरीके से व्यक्त करने में मदद करते है।

संस्कृति का संरक्षण : लोकोक्तियाँ और मुहावरे एक संस्कृति के मूल्यों , विश्वासों और अनुभवों का प्रतिनिधित्व करते है।

शिक्षाः वे बच्चों और युवाओं को भाषा सिखाने और संस्कृति से परिचित कराने में मदद करते है।

संचारः वे विभिन्न विषयों पर चर्चा करने और विचारों को साझा करने के लिए एक प्रभावी उपकरण है।

लोकोक्तियाँ और मुहावरों के बीच अंतर : लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य है जो एक व्यापक संदेश या सीख देता है। मुहावरा एक वाक्यांश है जो किसी विशेष अर्थ या भाव को व्यक्त करता है। लोकोक्ति का प्रयोग करते समय इसे ज्यों का त्यों इस्तेमाल किया जाता है, जबकि मुहावरे को वाक्य के अनुसार बदला जा सकता है।

उदाहरणः लोकोक्तिः ″जो कहावतें हैं, वह सत्य होती है।″

मुहावराः ″आँखें खुलना″ (ध्यान देना)

निष्कर्षः लोकोक्तियाँ और मुहावरे भाषा और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, और वे भविष्य में भी अपनी उपयोगिता बनाए रखेंगे . वे भाषा को अधिक प्रभावी, आकर्षक और सार्थक बनाने में मदद करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, वासुदेवशरण) .2007). *कला और संस्कृति*. वाराणसीचौखम्भा प्रकाशन :, पृ .60–95।

2. अग्रवाल, सुनीता) .2013). "बुंदेली साहित्य में मुहावरों का प्रयोग ." *हिंदी लोककथा एवं साहित्य*, 5(1), pp. 33–48।

3. अग्रवाल, सुरेश. (2013). "युवाओं में बुंदेली भाषा जागरूकता के प्रयास". *हिंदी भाषा और संस्कृति*, 9(2), pp. 55–69।

4. अज्ञेय) .2011). *त्रिशंकु*. नई दिल्लीभारतीय ज्ञानपीठ :, पृ .45–80।

5. अवस्थी, ओमप्रकाश) .2018). *हिन्दी मुहावरों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन* . कानपुर : साहित्य निकेतन, पृ .55–89।

6. उपाध्याय, गौरीशंकर. (2005). *बुंदेली शब्दकोष और मुहावरे* . ग्वालियर: बुंदेली वीथिका। pp. 12–45।

7. उपाध्याय, गौरीशंकर) .2010). *बुन्देली लोकोक्ति कोष*. भोपाल मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ : अकादमी, पृ .1–25।

8. उपाध्याय, गौरीशंकर. (2015). *बुंदेली शब्दकोष एवं मुहावरे: एक संग्रह* . सागर: बुंदेली पीठ। pp. 1–78।

9. उपाध्याय, गौरीशंकर. (2016). *बुंदेली वीथिका में पांडुलिपियां और उनका महत्व*. बुंदेलखंड विश्वविद्यालय प्रकाशन। pp. 12–35।

10. गुप्त, नर्मदा प्रसाद) .1978). *बुन्देली भाषा और साहित्य*. सागर बुन्देली पीठ। : pp. 23–56।

11. गुप्त, मैथिलीशरण. (1995). *बुंदेली वीथिका के साहित्यिक दस्तावेज* . सागर: साहित्य संग्रहालय। pp. 10–28।

12. गुप्त, सियारामशरण. (2000). *बुंदेली साहित्य और लोकपरंपरा* . झाँसी: लोकसंस्कृति प्रकाशन। pp. 23–46।

13. गुप्ता, रीता. (2016). "बुंदेली बोली और युवा पीढ़ी". *मध्य प्रदेश भाषा एवं संस्कृति अध्ययन*, 3(2), pp. 41–54।

14. ग्रियर्सन, जॉर्ज ए) .1916). *लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया* (भाग 9). कलकत्ता : गवर्नमेंट प्रेस।pp. 12–45।

15. ग्रियर्सन, जॉर्ज ए) .1967). *लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया* (भाग–9). दिल्ली मोतीलाल : बनारसीदास, पृ .210–235।

16. चाटुर्ज्या, सुनीति कुमार) .1955). *भारत की भाषाएँ* . कलकत्ता कलकत्ता : विश्वविद्यालय।pp. 134–149।

17. चौहान, विनोद. (2011). *हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्यिक अध्ययन* . दिल्ली: राजकमल प्रकाशन। pp. 120–138।

18. जैन, नीरज) .2010). *आधुनिक बुन्देली काव्य.* सागर बुन्देली पीठ। :pp. 22–48।

19. जैनेन्द्र कुमार) .2007). *साहित्य का श्रेय और प्रेय* . नई दिल्ली भारतीय : ज्ञानपीठ, पृ .40–75।

20. जोशी, शरद) .2009). *किसी बहाने.* नई दिल्लीराधाकृष्ण प्रकाशन :, पृ .45–80।

21. झा, प्रमोद. (2008). *लोकभाषा और साहित्यिक संरक्षण: बुंदेली उदाहरण* . पटना: बिहार राज्य साहित्य परिषद। pp. 41–60।

22. तिवारी, उदयनारायण) .1993). *बुन्देली भाषा का अध्ययन* . वाराणसी चौखम्भा : प्रकाशन, पृ .120–148।

23. तिवारी, गोरेलाल) .1985). *बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास* . झाँसी बुन्देली शोध : संस्थान, पृ .10–36।

24. तिवारी, बलभद्र) .2001). *बुन्देली काव्य परम्परा* (भाग–1). सागर बुन्देली पीठ। : pp. 11–39।

25. तिवारी, बलभद्र) .2005). *बुन्देली काव्य परम्परा* (भाग–2). सागर बुन्देली पीठ। : pp. 41–78।

26. तिवारी, भोलानाथ) .1998). *हिन्दी भाषा और उसकी बोलियाँ.* इलाहाबाद लोकभारती : प्रकाशन, पृ .145–170।

27. तिवारी, मुन्ना. (2018). "बुंदेली भाषा और युवाओं का जुड़ाव". *हिंदी विभाग वार्षिक पत्रिका*, 5(2), pp. 45–52।

28. त्रिपाठी, रामनरेश) .1965). *लोकभाषाएँ और हिन्दी*. इलाहाबाद साहित्य भवन। : pp. 54–69।

29. त्रिपाठी, लक्ष्मीनारायण) .2013). *हिन्दी की बोलियाँ और उपबोलियाँ* . दिल्ली प्रभात : प्रकाशन, पृ .160–185।

30. त्रिपाठी, श्याम. (2009). *हिंदी साहित्य का इतिहास और युगधर्म* . लखनऊ: हिंद प्रकाशन। pp. 78–102।

31. द्विवेदी, शांतिप्रिय) .2010). *युग और साहित्य*. नई दिल्ली वाणी प्रकाशन :, पृ . 60–90।

32. द्विवेदी, हजारीप्रसाद) .2006). *हिन्दी साहित्य की भूमिका* . नई दिल्ली राजकमल : प्रकाशन, पृ .85–110।

33. द्विवेदी, हजारीप्रसाद) .2006). *हिन्दी साहित्य की भूमिका* . नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृ .85–110।

34. नगेन्द्र) .2009). *विचार और विश्लेषण*. नई दिल्ली नेशनल पब्लिशिंग हाउस :, पृ . 50–82।

35. परसाई, हरिशंकर) .2010). *पगडण्डियों का ज़माना* . नई दिल्ली राजकमल : प्रकाशन, पृ .40–85।

36. पाण्डेय, रामचन्द्र) .2008). *भारतीय लोकसंस्कृति*. दिल्ली वाणी प्रकाशन :, पृ .55–88।

37. पाण्डेय, श्यामसुन्दर) .2007). *लोकभाषा विज्ञान*. इलाहाबाद साहित्य भवन :, पृ .90–118।

38. पुणतांबेकर, शंकर) .2012). *रेडीमेड कपड़े*. नई दिल्ली वाणी प्रकाशन :, पृ .60–95।

39. बाहरी, हरदेव) .2001). *हिन्दी की उपभाषाएँ* . दिल्ली राजकमल प्रकाशन :, पृ .200–225।

40. भारत सरकार) .1908). *इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया* (खंड 8). लंदन : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।pp. 214–220।

41. भारती, धर्मवीर) .2008). *पश्यन्ती*. नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन :, पृ .55–90।

42. महाजन, डी) .एन .1990). *प्राचीन भारत का इतिहास* . दिल्लीचन्द .एस :, पृ .140–165।

43. माहौर, भगवानदास) .2003). *बुन्देली रासो काव्य परम्परा*. झाँसी लोकसंस्कृति : संस्थान।pp. 64–89।

44. मिश्र, कन्हैयालाल) .2006). *जिन्दगी मुस्करायी*. इलाहाबादलोकभारती प्रकाशन :, पृ .30–65।

45. मिश्र, बलभद्र) .1972). *बुन्देली व्याकरण*. झाँसी लोकभारती प्रकाशन। :pp. 15–37।

46. मिश्र, रामदरश) .2010). *घरपरिवार*-. नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन :, पृ .50–85।

47. मिश्र, विद्यानिवास) .2010). *चित्तवन की छाँह*. नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन :, पृ .45–80।

48. मिश्रा, कमल. (2014). "बुंदेली साहित्य में लोककथाओं और मुहावरों का योगदान". *भारतीय लोकसाहित्य समीक्षा*, 6(3), pp. 88–101।

49. मिश्रा, कमल) .2014). *लोकभाषाओं का सामाजिक सांस्कृतिक-महत्व*. ग्वालियर : साहित्य भारती।pp. 55–72।

50. मिश्रा, कैलाशनाथ) .2009). *मुहावरे और कहावतें*. पटनाभारती भवन :, पृ .15–42।

51. यादव, निर्मल. (2015). *भारतीय लोकभाषाएँ और उनकी संरक्षण नीति* . भोपाल: मध्यप्रदेश लोकसाहित्य परिषद। pp. 66–89।

52. रसेल, आर) .वी .1909). *छिन्दवाड़ा गजेटियर*. इलाहाबाद गवर्नमेंट प्रेस। :pp. 102–118।

53. रसेल, आर) .वी .1911). *सिवनी गजेटियर*. नागपुर गवर्नमेंट प्रेस। :pp. 67–75।

54. राय, कुबेरनाथ) .2012). *कामधेनु*. इलाहाबाद लोकभारती :प्रकाशन, पृ .130–165।

55. राय, विवेकी) .2011). *गँवई गंध गुलाब*. नई दिल्लीलोकभारती प्रकाशन :, पृ .70–110।

56. लो, सी .ई) .1907). *बालाघाट गजेटियर*. नागपुरसेंट्रल : इंडिया प्रेस। pp. 83–91।

57. वर्मा, अरुण. (2012). "बुंदेली साहित्य में पारंपरिक लोकगीत और उनका महत्व". *लोकसाहित्य अनुसंधान पत्रिका*, 4(1), pp. 23–38।

58. वर्मा, कृष्णदेव उपाध्याय) .2003). *लोकसाहित्य की भूमिका*. दिल्लीसाहित्य अकादमी :, पृ .25–60।

59. वर्मा, धीरेन्द्र) .1962). *हिन्दी भाषा का इतिहास* . वाराणसी नागरी प्रचारिणी : सभा।pp. 88–104।

60. वर्मा, धीरेन्द्र. (2005). *लोकभाषाओं का महत्व और संवर्धन* . वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा। pp. 102–118।

61. वर्मा, निर्मल) .2014). *शब्द और स्मृति*. नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन :, पृ .60–95।

62. वर्मा, रामकुमार) .1995). *हिन्दी लोकसाहित्य*. इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन :, पृ . 95–130।

63. वाजपेयी, किशोरीदास) .1975). *हिन्दी शब्दानुशासन*. वाराणसी नागरी प्रचारिणी : सभा, पृ .60–92।

64. वाजपेयी, नन्ददुलारे) .2004). *हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी* .: नई दिल्ली : साहित्य अकादमी, पृ .75–105।

65. शर्मा, रामकुमार) .2011). *लोकसाहित्यस्वरूप और परम्परा* .: जयपुरसाहित्य सदन :, पृ . 40–75।

66. शर्मा, रामविलास) .2001). *संस्कृति और साहित्य*. नई दिल्लीवाणी प्रकाशन :, पृ . 90–125।

67. शर्मा, शिवसहाय) .1984). *बुन्देलखण्ड का लोकसाहित्य* . झाँसी जनभारती : प्रकाशन।pp. 101–125।

68. शर्मा, शिवसहाय. (2012). "बुंदेली बोली की संरक्षण आवश्यकता". *भारतीय भाषाएँ और साहित्य*, 8(1), pp. 77–89।

69. शास्त्री, विष्णुकान्त) .2010). *चिन्तनमुद्रा*-. नई दिल्ली भारतीय ज्ञानपीठ :, पृ . 40–75।

70. शुक्ल, रामचन्द्र. (2002). *हिंदी साहित्य का इतिहास* (संपादित संस्करण). दिल्ली: ओरिएंटल पब्लिकेशन। pp. 150–175।

71. शुक्ल, रामचन्द्र) .2004). *हिन्दी साहित्य का इतिहास* . वाराणसी नागरी प्रचारिणी : सभा, पृ .22–50।

72. शुक्ल, श्रीलाल) .2011). *यहाँ से वहाँ.* नई दिल्लीराजकमल प्रकाशन :, पृ .35–70।

73. श्रीवास्तव, राजेश. (2011). "बुंदेली वीथिका: भाषा संरक्षण का प्रयास". *हिंदी भाषा शोध पत्रिका*, 7(3), pp. 12–29।

74. श्रीवास्तव, सुरेन्द्र) .2015). *बुन्देली भाषा संरचना और प्रयोग .:* सागर बुन्देलखण्ड : विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ .130–158।

75. सरल, डॉ) .2012). *बुन्देली कहावतें और मुहावरे*. सागरलोकभारती प्रकाशन :, पृ .30–58।

76. सिंह, ठाकुरप्रसाद) .2009). *पुराना घर नये लोग.* नई दिल्लीवाणी प्रकाशन :, पृ . 25–55।

77. सिंह, भगवान) .1998). *बुन्देली संस्कृति और परम्परा* . टीकमगढ़ संस्कृति : प्रकाशन।pp. 33–57।

78. सिंह, मनोज) .2017). *युवाओं में स्थानीय भाषाओं का संरक्षण और जागरूकता* . भोपाल मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी। :pp. 21–40।

79. सिंह, राकेश. (2010). *बुंदेली भाषा का इतिहास और विकास* . ग्वालियर: मध्यप्रदेश भाषा संस्थान। pp. 34–57।

80. सिंह, रामधारी) .2008). *हमारी सांस्कृतिक एकता* . नई दिल्ली राजकमल : प्रकाशन, पृ .55–85।

81. सिंह, रामनरेश) .2016). *लोकवार्ता और लोकसाहित्य* . भोपाल मध्यप्रदेश साहित्य : परिषद, पृ .70–102।

82. सिंह, शिवप्रसाद) .2014). *लोकभाषा और लोकजीवन* . लखनऊ हिन्दी संस्थान :, पृ . 101–128।

83. सिंह, शिवप्रसाद) .2015). *शिखरों के सेतु.* वाराणसीहिन्दी साहित्य निकेतन :, पृ . 70–102।